॥श्री हरि गुरु सतचिदानन्दायनम॥

श्री रामप्रकाश वेदान्त दोहावली
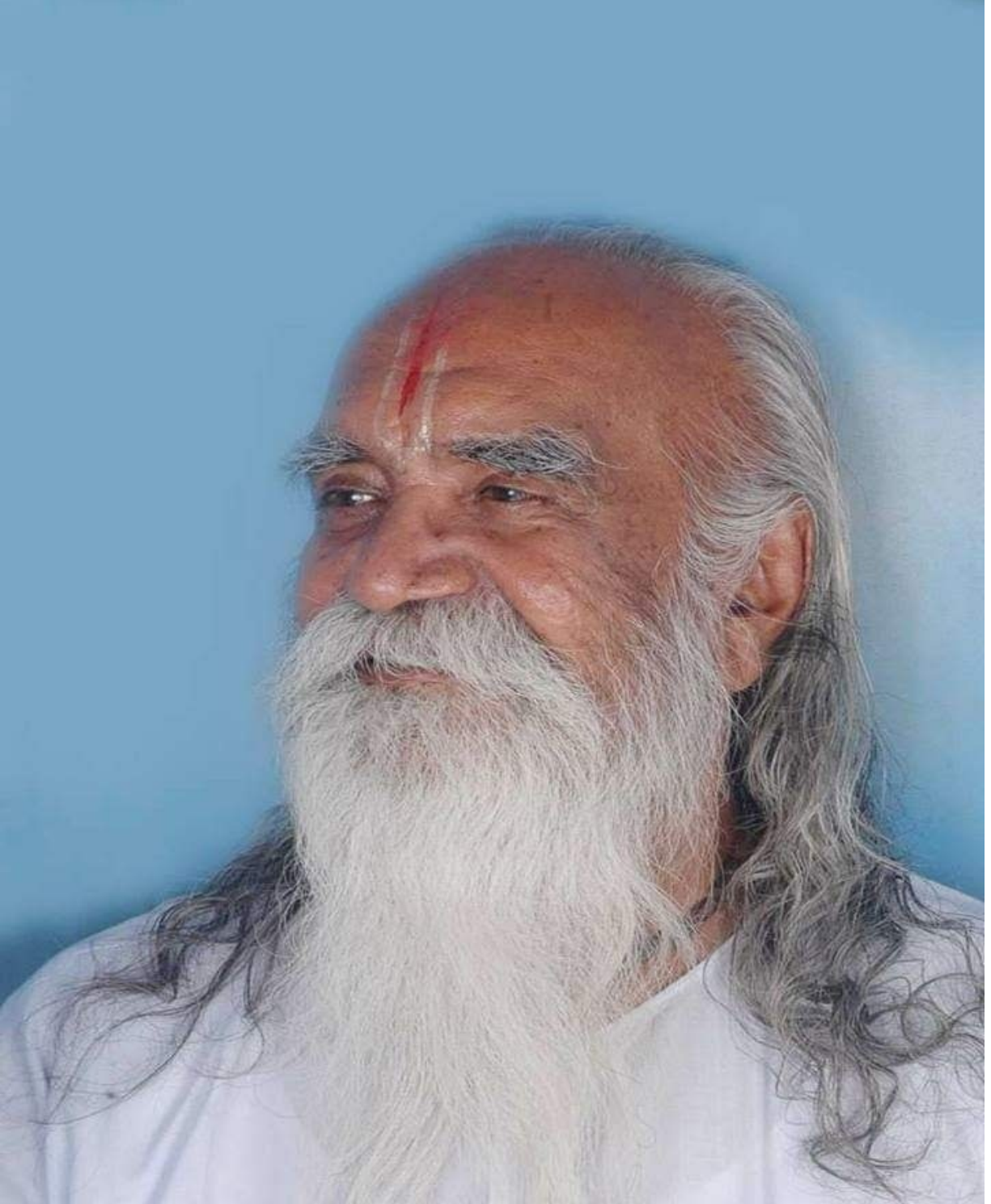
श्री रामप्रकाश वेदान्त दोहावली

लेखक:

श्री वैष्णव विरक्त गूदड़ गद्दी जोधपुर के आद्यपीठाधीश्वर अनन्त श्री स्वामी हरिराम जी वैरागी की शिष्यानुगत परम्परा में वेदान्त विद श्री श्री १०८ श्री स्वामी उतमराम जी महाराज के कृपापात्र शताधिक्य सत्साहित्यक ग्रंथों के रचियता, यशस्वी टीकाकार, एवं सम्पादक

तत्वज्ञ स्वामी श्री रामप्रकाशाचार्य जी महाराज "अच्युत"

श्रीमहन्त - उत्तमआश्रम (आचार्यपीठ) , जोधपुर

संकलनकर्ता - जेठूदास वेदान्ती(ग्रंथ कर्ता के पौत्र शिष्य)

प्रकाशक- उत्तमआश्रम (आचार्यपीठ)

कागातीर्थमार्ग, जोधपुर-३४२००६

Phone: 0291 2547024,

Mob.No.9414418155

Email: uttamashram@gmail.com

प्रथम संस्करण विक्रम सम्वत २०७५

सम्पादक की लेखनी से-

शुद्ध सतचिदानन्द घन परमात्मा की असीम अनुकम्पा से श्री श्री १०८ श्री स्वामी रामप्रकाशाचार्य जी ''अच्युत'' ने सर्व शिरोमणी श्रेष्ठ वेदान्त सिद्धान्त का सरल दोहा छन्द में "श्री रामप्रकाश वेदान्त दोहावली" नामक ग्रंथ की रचना कर आत्म ज्ञान की राह पर चलने वालों के लिए सुगम कर दिया है। इस ग्रंथ में वेदान्त की समस्त स्थुल प्रक्रियाओं को प्रत्येक वल्ली नामक प्रकरण में सुन्दर ढंग से वर्णन किया गया है।प्रकरण का नाम वल्ली इसलिए रखा गया है कि वल्ली का अर्थ लता या बेल होता है, जिस प्रकार बेल के पास जो वृक्ष कंटीले झाड़ नीम, आम, आक जो भी हो उसके साथ लिपट जाती है, वह यह विचार नहीं करती है कि मैं किस प्रकार के वृक्ष के साथ लिपट रही हूँ।

विद्या वनिता बेल नृप, यह न जात गिनन्त ।
जिसके रहते संग में, उनके ही लपटन्त ।।

ठीक उसी प्रकार ''श्री रामप्रकाश वेदान्त दोहावली" में वल्ली नामक प्रकरण का संग करने से अर्थात पठन मनन करने से आत्म सुख की अनुभूति होती है। इसमें संशय नहीं। इस ग्रंथ की विशेषता यह है की इसको आदि से अन्त तक पठन एवं मनन करने से वेदान्त का गूढ रहस्य समझना आसान होगा, परमानन्द का अनुभव व वेदान्त के संस्कृत ग्रंथ भी सरलता से समझ पायेगें। आत्मज्ञान अथवा ब्रह्म की प्राप्ति का मूल स्रोत वेद विज्ञ सतगुरू एवं वेदान्त ग्रंथ है। प्रसिद्ध ग्रंथ गीता में भी ज्ञान के महत्व का वर्णन किया गया है।

न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते ।।गीता ४/ ३८

भावार्थ : इस सांसार में ज्ञान के समान पवित्र करने वाला निःसंदेह कुछ भी नहीं है। तथा वह ज्ञान भी-

श्रद्धावाँल्लभते ज्ञानं तत्परः संयतेन्द्रियः ।।गीता४/३९

भावार्थ : जितेन्द्रिय, साधना परायण और श्रद्धावान मनुष्य ज्ञान को प्राप्त होता है।

तद्विद्धि प्रणिपातेन परिप्रश्नेन सेवया ।
उपदेक्ष्यन्ति ते ज्ञानं ज्ञानिनस्तत्वदर्शिनः ॥गीता४/३४

भावार्थ : उस ज्ञान को तूँ तत्वदर्शी ज्ञानियों के पास जाकर समझ, उनको भली भाँति दण्डवत प्रणाम करने से, उनकी सेवा करने से और कपट छोड़कर सरलता पूर्वक प्रश्न करने से वे परमात्म तत्व को भली भाँति जानने वाले ज्ञानी महात्मा तुझे उस तत्वज्ञान का उपदेश करेंगे।

गुरूवर स्वामी श्री रामप्रकाशाचार्य जी महाराज ने भी आत्म ब्रह्मज्ञान की महिमा का विशद अनुभव वर्णन किया है -

।।सवैयाछन्द।।

ब्रह्म ज्ञान समान न आन किहीं, जप योग न यज्ञ आचारा।
साधन सतगुरू सहित पढे धर, श्रद्धा पावन होय व्यवहारा ।।
जीवन हो धन्यवाद सदा वह, पावत ज्ञान पदार्थ चारा।
रामप्रकाश धन धन्य हो जीवन, प्राप्त पाँच प्रयोजन प्यारा ।।१।।

||दोहाछन्द||

ब्रह्म ज्ञानामृत के समा, नही यज्ञ तप दान ।
ब्रह्मज्ञानी के दर्शन हित, स्वर्गाधिपति होय मलान ||२||
तीर्थ वास हजार कर, कोटिक जप तप दान ।
नाना उपासन देवकी, सो सब क्षणिक समान ||३||
स्वर्ग मे तरसे देवता, वैकुण्ठ धाम हरि आप ।
ब्रह्मज्ञानी का दर्शन हो, नाशे त्रिगुण ताप ||४||
ब्रह्मज्ञानी पद तीर्थ है, दर्शन ते अघ नाश ।
वाणी में मुक्ति बसे, पर से पावन पास ||५||
ब्रह्मज्ञान पावन अति, हरे असत अज्ञान ।
अध्ययन साधन मुक्तिप्रद , रामप्रकाश कल्यान ||६||
ब्रह्मवेता ब्रह्मवत सदा, ब्रह्म विद्या मस्तान ।
पढे सुने गुण गण गुने, पावे मुक्ति मान ||७||

श्लोक-

सत्य माता पिता ज्ञानं धर्मो भ्राता दया सखा।
शान्तिः पत्नी क्षमा पुत्रः षडेते मम बान्धवाः ||

अर्थात-सत्य मेरी माता, ज्ञान मेरे पिता, धर्म मेरा बन्धु, दया मेरा सखा, शान्ति मेरी पत्नी तथा क्षमा मेरा पुत्र है। यह ज्ञानी के परिवार के छह सदस्य हैं।

माता च कमला देवी पिता देवो जनार्दनः ।
बान्धवा विष्णुभक्ताश्च स्वदेशो भुवनत्रयम् ॥

भावार्थ : जिस मनुष्य की माँ लक्ष्मी के समान है, पिता विष्णु के समान है और भाइ - बन्धु विष्णु के भक्त है, उसके लिए अपना घर ही तीनों लोकों के समान है।

वेदज्ञ वेदान्त वर, सतगुरू रामप्रकाश ।
मम कहने जग हित रची, वेदान्त दोहावली खास ||

आखिर में मैं गुरूवर स्वामी श्री रामप्रकाशाचार्य जी महाराज का कोटि कोटि आभार प्रकट करता हूँ जिन्होंने हमारी जिज्ञासा से प्रस्तुत "श्री रामप्रकाश वेदान्त दोहावली" व पंडित वर्य पिताम्बर पुरुषोत्तम जी कृत तीन भजनों की टीका करी, जो आत्मज्ञान के जिज्ञासु जनों को बहुत लाभकारी सिद्ध होगी।

मेरा सौभाग्य है की मैं उनकी रचनाओ का संकलन, सम्पादन कर पुस्तक को रूप दे रहा हूँ। आशा है आत्म कल्लयाण के रास्ते पर चलने वाले ज्ञानी जन इस ग्रंथ को पढकर अवश्य लाभ उठायेंगे।

संकलन, सम्पादन, संशोधन कार्य में दृष्टिदोष वश जहां कहीं भी त्रुटि मिले तो पाठक वृन्द सुचना देकर अनुगृहीत करें ताकि अगले संस्करण में उसको सुधार दिया जायेगा।

गुरू आज्ञा संकलन करी, वेदान्त दोहावली ग्रंथ ।
पाठक वृन्द पढकर सदा, पावे मोक्ष को पंथ ||

दासानुदास
जेठूदास वेदान्ती
Mob. No. - ८८८२४१२५४४

श्री रामप्रकाश वेदान्त दोहावली

विषयानुक्रमणिका

श्री रामप्रकाश वेदान्त दोहावली ग्रंथ

वेदान्त कि महिमा

तावद्गर्जंति शास्त्राणि जंबुका विपिने यथा।
न गर्जति महाशक्तिर्यावद्वेदांतकेसरी ।।

तावत गर्जत शास्त्र सब, जम्बुक इव वन माहिं ।
महा शक्ति वेदान्त हरि, यावत नादत नाहिं ।।

(श्री वृतिप्रभाकर)

अर्थ:- जैसे वन विषै श्याल नामक पशुविशेष तहांलगि गर्जते हैं। जहां लगि सिंह नहीं गर्जता है ।। तैसे अन्य सांख्यन्यायादिक-शास्त्र तहांलगि गर्जते हैं। जहांलगि.महाशक्तिमान् वेदान्तशास्त्ररूप सिंह नहीं गर्जता है।।

-सवैया-

मत मतान्तर ग्रन्थ रु पन्थ सो, वन के जीव सियारादि गुँजावे ।
नाना भान्ति सिद्धान्त विविध सो, नाद अनेक वाणी बरलावे ।।
सिँह वेदान्त की गर्जन निर्भय, सुनत सिद्धान्त सभी भग जावे ।
रामप्रकाश हो ब्रह्मज्ञानी रव, नाना मत के बोध विलावे ।।
दश गर्दभ रु और अनेक पशु वृन्द, जँगल में नही राज जमावे ।
एक ही केशरी सिंह गर्जन से, जँगल में सही राज करावे ।।
समर्थवान रु वेदान्त गर्जन में, अन्य मत मतान्तर ध्वज उडावे ।
ऐसे शास्त्र सिद्धान्त अनेक की, रामप्रकाश सब पोल उडावे ।।

-दोहा-

शास्त्र मत सब जीव सम, सिंह अद्वय सिद्धांत ।
रामप्रकाश सुन गर्जना, भागत जन्तु दृष्टान्त ।।
ब्रह्मज्ञान हे अटपटा, झटपट लखिया न जाय ।
जो झटपट लख लेय तो, खटपट सब मिट जाय ।।

यथा अद्वैतसिध्दान्तविषये उक्तम्-

श्लोकार्धेन प्रवक्ष्यामि यदुक्तं ग्रन्थकोटिभिः ।
ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या जीवो ब्रह्मैव नापरः ॥

ब्रह्म ही सत्य है । अर्थात जो अनेक ग्रंथों में लिखा है । उसे मैं आधे श्लोक में यहां कह रहा हूं - ब्रह्म सत्य है । जगत मिथ्या है । तथा जीव ब्रह्म ही है । कोई अन्य नहीं ।

अर्द्ध श्लोक करि कहत हूँ, कोटि ग्रंथ को सार ।
ब्रह्म सत्य जगत मिथ्या है, जीव ब्रह्म निरधार ।।
तन में व्यापक जीव ज्यों, जीव में समाया ईश ।
ईश माहि ब्रह्म बिन्दु सम, व्यापक एक महीश ।।
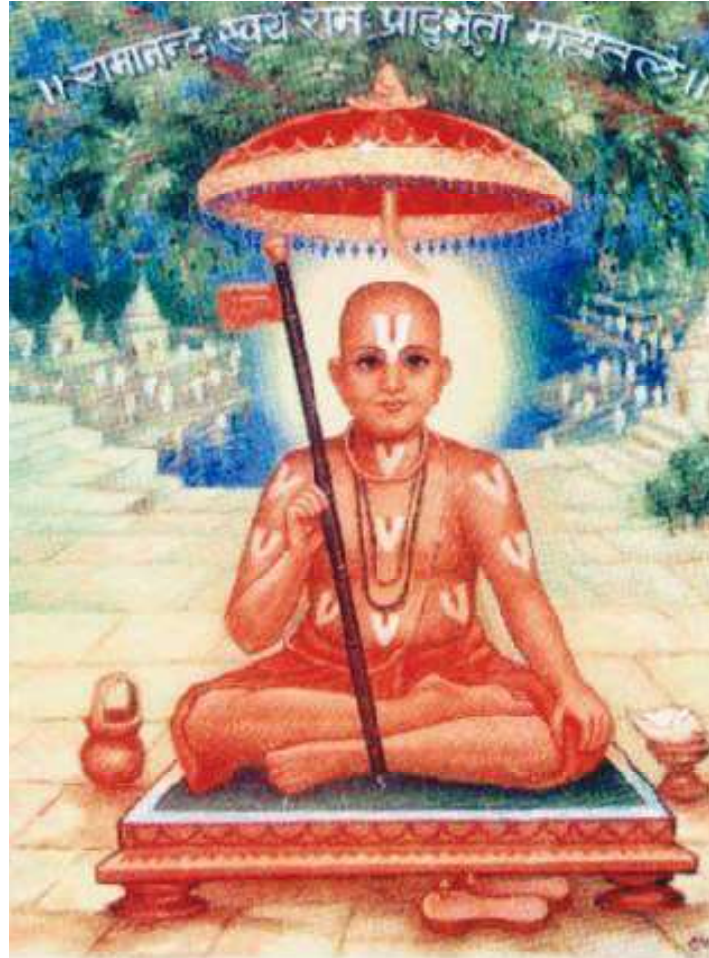
अनन्त श्री विभुषित जगदगुरू स्वामी श्री रामानन्दाचार्य जी महाराज

लिव लागी पर ब्रह्म से, रती न खण्डे तार ।
रामानन्द आनन्द में, गुरू गोविन्द आधार ।।

“श्री रामप्रकाश वेदान्त दोहावली“ के रचियता
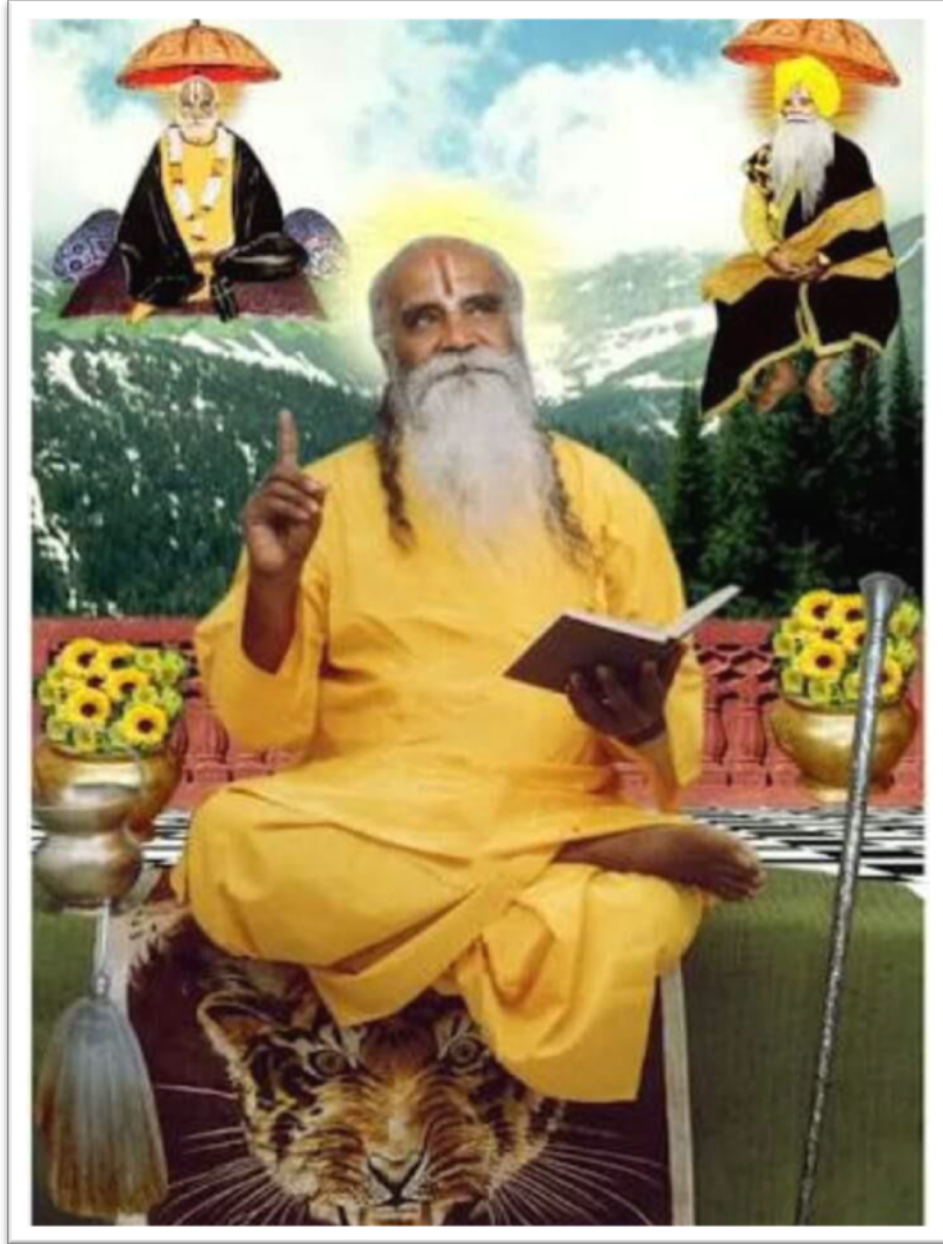
श्री वैष्णव विरक्त गूदड़ गद्दी जोधपुर के आद्यपीठाधीश्वर अनन्त श्री स्वामी हरिराम जी वैरागी की शिष्यानुगत परम्परा में वेदान्त विद श्री श्री १०८ श्री स्वामी उतमराम जी महाराज के कृपापात्र शताधिक्य सत्साहित्यक ग्रंथों के रचियता, यशस्वी टीकाकार, सम्पादक एवं लेखक

श्री श्री १०८ श्री स्वामी श्री रामप्रकाशाचायय जी महाराज “अच्युत”

॥श्री हरि गुरु सतचिदानन्दायनम॥

।। श्री वैष्णव गुरु सम्प्रदाय परम्परा दर्शन।।

ॐ श्री सीताकान्त समारम्भाः रामान्दाचार्य मध्यमाम् ।
अस्मदाचार्य (उतमरामाचार्य) पर्यान्ताम् वन्देहँ गुरू परम्पराम् ।।१।।
"वांछा-कल्पतरभ्यश्च, कृपा-सिन्धुभ्य एव च पतितानां पावनेभ्यो, वैष्णवेभ्यो नमो नमः।।"

।।सवैयाछन्द।।

विशिष्ठाअद्वैत गुरू परम्परा, आद्याचार्य सतगुरू मनाऊँ।
परमाचार्य श्री रामचन्द्र वर, रामानन्दाचार्य ज्ञान सजाऊँ।।
सम्प्रदायाचार्य परिवाराचार्य, हरिराम वैरागी ध्याऊँ।
रामप्रकाश परम गुरू सतगुरू,अचलोत्तमराम को शीश नमाऊँ।।१।।
परिवाराचार्य वैष्णव हरिराम जी, परमगुरू सुखराम मनाऊँ।
परम गुरू अचलराम ब्रह्मविद्वर, सतगुरू उतमराम को ध्याऊँ।।
उतम आश्रम आचार्य पीठ वर, कागा पथ जोधपुर रहाऊँ।
रामप्रकाश निज नाम परिचय, राघवप्रसाद उप नाम कहाऊँ।।२।।
परम गुरू अचलराम ब्रह्मवेत्ता वर,वरिष्ठ श्री फूलराम जी ध्याऊँ।
सतगुरू उतमराम वरियान सु, अचलनारायण पर गुरू सराऊँ।।
दयाराम जी पर गुरू मानत, सब हीं को धर शीश नमाऊँ।
रामप्रकाश नमो पद वन्दन, श्री वैष्णव के सदा गुण गाऊँ।।३।।
परम गुरू श्री अचलराम जी, चार शिष्य तिनके वर ज्ञानी।
ज्येष्ठ है श्री फूलराम जी, सतगुरू उतमराम सुजानी।।
पर गुरु अचलनारायण, दयाराम सुख आनन्द खानी।
रामप्रकाश ताहि पद वन्दन,आशीर्वाद शिष्य पर आनी।।४।।

बीच विराजमान श्री श्री १०८ श्री स्वामी उतमराम जी महाराज

बांये से संत श्री सीताराम जी महाराज एवं उनके बगल में श्री स्वामी रणछाराम जी महाराज एवं बीच विराजमान श्री श्री १०८ श्री स्वामी उतमरामजी महाराज
और उनके बगल में श्री स्वामी रामप्रकाशाचार्य जी महाराज और उनके पास संत श्री परमानन्द जी महाराज बैठे हैं।

अमृत कण

यादृशैः सन्निविशते यादृशांश्चोपसेवते ।
यादृगिच्छेच्च भवितुं तादृग्भवति पूरूषः ॥

मनुष्य, जिस प्रकारके लोगोंके साथ रहता है, जिस प्रकार के लोगोंकी सेवा करता है, जिनके जैसा बनने की इच्छा करता है, वैसा वह होता है ।

आयुषः क्षण एकोपि सर्वरत्नैर्न लभ्यते ।
नीयते तद् वृथा येन प्रामादः सुमहानहो ॥

सब रत्न देने पर भी जीवन का एक क्षण भी वापिस नही मिलता। ऐसे जीवन के क्षण जो निरर्थक ही खर्च कर रहे है, वे कितनी बडी गलती कर रहे है।

आरोग्यं विद्वत्ता सज्जनमैत्री महाकुले जन्म ।
स्वाधीनता च पुंसां महदैश्वर्यं विनाप्यर्थेः ॥

आरोग्य, विद्वत्ता, सज्जनों से मैत्री, श्रेष्ठ कुल में जन्म, दुसरों के ऊपर निर्भर न होना, यह सब धनी नही होते हुए भी पुरूषों का ऐश्वर्य है ।
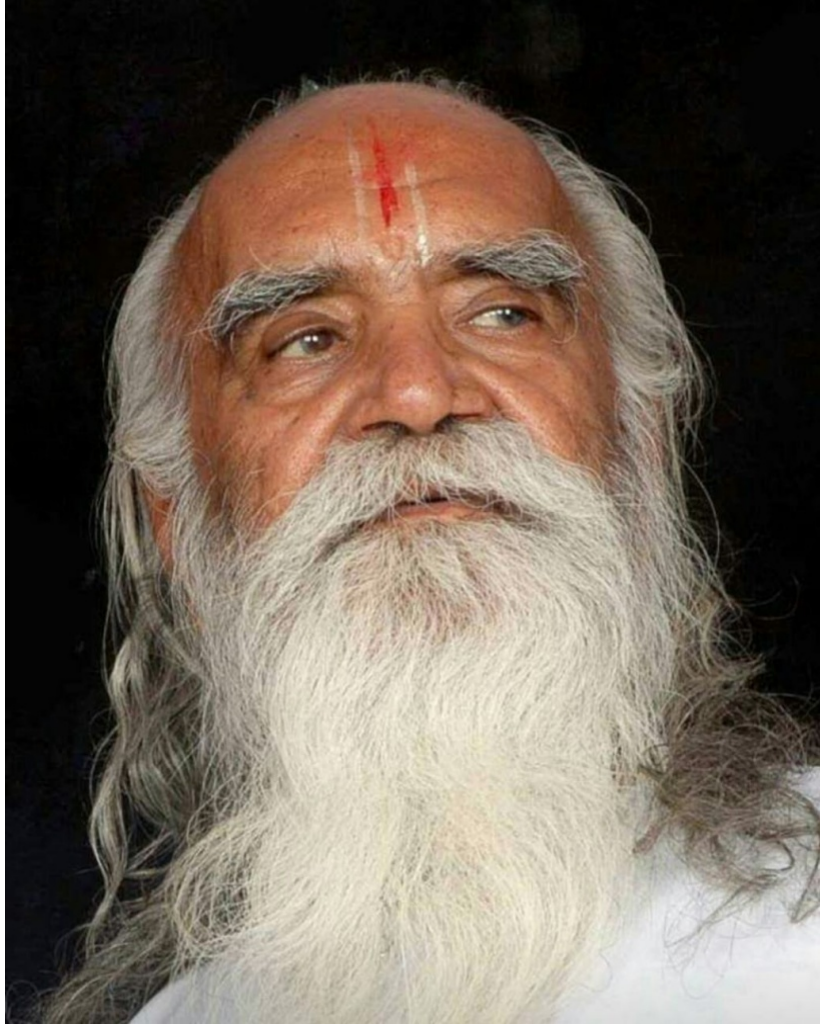
स्वामी रामप्रकाशम्, सन्त सम्राटम्,पारँगन्तम् वेदान्त विषे।
आचार्य अनूपम्, जीमि जगदीशम्, क्रोध ते दूरम् कोश उनीसे ।।
ज्ञान गुणाकर, सद् बुद्धि आगर, शील के सागर विश्वा बिसे।
भक्तों के भायक,शिष्य सुख दायक,ब्रह्माण्डे नायक, हृदय बिसे ।।

// कुण्डलिया //

ब्रह्मविद उतम राम जी, ता शिष्य रामप्रकाश।
वचन जाही कावेद सम, करत सकल तम ।।
करत सकल तम, ज्ञान घन नित हि बरसे।
कथे वेदान्त का ज्ञान, शिष्यको करत निरसंशे ।।
अहंब्रह्म लखाय के, सब में सता दिखाय।
रामप्रकाश गुरू शरण में, जेठूदास दुःख जाय ।।१।।

श्री गुरुवर के चरणाम्बुज में सादर समर्पित

॥ दोहा छन्द॥

हरिराम वन्दन कंरू, जीयाराम प्रणाम ।
सुखराम रु अचलराम, वन्दन उतमराम ॥१॥
उतम गुरू से विनती, करहु कृपा मम और ।
जग जले तिहू ताप से, कहां जाऊ कित ठौर ॥२॥
उत्तम कृपा ईश की, उत्तम गुरू वर होय ।
अन्तःकरण उत्तम बने, आत्म दर्शे तोय ॥३॥
रणजीत रामप्रकाश वर, वेद विज्ञ भगवन्त ।
सीताराम स्वयं राम है, विषय विकार हरन्त ॥४॥
पुज्यपाद अनन्त श्री, गुरू वर रामप्रकाश ।
अनन्त वार कँरू वन्दना, मम हृदय कर वास ॥५॥
ब्रह्म रूप व्यापक सकल, सतगुरू रामप्रकाश ।
वन्दन तीनहूँ काल में, करता जेठूदास ॥६॥
स्वामी रामप्रकाश वर, तो तक मम है आस ।
जिम वायस जलधि विषे, तो बिन और न खास ॥७॥
आप समान न और है, गुरु वर रामप्रकाश ।
ब्रह्म रूप ब्रह्मवित वर, सत चित स्वयं प्रकाश ॥८॥
रामप्रकाश रमता सकल, चर अचर के मांहि ।
जेठूदास जिहिं समझ के, मौन रहा मन मांहि ॥९॥
ब्रह्मवाणी गुरू वाक्य है, सतगुरू स्वयं ब्रह्म रूप ।
वचन सुनत संशय हरत, करत ब्रह्म अनुरूप ॥१०॥
गुरु दरियाव ग्रंथ जल, मोती आत्म ज्ञान ।
याते गुरू अरू ग्रंथ का, सदा करे सनमान ॥११॥
जेठूदास जाण्यों नहीं, जब तक आत्म ज्ञान ।
जग जलधि के चक्र से, मिटे न आना जान ॥१२॥
ज्ञान रत्न अति अमुल्य धन, संग्रह करहि सुजान ।
जीवन धन आत्म वित, सर्व सुखों की खान ॥१३॥
मोह माया के काम में, लगे जगत के लोग ।
स्वाध्याय सतसंग चिंतन, ब्रह्मानन्द का भोग ॥१४॥
अपने गुण देखें नहीं, औरों के गुण जोय ।
जेठू दास उण जीव की, अन्त दुर्गत्ति होय ॥१५॥

जेठूदास वेदान्ती कृत
बारनी खुर्द, तह-भोपालगढ़
जोधपुर (राजस्थान) ३४२९०१
Mob.No. ८८८२४१२५४४

भारत देश एवं भारतीय वसुन्धरा को शत शत नमन

हिमालयं समारभ्य यावत् इंदु सरोवरम् ।
तं देवनिर्मितं देशं आर्यावर्त्त प्रचक्षते ॥

हिमालय पर्वत से शुरू होकर भारतीय महासागर तक फैला हुआ ईश्वर निर्मित देश है "भारत", यही वह देश है जहाँ ईश्वर समय - समय पर जन्म लेते हैं और सामाजिक सभ्यता की स्थापना करते हैं । दुर्लभं भारते जन्म मानुष्यं तत्र दुर्लभम्।। अर्थात मनुष्यों के लिए भारत में जन्म लेना सबसे दुर्लभ है। भाग्यशाली है- जिन्होंने भारत में जन्म लिया।
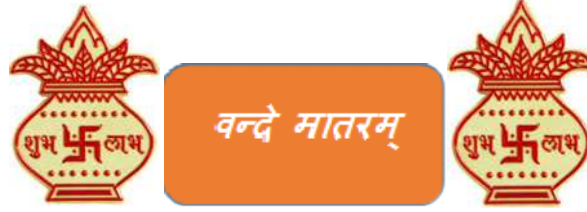
।। सवैया छन्द ।।

आर्यावर्त्त भारत भूमि शुभ, ऋषि मुनि अवतार ही ध्यावे ।
वेद मन्त्र सँस्कार साधना, आध्यात्मिक गुण ज्ञान बतावे ।।
ईश्वर अराधन वीर्य रक्षण, वेदाध्ययन ब्रह्मचर्य सधावे ।
रामप्रकाश मातृ भूमि धन्य है, महापुरुष चलि यहाँ पर आवे ।।१।।
राम कृष्ण महापुरुष लोमस से, हरिश्चन्द्र शूरवीर ही पावे ।
कर्मवीर रु धर्मवीर बहु, दानवीर शिबी धरा सुहावे ।।
धर्म रक्षक रामानन्द शँकर, दयानन्द विवेक ही आवे ।
रामप्रकाश धन भारत भूमि वर, नमन करे वर शीश नमावे ।।२।।
दुष्ट निकन्दन भव भय भँजन, ज्ञान ध्यान के रक्षक आये ।
वीर धीर गुण सती साधना, यति सन्त विद्वान सुहाये ।।
आर्यावर्त सनातन भूमि, वैदिक धर्म अध्यात्म पाये ।
रामप्रकाश धरा धन राष्ट्र, अखण्ड भारत गुण सिन्धु समाये ।।३।।
सप्त सिन्धु मेखला बिच मे, मेरु हिमालय कैलाश सुहावे ।
कन्या कुमारी कश्मीर बीच मे, आर्यवृत का राष्ट्र कहावे ।।
धन धान्य की शस्याश्यामला, महिमन्न स्तोत्र गान सुनावे ।
रामप्रकाश वन्दे भू मातृत्व, साधु सति जहाँ शूर ही आवे ।।४।।

अक्षरार्थ (शैक्षणिक मंगल) कुण्डलिया

हरदम हरि से हेत कर, जीवन की गति जान।
रिश्वत चोर्यादि दोष तज, याविधि जपले ज्ञान।।
रा विधि जपले ज्ञान, राम में प्रणब धुनि लावे।
महरम जाने गुरू कृपा, मरजीवा मुक्ति समावे।।
"हरिराम" "जीयाराम जी", महाराज प्रसाद कर।
सतगुरु कृपा केवली, "रामप्रकाश" नवाज हर।।१।।

सुख केवल निज ज्ञान में, अदभुत लखे अवधूत।
खटपट प्रपंच खोय कर, चले चतुर पथ सूत।।
-चले चतुर पथ सूत, लक्ष्मण रेखा धारे।
राज योग लय चिंतन कर, राम में रमत विचारे।।
महरम करे "सुखराम" जी, मतिधर अचलराम।
सौम्यमूर्ति गुरूदेव की "रामप्रकाश" सुखधाम।।२।।

उतम भाग्य मानव भयो, राम भये कृपाल।
तन मन उज्जवल भाव कर, मद विद्या धन टाल।।
मद विद्या धन टाल, प्रवृत्ति सकल निवारो।
राम हृदय हरदम जपो, काम शुभ सतसंग सारो।।
महर होय गुरू उतम की, शमन होय भव गम।
"उतम रामप्रकाश" की, लखो रमझ उतम।।३।।

श्री वैष्णव रामानन्दी, अग्रद्वारा सो जान।
सन्तदास गुरू पीढी ते, शाखा परम्परा ज्ञान।।
शाखा परम्परा ज्ञान, अग्रावत रसिक पहिचानों।
आचार्य पीठ सो जोधपुर, वैरागी मत को जानो।।
आद्य गुरू हरिराम जी, श्री सम्प्रदाय संतवृन्द।
रामप्रकाश वन्दन करे, श्री वैष्णव रामानन्द।।४।।

दोहा छन्द-

उत्तम गुरू हरि सतगुरु, हरि हर संत कृपाल।
"रामप्रकाश" वन्दन करे, द्रवहुं परम दयाल।।५।।

आरती (सवैया छन्द)

आरती आर्तभाव से होवत, थाल में पुष्प रु कुँकुम राजे।
जल कलश रु अक्षत धूप सु, श्रद्धा विश्वास भक्ति मन साजे।।
हरि नाम सुमिरण स्वर पूरण, इष्ट सतगुरू मन्त्र शुद्धि काजे।
रामप्रकाश आरती मन भावन, ईश्वर प्रसन्नता पावत गाजे।।१।।
आरती आरत भाव मन से अर्चन, नित्य कर्म स्वभाव से कीजे।
ब्रह्म रु सन्त ज्ञानी सतगुरु वर, सर्वस्व समर्पण नित ही दीजे।।
कायक वाचक मानसिकता पूरक, श्रद्धा विश्वास भाव पद बीजे।
रामप्रकाश नमो पद वन्दन, वारम्वार सतदेव पतीजे।।२।।

।। श्री सतगुरु परम्परा उत्तम आरती।।

।। सम्प्रदाय परिचयात्मक श्री आरती।।

ओम् जय गुरुदेव हरे, स्वामी जय गुरूदेव हरे।
आर्त जिज्ञासु ध्यावे (हित से), संकट दूर करे ।।टेर।।
"संतदास" संशय को काटे, समता रूप धरे।
"कृपा राम" कृपा के सागर, प्याला ज्ञान भरे ।।१।।
"केवलराम" केवल मत पुर्ण, भ्रांति भ्रम हरे।
"चतुरराम" चतुर मति शोधन, निर्मल बोध झरे ।।२।।
"दौलतराम" विश्व की दौलत, अखण्ड भण्डार सरे ।
"गंगाराम" गंगवत निर्मल, पाप रू ताप चरे ।।३।।
"हरिराम" हरे अघसारा, शिव के रूप खरे।
"जीयाराम" जीवन गति मुक्ति, सांख्य वेदान्त गरे ।।४।।
सो "सुखराम" सर्व सुख सागर, सत चित आनन्द अरे।
"अचलराम" अचल अज आत्म, अनन्त अखण्ड छरे ।।५।।
"उत्तमराम" उतम सत केवल, अपना आप परे।
गुदड़ ज्ञान वैराग्य साधना, भूमि अवतरे ।।६।।
रामानन्द स्वामी की गद्दी, सत अवधूत जरे।
धीरज धारणा राघव प्रेम को, विशिष्ठाद्वैत करे ।।७।।
गुरू प्रणाली योग अनादि, जानत मुक्ति तरे।
"रामप्रकाश" प्रणाम प्रेम से, हरदम ध्यान वरे ।।८।।

।। दोहा छन्द ।।
उत्तम हरि गुरू सतगुरु, नमो त्रिकाल सुजान।
"रामप्रकाश" प्रणाम सो, निर्गुण सर्गुण प्रमान।।

श्री रामप्रकाश वेदान्त दोहावली

प्रथम वल्ली प्रारम्भ

~ मंगलाचरण ~

।।दोहाछन्द।।

मँगल सतगुरू देव है, मँगल सत चित आप ।
जँगल में मँगल करे, हरे सकल सँताप ।।१।।
उतम मँगल मय वरण दो, उतमराम गुरू ज्ञान ।
रामप्रकाश वन्दन करे, वाणी विमल वरदान ।।२।।
उतम उतमराम जी, उतम मँगल आप ।
उतम सतसँग उतम दो, ज्ञान ध्यान गुण छाप ।।३।।
मँगल मय उतम सदा, मँगल उतमराम।
मँगल दँगल पर हरो, हरि मँगल के धाम ।।४।।
उमापति सीतापति, लक्ष्मी पति गुरू श्याम।
धनपति गुण गणपति, रामप्रकाश प्रणाम ।।५।।
श्री पति शिष्य पति गौरिपति, ऋद्धि सिद्धी पति ध्याय।
रामप्रकाश वन्दन करे, एक स्वरूप मनाय ।।६।।
त्रिकाल त्रिलोक के सन्त सब, भक्ति भक्त हरि ध्याय।
रामप्रकाश वन्दन करे, सतगूरू चरण मनाय ।।७।।
श्री पति मति पति गिरा पति, हरि हर सतगुरू ध्याय।
रामप्रकाश दोहावली, सरस कृति करो आय ।।८।।
सतगुरू सन्तन की दया, श्रवण द्वारते आय।
रामप्रकाश हृदय जरी, दीये दोष जराय ।।९।।
शास्त्र सार सतगूरू गति, नीति भक्ति रस ज्ञान।
रामप्रकाश अनुभव रचे, जचे पचे सुख खान ।।१०।।
सतगुरू सत चित आप है, आनन्दकारी स्वरूप।
उतम रामप्रकाश सो, सब घट व्यापक भूप ।।११।।
रसना में रस ना अहे, रस पति रस दे घोल।
हरि रस में भर प्रेम रस, रामप्रकाश में बोल ।।१२।।
रामप्रकाश कृति रचे, स्वान्त सुख जन हेतु।
पढत गुणत चित में धरत, पाप ताप हर लेतु ।।१३।।
उतम गुरू दो उतम मति, हरि भक्ति ब्रह्म ज्ञान।
रामप्रकाश है शरण में, हरो सकल अज्ञान ।।१४।।
अभिन्न निमितोपादान से, ईश्वर माया खास।
सृष्टि नाना भान्ति की, वन्दन रामप्रकाश ।।१५।।
राम[१] रमा[२] सब घट समा, सृष्टि प्रपँच मार[३] ।
ता बिन रचना ना रहे, रामप्रकाश विचार ।।१६।।

१ राम =रमता पुरुषोत्तम । २ रमा= लक्ष्मी , पृकृति । ३ मार= कामदेव ,
इन तीनो के बिना रचना = सँसार नही रह सकता है ।

परब्रह्म सत चित एक है, अन्वय आनन्द रूप ।
अक्रिय अभेद अद्वितीय सो, रामप्रकाश अनूप ।।१७।।
अपरब्रह्म पृकृति करे, प्रपँच मय विस्तार ।
रामप्रकाश मय रमण कर, अधिष्ठान आधार ।।१८।।
अपरब्रह्म का मूल है, शब्दब्रह्म दे भेद ।
उत्पति स्थिति प्रलय पर, रामप्रकाश अभेद ।।१९।।
अपरब्रह्म परब्रह्म का, शब्दब्रह्म से ज्ञान ।
रामप्रकाश गुरू गीत में, नित्य रहत अधिष्ठान ।।२०।।
वेद शास्त्र गुरू ज्ञान में, शब्दब्रह्म प्रवीन ।
रामप्रकाश याके बिना, वाणी पाँच ही क्षीन ।।२१।।
परब्रह्म रु अपरब्रह्म, शब्दब्रह्म यह तीन ।
सतगुरू ज्ञानी देत गम, युक्ति सतसँग चीन ।।२२।।
कारण कार्य रहित है, परब्रह्म सच्चिदानन्द ।
व्यापक अक्रिय आप ही, रामप्रकाश निष्फन्द ।।२३।।
कार्य कारण सहित है, अपरब्रह्म चिदभास ।
कुटस्थ पृकृति कार्य है, कारण रामप्रकाश ।।२४।।
केवल कारण त्रिगुण है, माया अविद्यामय सोय ।
विधिवत प्रपँच को रचे, रामप्रकाश सो होय ।।२५।।
कार्य केवल प्रपँच मय, त्रिकाल त्रिपूटी सोय ।
त्रिगुण रचना अजब है, रामप्रकाश वत होय ।।२६।।
गुरू ज्ञान बिन भेद के, शास्त्र लखे नही कोय ।
पढे सुने साधन बिना, रामप्रकाश मुढ होय ।।२७।।
शास्त्र सतगुरू साधना, श्रद्धा सुमति सतसँग ।
सन्त सानिध्य वास से, रामप्रकाश निःसँग ।।२८।।
मानव तन दुर्लभ अति, सतसँग दुर्लभ जान ।
रामप्रकाश गुरू शरण में, अतिशय दुर्लभ ज्ञान ।।२९।।
मिश्रित मिश्रण के बिना, बने नही पकवान ।
मिश्रित विषय के अँग में, रामप्रकाश को ज्ञान ।।३०।।
भ्यानक रोचक यथार्थी, नीति लोक मति वेद ।
रामप्रकाश दोहे कहै, जामे दो है भेद ।।३१।।
लौकिक पारलौकिक कहै, सब कवि सुज्ञान ।
अलौकिक सतगुरू कहै, रामप्रकाश लो जान ।।३२।।
हद की बात सब कवि कहै, बेहद कहते सन्त ।
अनहद की सतगुरू कहै, रामप्रकाश लखन्त ।।३३।।
हद में सुधरे मानवी, बेहद विरले सन्त ।
रामप्रकाश अनहद लखे, पावे परम अनन्त ।।३४।।

क्षर में जग प्रपँच है, अक्षर पृकृति विज्ञान ।
निरक्षर निज ब्रह्म है, रामप्रकाश ब्रह्मज्ञान ।।३५।।
क्षर अक्षर दोनों चले, मिथ्या प्रपँच झेल ।
निरक्षर रामप्रकाश है, अनअक्षर को खेल ।।३६।।
क्षर अक्षर दोनो लखे, सोई पूरा सन्त ।
निरक्षर रामप्रकाश को, लखता मति अनन्त ।।३७।।
एक कहूँ तो है नही, दोय कहूँ सो नाहि ।
रहित अपेक्षा के सदा, रामप्रकाश रहवाहि ।।३८।।
है कहत सो है नही, नहि कहै सो नाहि ।
है नही के आन्तरे, रामप्रकाश है शाहि ।।३९।।
ब्रह्माश्रित माया सत में, जीवही सत चित जान ।
ब्रह्म सचिदानन्द है, रामप्रकाश लख मान ।।४०।।
ब्रह्म अभिन्न माया अहै, सत विशेषण होय ।
सत चित विशेषण जीव के, रामप्रकाश को जोय ।।४१।।
परिवर्तन माया सदा, याते मिथ्या मान ।
ब्रह्माश्रित सत यों कहै, रामप्रकाश परमान ।।४२।।
सत चित विशेषण जीव के, चित में भरा अज्ञान ।
रामप्रकाश भटकत रहे, आनन्द हित सुज्ञान ।।४३।।
ब्रह्म है सत चित एक ही, आनन्द खान निधान ।
रामप्रकाश अद्वितीय सो, पूरण आप अधिष्ठान ।।४४।।
इन्द्रिय भोग में रत रहे, परागात्मा जीव कहलाय ।
निराशक्त रामप्रकाश जो, प्रत्यगात्मा हरि ध्याय ।।४५।।
सुन्दर देह भण्डार धन, मनमोहक घर नार ।
रामप्रकाश हरि भजन बिन, व्यर्थ जीवन सँसार ।।४६।।
सजन मीत विद्वान सँग, पलटे स्वभाव सुधार ।
पाप ताप सब पर हरे, सतसँग जीवन आधार ।।४७।।
शुभ के सँग कीर्ति बढे, स्वर्ण सौ टूक जो होय ।
रामप्रकाश मूल्यवान हो, कभी न कमती होय ।।४८।।
कीर्तिमान धनी देख कर, मन उदास ना जोय ।
रामप्रकाश शुभ सफलता, समय पुरुषार्थ होय ।।४९।।
देह शैल सतगुरू में, स्पर्शमणि शब्द उदार ।
चिन्तामणि[१] चित में धरे, रामप्रकाश फल चार ।।५०।।
सतगुरू भ्रमर गुँजार में, शब्द श्रवण चित माहि ।
उतम कीट श्रद्धा करे, रामप्रकाश उर थाहि ।।५१।।
सतगुरू पारस चिन्तामणि, कल्पवृक्ष सम जोय ।
मनवान्छित जिज्ञासु ले, रामप्रकाश चित होय ।।५२।।
लग्न लगे टिटिहरी गुरू, शिष अण्डा सर पाल ।
द्रष्टी से सेवत रहे, दूर रहते रक्षवाल ।।५३।।

[१] स्पर्श मणि = पारस

नागर बेल के गोढ से, लग्न पान सी धार।
रामप्रकाश शिष हरित हो, श्रद्धा के अनुसार।।५४।।
शिष्य चकोर गुरू चन्द्र वत, लग्न लिव रहे धार।
रामप्रकाश सुख पावते, भव से उतरे पार।।५५।।
माया सर्पणी चौफेर में, बचिया जण जण खाय।
रामप्रकाश बाहिर पड़े, भव से उभरे आय।।५६।।
पाँच कोश की मँजिल में, घर से निकले ओर।
पाछिल पाँव उठते नही, रामप्रकाश घर ठोर।।५७।।
जगत मोह पग पाछला, उठे न छूटे पाँव।
रामप्रकाश कितना चले, दिन भर चले जु दाँव।।५८।।
जन्म खोयो हरिभजन बिन, जग प्रपँच में लाग।
रामप्रकाश हरि ना भज्यो, कैसे जगे अनुराग।।५९।।
दुर्लभता से नर भयो, भव तरणे के काज।
रामप्रकाश दुर्भाग्य में, रह्यो आप भ्रम साज।।६०।।
सतगुरू पन्ना अमूल्य है, निरखे हीर हजार।
रामप्रकाश शशि किरण तें, बढे मूल्य टकसार।।६१।।
पन्ना सतगुरू भाव से, हीरा शिष्य हजार।
शशिकला श्रद्धा बढे, रामप्रकाश उदार।।६२।।
हाथ हुमाऊ सतगुरू, जिनके शिर पर होय।
रामप्रकाश वह पलट दे, भाग्य सौभाग्य जोय।।६३।।
सतगुरू हाथ शिर पर धरे, छाया हुमाऊ समान।
कर्म पलट भाग्य बने, रामप्रकाश भगवान।।६४।।
सालोक्य सामीप्य सारूप जो, सायुज्य सार्ष्ठिता जोय।
रामप्रकाश पँच मुक्ति को, विरला पावे कोय।।६५।।
परा पश्यँति मध्यमा, वैखरी वाणी पाँच।
रामप्रकाश गुरुगम लखे, भावावेग को जाँच।।६६।।
नाभी हृदय कण्ठ गत, मुख वाणी घर चार।
रामप्रकाश अँग अँग भखे, पँचम वाणी पार।।६७।।
पाँच वाणी गम कर थके, मुक्ति पाँच के पार।
रामप्रकाश निर्भय सदा, सत चित का दीदार।।६८।।
पांचो वाणी गम थके, मोह गति कर जान।
पांचो मुक्ति नाम से, लक्षण कर पहिचान।।६९।।

।।इतिश्री रामप्रकाश वेदान्त दोहावली अन्तर्गत प्रथम वल्ली समाप्त।।

श्री रामप्रकाश वेदान्त दोहावली

द्वितीय वल्ली प्रारम्भ

।। मंगल का स्वरूप ।।

मंगल रूप परमात्मा, आनन्दमय प्रधान ।
सुमरण ते भय अघ हरे, परमानन्द प्रदान ।।१।।

।।मंगलकाप्रयोजन।।

मंगलकरण निर्विघ्नता, कार्य पुर्णता होय ।
मंगलाचरण हेतु यह, रामप्रकाश सुख जोय ।।२।।

।। मंगल के प्रकार ।।

मंगल तीन प्रकार के, वस्तु रूप से दोय ।
रामप्रकाश प्रणाम से, आशीष पावे जोय ।।३।।
निर्गुणवस्तु निर्देश है, सर्गुण वस्तु निर्देश ।
रामप्रकाश नमस्कार ते, आशिर्वाद यह रेश ।।४।।

।। वस्तु की परिभाषा ।।

वस्तु सत्य ब्रह्म ईश है, सोई वन्दन योग।
अवस्तु प्रपँच जगत है, नाशवान सब भोग ।।५।।
वस्तु अवस्तु जगत में, मिले प्रपँच युग रूप ।
नाशवान अवस्तु असत, सत वस्तु मँगल अनूप ।।६।।

।। निर्देश की परिभाषा।।

मंगल कथन निर्देश है, वर्णन होय आदेश ।
समझ आज्ञा गुरूदेव की, सो मंगल निर्देश ।।७।।

।। निर्गुण वस्तु निर्देश रूप मंगल ।।

सत चित आनन्द ब्रह्म पर, एक अनीह अपार ।
रामप्रकाश निज को नमो, अद्वय निर्गुण निरधार ।।८।।

।। सर्गुण वस्तु निर्देश रूप मंगल ।।

श्री गोविन्द गिरिधर हरी, पुरुषोत्तम जगदीश ।
रामप्रकाश वन्दन करे, सर्गुण बिश्वाबीश ।।९।।

।। नमस्कार रूप मंगल ।।

श्री आचार्य वैष्णव वृत, सतगुरू उतमराम ।
वन्दन रामप्रकाश का, मंगल मय प्रणाम ।।१०।।

।। आशीर्वाद रूप मंगल ।।

सुखी रहो आनन्दित बसो, हरि जपो नित श्याम ।
आशीर्वाद मंगल कहै, रामप्रकाश श्री राम ।।११।।

।। दो प्रकार की विद्या ।।

और विद्या अपर कही, जग प्रपँच विस्तार ।
वेद शास्त्र षट ग्रन्थ बहु, रामप्रकाश व्यवहार ।।१२।।

विद्या दोय प्रकार है, पर अपर को जान ।
अपर मायिक उपदेश दे, रामप्रकाश परज्ञान ।।१३।।
अपरा माया लोक हित, सब है प्रपँच माहि ।
ब्रह्म विद्या मुक्ति परा, युक्ति बिन आवे नाहि ।।१४।।
परा विद्या ब्रह्म ज्ञान दे, प्रपँच देत विडार ।
अज्ञ अँधेरा दूर कर, रामप्रकाश उजियार ।।१५।।

।। ज्ञानी सतगुरू के द्वारा ही कर्म व क्लेश की निवृति संभव ।।

सतगुरू ज्ञानी होय सो, देवे सत उपदेश ।
ब्रह्मज्ञान द्रढावते, काटे कर्म क्लेश ।।१६।।
भेषी साधु उलझाव ते, कर्म काण्ड मति जोर ।
आन उपासी जीव सो, जावे भव की ओर ।।१७।।
सतगुरू सत समझाव ते, देवे सत उपदेश ।
रामप्रकाश ब्रह्म ज्ञान से, काटे कर्म क्लेश ।।१८।।
मनसा वाचा कर्मणा, आवागमन अगवाण ।
त्रिविध त्रिपूटी से घने, रामप्रकाश परमाण ।।१९।।

।। तीन प्रकार की फांसी और उसके निवारण का उपाय ।।

आशा तृष्णा वासना, फाँसी जबर यह तीन ।
रामप्रकाश ममता लगी, मोह स्त्री यह चीन ।।२०।।
मोह नाश ते तीन भी, नाश होय ततकाल ।
पिता अज्ञान के नशे, रामप्रकाश निहाल ।।२१।।

।। टीका का लक्षण व प्रकार, तीन प्रकार की ग्रंथि और साहित्य के तीन प्रकार का विषद विवेचन ।।

टीकाकरण लक्षण अहे, पद व्युत्पति पँच प्रमान ।
रामप्रकाश अन्वय करे, त्रय ग्रंथि समाधान ।।२२।।
उद्देश्य परीक्षा लक्षणा, ग्रंथि तीन जो होय ।
रामप्रकाश वह ग्रन्थ है, नीति कहै पद जोय ।।२३।।
कागज एक ही पर छपे, गीता ग्रन्थ अखबार ।
रामप्रकाश नीरस इके, शास्त्र पढत शत बार ।।२४।।
साहित्य तीन प्रकार के, अल्प गल्प सत ग्रन्थ ।
अल्प पत्रिका उपन्यास है, रामप्रकाश गल्प पंथ ।।२५।।
अल्प समाचार आज के, काल पढे नही कोय ।
गल्प कहानी कल्पना, उपन्यास नीरस होय ।।२६।।
सद्साहित्य सद्ग्रन्थ है, जामें ग्रन्थी तीन ।
रामप्रकाश हरदम पढे, नित नव अध्ययन चीन ।।२७।।
उद्देश्य मानव हित करण, परीक्षा व्याकरण होय ।
लक्षणा में समाधान है, रामप्रकाश पढ जोय ।।२८।।
आओ पढो सद्ग्रन्थ को, भ्यानक रोचक सीख ।
लोक हितार्थ ज्ञान दे, मानव हित की चीख ।।२९।।

ग्रन्थ यथार्थ वेदान्त को, पढे जिज्ञासा धार ।
रामप्रकाश गुरूमुख पढे, सहजे हो भवपार ।।३०।।
भवसागर भय रूप में, लख चौरासी नाल ।
चार खानी गहरी घनी, रामप्रकाश दुःखजाल ।।३१।।

।। चौरासी लाख योनी ।।

नव जल दश पक्षी भने, स्थावर लक्ष बीस ।
कीट एकादश चार मनु, रामप्रकाश पशु तीस ।।३२।।
भव सिन्धु की धारा बहै, गहराई गम्भीर ।
नाना कुण्ड में भोगते, रामप्रकाश बहु पीर ।।३३।।
पापी प्राणी ताप तिहुँ, आधि व्याधि उपाध ।
भोगे रामप्रकाश जहँ, दुःख ते पीड़त असाध ।।३४।।
कर्म भोग को भोग ते, बीते कल्प अनेक ।
कबहुक पूण्य प्रताप ते, रामप्रकाश हो नेक ।।३५।।
ब्रह्म ज्ञानी छाया पड़े, ज्ञात होय अज्ञात ।
ईश्वर कृपा के मिले, रामप्रकाश हो ज्ञात ।।३६।।
पूण्यमयी पूण्यार्जन से, पूण्य हो प्रादुभूत ।
तब हो मानव योनी में, रामप्रकाश आहूत ।।३७।।
लख चौरासी का जीव है, मानव पशु समान ।
सतसँग से वह सुधरता, रामप्रकाश हो ज्ञान ।।३८।।
निद्रा भोजन प्रजनन, भय मृत्यु औ काम ।
क्रोध ईर्षा मोह प्रद, रामप्रकाश पशु धाम ।।३९।।
पामर आवे नर्क से, सुधरे नही कदापि ।
सतसँग सुधरे जो यदि, रामप्रकाश ले दापि ।।४०।।

।। कर्म का स्वरूप वर्णन ।।

कर्म रेख प्रबल अति, भोग न होय विपाक ।
रामप्रकाश हो विविधता, कटते नही मनाक ।।४१।।
तन मन वाणी त्रिविध ते, कर्म होय बहु भांति ।
रज्जुवत त्रय वली जाल हो, रामप्रकाश नहीं शांति ।।४२।।
मन बुद्धि गोचर दसहूँ ते, जो जो क्रिया होय ।
कर्म करण कारण बने, रामप्रकाश फल सोय ।।४३।।
अधिष्ठान कारण विभिन्न, देव इन्द्रिय दश जान ।
कर्म वाचक योही कहै, रामप्रकाश पहिचान ।।४४।।
पाँच हेतु ते कर्म हो, तन मन वाणी जान ।
सिद्ध साधक रु सेव्य ते, रामप्रकाश गुणा मान ।।४५।।
आरम्भ विवृत परिणाम ते, प्रति गुणा कर तीन ।
कर्म अकर्म विकर्म को, रामप्रकाश ले चीन ।।४६।।
चक्की चुल्हा ओखली, झाडू जल के थान ।
यह अकर्म अनजान में, रामप्रकाश क्रिया मान ।।४७।।

जीवन हेतु जो जो करे, दैनिक जीवन व्यवहार।
कर्म भाग तकदीर वह, रामप्रकाश विधि भार ।।४८।।
शास्त्र विरुद्ध मर्याद बिन, कामादिक वश होय ।
जो करे विकर्म वही, रामप्रकाश कहै जोय ।।४९।।
इच्छा अनिच्छा पर करे, परेच्छा के भोग।
रामप्रकाश शुभ अशुभ में, मिश्रित होवे योग ।।५०।।
कारण करण क्रिया करे, पूण्य मिश्रित पाप ।
आपस मे गुनाश्रित करो, रामप्रकाश विधि थाप ।।५१।।
साधक बाधक विविधता, भेदक त्रिविध जान ।
त्रिगुणात्मक गणना करो, रामप्रकाश फल मान ।।५२।।
याते सँचित के ब्याज से, प्रारब्ध के भोग ।
क्रियामाण करते बढे, रामप्रकाश सँयोग ।।५३।।
नित्य नैमित्तिक काम्य से, प्रायश्चित्त कर्तव्य पाँच ।
नाना भेद विस्तार को, रामप्रकाश ले जाँच ।।५४।।
पाँच लाख ते अधिक है, गुणा भाग प्रस्तार ।
रामप्रकाश कर्म को करे, विविध भांति विस्तार ।।५५।।
सब पृकृति की गोद में, गुप्त न्यायालय भाग ।
बिन बाबू बिन पंजिका, रामप्रकाश अनुभाग ।।५६।।
पंजियार बिन पंजिका, कार्यालय का भार ।
आगे पाछे रति एकना, रामप्रकाश विस्तार ।।५७।।
कर्म विपाक सँस्कार ते, लोक परलोक के भोग।
रामप्रकाश आलोक में, विरले पावत योग ।।५८।।
पूर्व जन्म रु मात पितु, सँग दोष शिक्षकार।
चक्षु श्रवण सात ते, रामप्रकाश सँस्कार ।।५९।।
अच्छे ते अच्छे बने, बने हीन ते हीन ।
सँस्कार फल देत है, रामप्रकाश ले चीन ।।६०।।
स्वर्ग ते आयके जावते, स्वर्ग मानव के लोक ।
नर्क में जावे अनिष्ठ कर, रामप्रकाश परलोक ।।६१।।
मानव के क्षिति लोक ते, आय जाय नरलोक।
नाक नर्कों के राह से, रामप्रकाश परलोक ।।६२।।
नर्क भोग के आवते, जाय नर्क नर लोक।
नाक विरले जन देखते, रामप्रकाश भर शोक ।।६३।।
तन्मात्रा पँचभूत मन, दश इन्द्रिय पँच प्राण ।
दशो दिशा साक्षी रहे, रामप्रकाश हो त्राण ।।६४।।

।। अष्टपुरी का कथन ।।

इन्द्रिय दश पँच प्राण में, चार अँतस्थ अज्ञान।
युगल कर्म मन वासना, रामप्रकाश अष्ठ जान ।।६५।।
जन्म मरण कारण कही, अष्ठपुरी पहिचान ।
रामप्रकाश मुक्ति मिले, ज्ञान अग्नि कर हान ।।६६।।

।। पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ ।।

श्रोत्र त्वचा चक्षु यह, जीभ सहित ले घ्राण ।
रामप्रकाश स्थूल तन, ज्ञान इन्द्रिय पँच जाण ।।६७।।

।। पाँच कर्मेन्द्रिया ।।

वाक पाणी पाद उपस्थ, गुदा कर्म इन्द्रियाँ पाँच ।
रामप्रकाश स्थूल मे, देह कर्म कर जाँच ।।६८।।

।। पाँच प्राण ।।

प्राण उदयान रु व्यान है, समान और अपान ।
रामप्रकाश पँच प्राण यह, सुक्षम देह मे मान ।।६९।।

।। पाँच उप प्राण ।।

कूर्म कृकल देवदत, नाग धनञ्जय जोय ।
रामप्रकाश उप प्राण है, देह सँजीवन होय ।।७०।।

।। चार अन्त:करण ।।

मन बुद्धि चित अहंकार है, अंत:करण यह चार ।
रामप्रकाश मन एक ही, विविध रूप ले धार ।।७१।।
पाँच प्राकृतिक उपाधि ते, चिदाभास ते तीन ।
आवागमन कारण यही, रामप्रकाश मति चीन ।।७२।।
पामर विषयी बहुधा रहे, कोई जिज्ञासु होय ।
अरबों में ज्ञानी मिले, रामप्रकाश कहे जोय ।।७३।।
नरकासुर नर लोक ते, आवत है बहु लोग ।
पशुवाधिक लक्षण रहे, रामप्रकाश भव भोग ।।७४।।
सतसँगत सन्त सेवते, गुण अवगुण की जाण ।
पावे परम विवेक तब, रामप्रकाश अवसाण ।।७५।।

।। धर्म के दश लक्षण ।।

धर्म उत्पति स्तिथि लय, जाने धर्म विपाक ।
रामप्रकाश स्वरूप को, धारण करे मनाक ।।७६।।
क्षमा धैर्य शमदम दया, सर्व शौच धी ज्ञान ।
रामप्रकाश अक्रोध हो, दश लक्षण धर्म ध्यान ।।७७।।
तन मन वाणी दोष दश, दुर्व्यसन नशे सब ययाग ।
रामप्रकाश मानव बने, तब कर्तव्य मन लाग ।।७८।।

।। पांच महायज्ञ ।।

नित्यकर्म ब्रह्मयज्ञ कर, देवयज्ञ पितृ याग ।
भूतयज्ञ नित ही करो, रामप्रकाश चित लाग ।।७९।।

।। तीन तरह के ऋण ।।

देवऋण ऋषिऋण सँग, पितृऋण को जान ।
करो प्रक्रिया उऋण की, रामप्रकाश पहिचान ।।८०।।
मात पिता गुरू सन्त जन, करो सेवा मन लाग ।
सत सँगत नित ही करो, रामप्रकाश अनुराग ।।८१।।

गुरु शिष्य लक्षण लखो, रहणी कहणी देख ।
रामप्रकाश मन साख ले, धरो साधना मेख ।।८२।।

।। चार प्रकार के धर्म ।।

प्रथम धर्म धारण करो, मानवता को सार ।
धर्म कर्म जानो भले, रामप्रकाश विस्तार ।।८३।।
कर्मधर्म अरु शर्मधर्म, आनधर्म परिहार ।
परमधर्म चित में धरो, रामप्रकाश उदार ।।८४।।
कर्मधर्म आजीविका, शर्म धर्म सँसार ।
आनधर्म को परहरो, रामप्रकाश उर धार ।।८५।।
परमधर्म उधार हित, जन्म रु कर्म सुधार ।
लोकालोक भी ऊधरे, रामप्रकाश उरधार ।।८६।।
परमधर्म कल्याण मय, लक्ष जीवन का होय ।
भव भ्रमण होवे नही, रामप्रकाश कहि जोय ।।८७।।

।। कल्याणार्थ उपाय ।।

सतसँग श्रद्धा साधना, सतगुरु शरणे लाग ।
करो उपाय भवतरण का, धन जीवन धन भाग ।।८८।।
सन्ध्या सुमिरण साधना, नित्य करो सतसँग ।
रामप्रकाश गूरू शरण में, होय भ्रम भव भँग ।।८९।।
तीर्थ व्रत यज्ञ याग के, करो कर्म निष्काम ।
तीर्थ व्रत शुभ भाव से, रामप्रकाश भज राम ।।९०।।
शुभ कर्म से मल जरे, शुद्ध अन्त:करण होय ।
निष्कामी निष्प्रह रहे, रामप्रकाश के सोय ।।९१।।
करो उपासना ध्यान से, निर्गुण सर्गुण के योग ।
रामप्रकाश विक्षेप बिन, मनका होय नियोग ।।९२।।

।।इतिश्री रामप्रकाश वेदान्त दोहावली अन्तर्गत द्वितीय वल्ली समाप्त।।
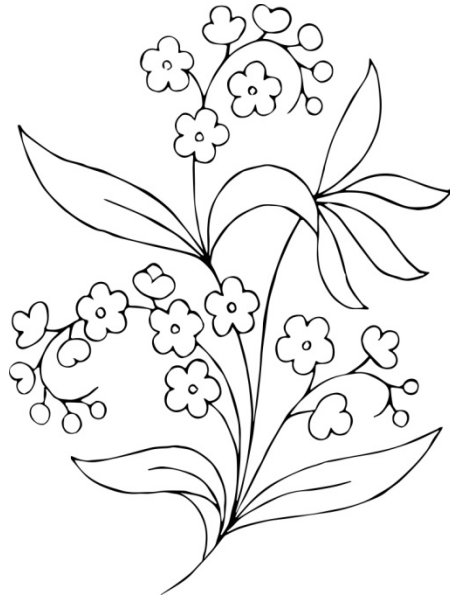
श्री रामप्रकाश वेदान्त दोहावली

तृतीय वल्ली प्रारम्भ

।। चार अनुबन्ध का कथन ।।

अधिकारी सम्बध को, विषय प्रयोजन जान ।
सर्व प्रथम धारण करो, रामप्रकाश कल्यान ।।१।।
चाहे हो व्यवहार भी, या अध्यात्म ज्ञान ।
अनुबन्ध आवश्यक सर्व में, रामप्रकाश परमान ।।२।।
अधिकारी इहि विधि बने, हो विवेक वैराग ।
मुमुक्षा युत सम्बँध में, विषय प्रयोजन लाग ।।३।।
अनुबम्ध चारों जो सधे, प्रतिबन्धकाभाव ।
तब अधिकारी उतम हो, रामप्रकाश शुभ चाव ।।४।।

।। ज्ञान के साधन ।।

अधिकारी अध्यात्म लखे, तत्व दर्शन का ज्ञान ।
साधन ताके यह कहै, रामप्रकाश पहिचान ।।५।।

।। विवेक का स्वरुप ।।

प्रथम यही विवेक हो, सत असत को ज्ञान ।
श्रद्धा युत समाधान हो, रामप्रकाश विद्वान ।।६।।
प्रथम योग्यता हो यही, अंग उपांग समाय ।
रामकृपा सत्संग से, हृदय विवेक उपाय ।।७।।

।। वैराग्य का स्वरूप व प्रकार ।।

द्वितीय हो वैरागयुत, असत सर्व का त्याग ।
शमदम तप उपरामता, रामप्रकाश बड़ भाग ।।८।।
विषय प्राप्ति हित साधना, विषय वस्तु का त्याग ।
काम पुरुषार्थ अर्थ की, रामप्रकाश तज राग ।।९।।
आतम तत्व सत छाणते, मिथ्यात्व प्रपँच त्याग ।
लौकिक वासना कर्म की, रामप्रकाश तज राग ।।१०।।
ब्रह्मलोकादिक भोग सब, तजे आस वैराग ।
रामप्रकाश सन्त जन कहै, प्राप्त सामग्री त्याग ।।११।।

।। दोषदृष्टि व मिथ्यादृष्टि वैराग्य ।।

दोष दृष्टि से जग तजे, प्रथम यह वैराग ।
मिथ्यादृष्टि से बुद्धि कर, द्वितीय गत वितराग ।।१२।।
काग विष्ठावत भोग सब, जान तजे जग जाल ।
दोष दृष्टि यह जानिये, रामप्रकाश दुःख शाल ।।१३।।

।। मिथ्या दृष्टि वैराग्य का प्रकार ।।

मिथ्या दृष्टि वैराग सो, पर अपर दो जान ।

अपर चार विधि ते कह्यों, रामप्रकाश ले जान ।।१४।।
मिथ्या दृष्टि वैराग्य पर, वारम्वार अभ्यास ।
नाशवान जग झूठ है, यों लख रामप्रकाश ।।१५।।

।। अपर वैराग्य का प्रकार ।।

अपर वैराग जो कहत है, सोहै चार प्रकार ।
यतमान व्यतिरेक सो, एकेन्द्रिय वशीकार ।।१६।।

।। यतमान वैराग्य ।।

सार असार का चिन्तन कर, दोष करे प्रतिहार ।
यतमान वैराग सो, रामप्रकाश उचार ।।१७।।

।। व्यतिरेक वैराग्य ।।

यतमान निरीक्षण करे, अन्तस्थ दोष परिहार ।
व्यतिरेक रहे दोष का, नित ही करे प्रहार ।।१८।।

।। एकेन्द्रीय वैराग्य ।।

एकेद्रीय वैराग वह, शनै शनै अभ्यास ।
शम दम साधन में रहे, हरदम रामप्रकाश ।।१९।।

।। वशीकार वैराग्य ।।

वशीकार सो मन्द तीव्र, तीव्रतर तीन प्रकार ।
विषय निरोध हरदम करे, मन्द वैराग विचार ।।२०।।
तीव्र वैराग त्रयलोक के, देवे भोग विसार ।
तीव्रतम उपराम है, यह आत्म निस्तार ।।२१।।
तीव्रतम वशीकार है, उतम श्री वैराग ।
ब्रह्म ज्ञान अधिकारिता, रामप्रकाश अनुराग ।।२२।।

।। वैराग्य की दो औरतें ।।

भार्या दो वैराग की, श्रद्धा भक्ति यह नार ।
या बिन सो पाखण्ड है, रामप्रकाश विचार ।।२३।।

।। षट सम्पत्ति का कथन ।।

आवश्यक हे षट सम्पत्ति, वैराग्य उपरांत ।
धारण इनको जो करे, पावे मन विश्रान्त ।।२४।।
शम दम तितिक्षु उपरामता, ता बिन शून्य विराग ।
श्रद्धा सत्संग साधना, संग विवेक चित लाग ।।२५।।

।। शम ,दम का स्वरूप ।।

विषयन ते मन रोकनो, शम साधन को जान ।
इन्द्रिय गण विषया तजे, रामप्रकाश दम मान ।।२६।।

।। श्रद्धा ।।

श्रद्धा सतगुरू सन्त में, शास्त्र सतसँग ज्ञान।
शुन्य विवेक श्रद्धा बिना, कहते सन्त सुजान ।।२७।।

।। समाधान ।।

श्रद्धा सतसँग गुरू विषे, बोध हेतु सँवाद ।
रामप्रकाश समाधान यह, विवेक पुष्टिदा आद ।।२८।।

।। उपराम ।।

विषय भोग हित उद्यमता, सामग्री और उपाय।
इन त्यागे उपराम यह, सो वैराग्य सहाय।। २९।।

।। तितिक्षा का स्वरूप ।।

शर्दी गर्मी सहन करे, धर्म हित भूख रु प्यास।
तितिक्षित जीवन तप है, रामप्रकाश यह खास ।।३०।।

।। एक दूसरे के पूरक ।।

विवेक सहित वैराग्य हो, शम दम तप उपराम।
तितिक्षित शिष्य जिज्ञासु हो, रामप्रकाश भज राम ।।३१।।
शम दम तितिक्षा के बिना, जहाँ नही उपराम।
तहाँ वैराग्य नहीं सम्भवे, यह सहायक अभिराम।।३२।।
शम दम तप उपराम बिन, फीका है वैराग।
श्रद्धा सतसँग के बिना, नही विवेक विभाग ।।३३।।
श्रद्धा गुरू सतसँग में, समाधान हित ज्ञान।
इस के बिना विवेकना, यह सम्पति परमान।।३४।।
षट् सम्पति बिन सूने सभी, भक्ति विवेक वैराग।
मुमुक्षुता बिन वृथा सभी, मुमुक्षू साधन सँभाग ।।३५।।

।। मुमुक्षुत्व ।।

जाके ह्रदय जब जगे, मोक्ष इच्छा अनुराग ।
मुमुक्षूता ही जानिए, सब साधन बड़भाग ।।३६।।
प्रथम शुद्ध व्यवहार कर, पीछे अध्यात्म की सार।
रामप्रकाश हो मुमुक्षुता, साधन सार विचार।।३७।।
मोक्ष इच्छा के बिना, शून्य विवेक वैराग ।
जप तप सब ही शून्य हे, याते मुमुक्षू धनभाग।।३८।।
अँधा वैराग विवेक बिन, केवल कष्ट भण्डार ।
पँगू विवेक वैराग बिन, दोनो सम अधिकार ।।३९।।
अरस परस दोनो मिले, साधन युत विवेक ।
विरति मुमुक्षुता साथ में, रामप्रकाश लख टेक ।।४०।।

मुमुक्षा बिन वैरागयुत, वृथा साधन विवेक ।
परम जिज्ञासा होय तब, रामप्रकाश हो एक ।।४१।।
एक रहे युग ना रहे, इन तीनों का सँग ।
वाचक ज्ञान प्रविणता, लगे ना सुमति रँग ।।४२।।
विवेक वैराग्य शमादि युत, जाके मुमुक्षू होय ।
सो अधिकारी उतम हे, मल विक्षेप नही दोय ।।४३।।
सम्पुटित विवेक वैरागयुत, मुमुक्षा हो चित माहि ।
तब पावे अधिकारिता, रामप्रकाश वरताहि ।।४४।।

।। श्रवण का स्वरूप ।।

सतगुरू सानिध्य वास करि, चित स्थिर थिर आस ।
आसन धार श्रवण करो, श्रुति वाक्य उर वास ।।४५।।
सतगुरू सानिध्य वास कर, सावधान चित होय ।
शास्त्र स्वाध्याय श्रवण कर, सँशय चित के खोय ।।४६।।

।। मनन का स्वरूप ।।

बैठ एकान्त विचारिये, श्रवण किये चित धार ।
मनन करो मन मान के, सत्यासत्य विचार ।।४७।।
चित स्थिर चित चिंतन में, लगे मन अनुराग ।
विषय सन्दर्भ श्रवण के, वारवार हो लाग ।।४८।।

।। निदिध्यासन का स्वरूप ।।

ज्यों श्रवण रु मनन में, निश्चय किया विचार ।
ताही को जीवन बीच में, साधन हृदय सँभार ।।४९।।
साधन युत विवेक चित, शमादि युत वैराग ।
यह मुमुक्षू मन मे धरे, सतगुरू शरण अनुराग ।।५०।।
निदिध्यासन तब ही सधे, सँयम मन हो शान्ति ।
अन्तःकरण गुरूगम लखे, श्रद्धा सुमन ले ख्याति ।।५१।।
अन्तरँग साधन तीनही, मुमुक्षु पालन हार ।
परम तत्व तब पावही, निश्चय होय उधार ।।५२।।

।। सम्बँध अनुबन्ध ।।

ग्रन्थ ब्रह्म सम्बँध को, प्रतिपादन प्रकार ।
प्रतिपादक प्रतिपाद्यता, रामप्रकाश निहार ।।५३।।
ज्ञान जन्य शास्त्र जनक, पाठक पाठी सम्बध ।
प्राप्य अध्यात्म मुमुक्षू सदा, प्रापक लखो निम्बन्ध ।।५४।।

।। विषय अनुबन्ध ।।

विषय अध्यात्म ज्ञान है, ग्रन्थ रु ग्रन्थी सम्बन्ध ।
इहि विधि लखिये विधिवत, रामप्रकाश अनुबम्ध ।।५५।।
विषय अध्यात्म प्रसँग को, जीव ईश ब्रह्मज्ञान ।
मायावृत स्वरूप को, रामप्रकाश पहिचान ।।५६।।

।। प्रयोजन अनुबन्ध ।।

सर्व दु:खन की निवृति, परमानन्द का पान ।
सँशय निवृति सर्व विधि, रामप्रकाश ले जान ।।५७।।
यह प्रयोजन मुख्य है, भव भ्रम की हान ।
कष्ट हरण आनन्द करण, रामप्रकाश गलतान ।।५८।।

।। ज्ञान व मोक्ष हितार्थ अच्छे गुरू की खोज व शरणागत में विनय भाव ।।

प्रथम करो विवेक से, सतगूरू खोज लगाय ।
अधिकारी उतम बनो, ब्रह्म ‌ान गम पाय ।।५९।।
मोक्ष हितार्थ शरण ले, गुरू गुण में अनुराग ।
सतगुरू सेवा भाव से, रामप्रकाश वर भाग ।।६०।।
पारख कर के सतगुरू, फिर शरणागत लाग ।
व्यशन नशे से मुक्त हो, रामप्रकाश अनुराग ।।६१।।
शम दम दयाल उदार हो, ब्रह्मवेता निष्काम ।
निष्प्रह निलोभता, रामप्रकाश गुण धाम ।।६२।।
ऐसे सतगुरू शरण में, समर्पित हो प्रणिपात ।
शिक्षा दीक्षा लीजिए, रामप्रकाश मन शान्त ।।६३।।
भेष देख नही भूलिये, सन्त असन्त पहिचान ।
पाखण्ड राता बहु फिरे, लूटे धन सन्मान ।।६४।।
हँसा बुगला रँग एक है, कौआ कोयल एक ।
गुण अवगुण को जानिये, रामप्रकाश विवेक ।।६५।।
सन्त हँसा सम ऊजला, निष्प्रही निरवाण ।
हँस भेष बुगला बहु, कर पारख गुरु जाण ।।६६।।
सोना पीतल एक सम, मिश्री फिटकरी जान ।
तूम्बा ओ तरबूज को, रामप्रकाश पहिचान ।।६७।।

।। गुरू के प्रकार ।।

गुरू सतगुरू परमगुरू, ताके कर्त्तव्य जान ।
शीश नमावो युक्ति से, रामप्रकाश मन मान ।।६८।।

।। गुरू कर्त्तव्य ।।

जन्म कर्म से मरण तक, जो करे जगकार ।
गुरू ताहि को जानिये, रामप्रकाश भ्रमार ।।६९।।
सौलह सँस्कार में अग्रणीय, परणे मरणे माहि ।
मन्दिर तीर्थ कान गुरू, रामप्रकाश बहु थाही ।।७०।।

।। सतगुरू कर्त्तव्य ।।

साचा ज्ञानी सतगुरू, देवे अनुभव ज्ञान ।
शास्त्र सम्मत विवेकता, साधन युत परमान ।।७१।।

।। परम गुरू का कर्त्तव्य ।।

परम गुरू परमात्मा, निर्गुण रह निष्फन्द ।
भक्त उधारक होय के, रामप्रकाश सुख कन्द ।।७२।।
निर्गुण ते सर्गुण बने, पूर्व पूण्य प्रताप ।
योग माया वश आवते, रामप्रकाश हरि आप ।।७३।।
तन सेवा मन भाव से, धन से पर उपकार ।
पत्र पुष्प श्रद्धा सहित, सतगुरू शरण विचार ।।७४।।
हाथ जोड़ कर अर्चना, प्रश्न करो शुभ चाह ।
शरणागत अनुचर रहो, रामप्रकाश शुभ राह ।।७५।।
प्रश्नकाल में प्रश्न कर, जाने साधन भेद ।
सत असत को जानते, असत तजे मन छेद ।।७६।।
सतगुरू साक्षी आप है, ब्रह्मवेता ब्रह्म रूप ।
रामप्रकाश निष्ठा करे, शिष्य श्रद्धा अनुरूप ।।७७।।
सचिदानन्द है सतगुरू, ज्ञान ध्यान भण्डार ।
परमार्थ हित परमात्मा, रामप्रकाश करतार ।।७८।।
श्रद्दा मन विश्वास से, रखो चित मरियाद ।
तर्क वितर्क कुतर्क तजो, रामप्रकाश रख याद ।।७९।।
प्रथम व्यवहार को शुद्ध कर, साधन अध्यात्म सार ।
विवेक वैराग्य मुमुक्षुता, परम जिज्ञासु विचार ।।८०।।
व्यवहार शुद्धि बिन जो अहै, चाहे ब्रह्म चित ज्ञान ।
श्वान चर्म में पय धरे, ताहि सम पहिचान ।।८१।।

।। इतिश्री रामप्रकाश वेढान्त ढोहावली अन्तर्गत तृतीय वल्ली समाप्त ।।

श्री रामप्रकाश वेदान्त दोहावली

चतुर्थ वल्ली प्रारम्भ

।। तत पद व त्वं पद का निर्णय शोधन ।।

अध्यात्म दर्शन विषय, तत्व परम विचार ।
माया जीव रु ईश ब्रह्म, रामप्रकाश विस्तार ।।१।।
ब्रह्म सचिदानन्द घन, एक सर्व अधिष्ठान ।
रामप्रकाश निश्चय करे, वोही ब्रह्म समान ।।२।।

।। त्वं पद का विवेचन प्रारम्भ ।।

।। जीव का वाच्यार्थ।।

कोश शरीर त्रय अवस्था, देश कालादिक जान ।
जीव वाच्यार्थ जानिये, मृषा ज्ञान तजि जान ।।३।।
त्वंपद सामग्री जीव की, देश काल वस्तुवाद ।
वाच्यार्थ सब त्याग दे, लक्ष्यार्थ ले पाद ।।४।।

।। जीव का स्वरूप ।।

मलीन सतोगुण अविद्या, कुटस्थ ओ चिदाभास ।
त्वम पद जीव स्वरूप यह, सुक्ष्म देह मे वास ।।५।।
अविद्या विशिष्ट चेतन मिले, सुक्ष्म देह में आय ।
कुटस्थ चिदाभास के मेल से, जीव स्वरूप कहाय ।।६।।
त्रिगुण में चिदाभास रु, कुटस्थ मिले वह जीव ।
रामप्रकाश ज्ञानी लखे, वही लखे फिर पीव ।।७।।
ज्ञानेन्द्रिय रु कर्मेंद्रिया, प्राण पँचक चिदाभास ।
पाँच तत्व तन्मात्रा अन्तः, मिल चौवीस जीव खास ।।८।।

।। स्थूल प्रक्रिया~जीव का निर्णय ।।

चेतन शून्य बिन्दु ब्रह्म से, चन्द्र पृकृति प्रधान ।
अकार उकार मकार से, ओम शब्द अधिष्ठान ।।९।।
अकार रजो उकार सत, मकार तमो भो आन ।
सृष्ठी काया ताते कही, बिन्दु साक्षी कर मान ।।१०।।
ब्रह्मार्षित महतत्व से, पृकृति सो प्रधान ।
ताते पसरे तीन गुण, रजो सतो तम ज्ञान ।।११।।
अब याके विस्तार को, क्रमशः जानो ज्ञान ।
प्रथम स्थूल प्रक्रिया में, जीव वाच्यार्थ जान ।।१२।।
शब्द वस्तु अनमोल है, परम मुमुक्षू लेत ।
साधक महत्व जो लखे, गुरू बालक ले हेत ।।१३।।
अकार रजोगुण उकार से, सतोगुण भया विकास ।
तमोगुण तीनों मिल भया, सृष्टि रामप्रकाश ।।१४।।

बिन्दु ब्रह्म अर्ध चँद्रिका, पृकृति त्रिगुण महान ।
सृष्टि उद्भवित हो रही, रामप्रकाश अधिष्ठान ।।१५।।
ओम प्रणव सोहम् वही, रमता प्राण है राम ।
सोई रामप्रकाश है, हरि हर अज अभिराम ।।१६।।
ओम से सर्गुण रचा, सोहम् निगुण सो प्राण ।
रामप्रकाश सब मे रमे, चेतन आप अबाण ।।१७।।
रमणीय रमता राम सत, चित बिन्दु आनन्द ।
माया चन्द्रिका से भये, त्रिगुण ओम मिल कन्द ।।१८।।
प्रणव शब्द शूक्ष्म अति, गुरू शब्द अनमोल ।
त्रिगुण रचना से भया, द्रश्य विश्व अणतोल ।।१९।।
शूक्ष्म सृष्टि प्रथमता, रजोगुण ते प्राण ।
कर्मेन्द्रियों के साथ मे, भया कर्म से त्राण ।।२०।।
शुद्ध सतोगुण ते भया, अन्तःकरण परवान ।
ज्ञानेन्द्रियों मे उदय, सतो भया प्रधान ।।२१।।
अन्तःकरण मे आ बसा, चिदाभास प्रकाश ।
तामें बसा कुटस्थ सो, ईश्वर ब्रह्म विकास ।।२२।।
तमोगुण शक्ति प्रणव की, शूक्ष्म शब्द परवाण ।
ताते नभ का द्रश्य है, सृष्टि मूल बखाण ।।२३।।
नभ शूक्ष्म ते वायु गुण, वायु तेज मय होय ।
तेज ते उत्पन्न तोय हो, जल ते भूमि जोय ।।२४।।
इन पाँचों ही तत्व ते, हो गया सृष्टि प्रखण्ड ।
सोई प्रकट स्थूलता, द्रश्य सृष्टि ब्रह्मण्ड ।।२५।।
एक एक ते शूक्ष्मता, गुण गोचर में आय ।
चेतन विवृत सो भया, माया परिणाम सजाय ।।२६।।

।। पाँच तत्व व पच्चीस प्रकृति का स्वरूप वर्णन ।।

शब्द व्योम वायु लखो, तेज नीर भू जान ।
एक एक ते स्थूलता, दश गुण लघुता मान ।।२७।।
भूमि तोय अरु तेज सो, वायु नभ पहिचान ।
एक एक प्रति शूक्ष्म ते, दश गुण वृहत महान ।।२८।।
शब्द ते नभ स्पर्श वायु, रुप तेज रस जल मान ।
गन्ध भूमि क्रमशः लखो, उत्पति भई प्रधान ।।२९।।
नभ वायु जल तेज भू, तमोगुण से तन्त पाँच ।
एक एक की प्रकृति भी, भई पाँच की पाँच ।।३०।।

।। अपँचीकृत मिलान प्रकृति वितरण ।।

शोक प्रसारण नीन्द रु, लार रोम आकाश ।
काम रु धावन तृषा, स्वेद त्वचा वायु खास ।।३१।।
क्रोध चलन क्षुधा लखो, मुत्र नाड़ी सो तेज ।
मोह चलन क्राँति लखो, शुक्र माँस जल सेज ।।३२।।

भय आकूचन आलस्य, शौणि हाड भू जान ।
यह वितरण सँयोग है, पाँचों तत्व विधान ।।३३।।
पाँच व्यक्ति फल पाँच विध, बैठे ले कर बाँट ।
सभी फल है पास में, मित्रभाव की छाँट ।।३४।।
आपस में पाँचों मिले, अरस परस सब योग ।
सृष्टि के कारज चले, यह पृकृति सँयोग ।।३५।।
गुरू मुख समझो पँचीकरण, परम सरल विधि आन ।
पँचीकरण स्थूलता, शूक्ष्म अपँचीकृत मान ।।३६।।

।। आकाश तत्व की प्रकृति ।।

रोम त्वचा नाड़ी कही, माँस हाड यह पाँच ।
प्रकृति यह आकाश की, शास्त्र कहता जाँच ।।३७।।

।। वायु तत्व की प्रकृति ।।

प्रसारण धावन वलन, चलन आकूचन मान ।
यह प्रकृति वायु कही, गुण धर्म प्रधान ।।३८।।

।। तेज तत्व की प्रकृति ।।

निंद्रा तृषा क्षुधा लखो, क्रान्ति आलस्य जान ।
यह प्रकृति तेज की, सत निश्चय कर मान ।।३९।।

।। जल तत्व की प्रकृति ।।

लार स्वेद मुत्र शुक्र, शोणित ले यह जान ।
जल की पाँचो प्रकृति ले, रामप्रकाश पहिचान ।।४०।।

।। पृथ्वी तत्व की प्रकृति ।।

रोम त्वचा नाड़ी कही, माँस कहै अरु हाड ।
यह प्रकृति भूमि की, ब्रह्मण्ड याकी माण्ड ।।४१।।
यह पँचीकरण पँचीकृत, लखो गुरु गम ज्ञान ।
अध्यायम दर्शन पढो, पूर्ण किया बखान ।।४२।।

।। स्थूल शरीर के नाम ।।

राधा कृष्ण हरि विष्णु, श्री जगदीश विकास ।
नाम स्थूल शरीर के, रघुवर रामप्रकाश ।।४३।।

।। स्थूल शरीर के रँग ।।

श्याम हरित लाल है, उज्वल पीला रँग ।
यह पाँच तन्त पाँच के, अपने अपने ढँग ।।४४।।

।। स्थूल शरीर की छः अवस्था ।।

शिशु कुमार पौगंड रु, किशोर योवन जान ।
जरा पाय अन्तकाल हो, मृत्यु देह क्षयमान ।।४५।।

।। स्थूल शरीर का भार व आकार ।।

भूमि ते दश दश गुणा, अधिक् सुक्ष्म बड़े मान ।
नभ ते बढ कर जानिये, विषय तन्मात्रा जान ।।४६।।
शब्द स्पर्श रूप रस, गन्ध पृथ्वी में पाँच ।
नभ ते द्विगुणा कर बढत, गुरु मुख जानो जाँच ।।४७।।
याते स्थूल शरीर है, हलका भारी छोट ।
विभिन्न आकार प्रकार से, रामप्रकाश बहु मोट ।।४८।।

।। स्थूल शरीर के षट विकार।।

जन्म अस्तित्व वृद्धि लख, विपरिणाम अपक्षय जान ।
स्थूल विनाश अवस्तु यह, षट विकार यह ज्ञान ।।४९।।

।। तत्वों के निवास स्थान ।।

नभ शीश वायु सुण्डी, तेज पीते में वास ।
जल भाल भूमि हृदय, पाँचों तत्व निवास ।।५०।।

।। सुक्ष्म शरीर निर्णय ।।

शूक्ष्म देह में चिदाभास के, मिलने ते जीव होय ।
अविद्या विशिष्ट चेतन मिले, जीव कहत है जोय ।।५१।।
अष्ठपुरी मे जब मिले, चिदाभास सँयोग ।
जीव शब्द ताही कहै, जड चेतन मिल योग ।।५२।।
ज्ञानैन्द्रिय रु कर्मेन्द्रिय, अन्तःकरण पँच भूत ।
पँच कोश अवस्था त्रय, शूक्ष्म देह अनुस्यूत ।।५३।।
पाँच ज्ञानेन्द्रिय प्राण पँच, पाँच कर्मेंद्रिय जान ।
चार अँत:करण मेल से, सुक्ष्म देहि मान ।।५४।।

।। पाँच ज्ञानेन्द्रिया ।।

श्रोत्र त्वचा चक्षु जिह्वा, घ्राण सहित यह पाँच ।
ज्ञानेन्द्रियाँ यह जानिये, रामप्रकाश कहै जाँच ।।५५।।

।। पञ्च ज्ञानेंद्रियों के देवता व आहार ।।

श्रोत्र इन्द्रिय दिग्पाल सुर, शब्दाशब्द अहार ।
त्वचा इन्द्रिय है वायु सुर, शीतोष्ण करे विहार ।।५६।।
चक्षु रवि है देव सँग, रूप कुरूप अहार ।
जीभ वरुण सुर रस करे, स्वाद रुचि अनुसार ।।५७।।
गंध दुर्गन्ध घ्राण ते, अपने विषय प्रमाण ।
ज्ञानेंद्रिय के विषय यह, अश्वनीकुमार प्रधान ।।५८।।

।। ज्ञानेन्द्रियों के विषय ।।

शब्दाशब्द श्रवण विषय, त्वचा स्पर्श नर्म कठोर ।
चक्षु रूप कुरूप को, विषय सम्बन्ध निचोर ।।५९।।
षट् रस कुरस जिभ्या लखे, घ्राण सुगन्ध दुर्गन्ध ।
पाँच ज्ञानेन्द्रिय के विषय, रामप्रकाश यह सन्ध ।।६०।।

।। पाँच कर्मेन्द्रियां ।।

वाक पाणी रु चरण ये, गुदा उपस्थ परमान ।
यह कर्मेंद्रिय पाँच है, रामप्रकाश पहिचान ।।६१।।

।। कर्मेन्द्रियों का कार्य ।।

वाक मुख वाणी विषय, पाणी हाथ से लेन ।
पाद पाँव गमनागमन, कर्मेंद्रिय की देन ।।६२।।
मल विसर्जन वायु हर, अपान मूल स्थान ।
पाँचों प्राण अँश वायु के, रामप्रकाश बखान ।।६३।।
चरण इन्द्रिय वामन करे, गमनागमन पद सूत ।
उपस्थ इन्द्रिय रति प्रजापति, सुरत सँग कर मूत ।।६४।।
उपस्थ लिंग मैथुन मुत्र, गुदा उपायु त्याग ।
मल विसर्जन कर्म है, रामप्रकाश ले जाग ।।६५।।
यह कर्मेंद्रिय पाँच है, प्रकृति रचित सुर ताल ।
पंद्रह यह तत जानिये, सुक्ष्म देह का माल ।।६६।।
दश इन्द्रिय सुक्ष्म के, द्वार दश यह देह ।
इनके द्वारा प्रकट हे, क्रियाकर्म के गेह ।।६७।।

।। प्राणों का वर्णन।।

प्राण ब्रह्म स्वरूप है, जीवन का आधार ।
ता बिन जग निर्जीव है, रामप्रकाश निरँकार ।।६८।।

।। पाँच प्राण ।।

प्राण उदयान रु व्यान ये, समान और अपान ।
मुख्य पाँच यह प्राण है, जीवन याही ते जान ।।६९।।

।। प्राण वायु का कार्य ।।

प्राण नाभी स्थान है, निशदिन करे प्रयाण ।
इकीश हजार छः सौ लखो, साक्षी सब का जाण ।।७०।।

।। अपान वायु का कार्य ।।

मल विसर्जन वायु हर, अपान मूल स्थान ।
पाँचों प्राण अँश वायु के, रामप्रकाश बखान ।।७१।।

।। उदयान वायु का कार्य ।।

मुख नासिका कण्ठ गत, स्थित रहत उदयान ।
डकार जँभाई लेत है, कर्म करे मन मान ।।७२।।

।। व्यान वायु का कार्य ।।

व्यान रहे सब देह में, सन्धिवात साथ चलाय ।
जोड़ सन्धि को देखता, रामप्रकाश सुखदाय ।।७३।।

।। समान वायु का कार्य ।।

समान उदर गत रहत है, प्राणाअग्नि सचेत ।
खान पान का रस करे, त्रिभाग बाँटत देत ।।७४।।
उतम भाग दे शीश को, मध्यम रक्त भर देह ।
तेली की खल भांति मल, बाहर डाले ऐह ।।७५।।

।। उप प्राणों का वर्णन ।।

।। पाँच उप प्राण ।।

प्राणों सँग उप प्राण है, ताकी सँख्या पाँच ।
कूर्म कृकिल देवदत, नाग धनञ्जय जाँच ।।७६।।

।। उप प्राणों के कार्य ।।

चक्षु पालक कूर्म सदा, पलकें पलटे काम ।
कृकिल रहत है घ्राण में, छींक श्वास का धाम ।।७७।।
देवदत्त तालव में रहे, जम्हाई का काम ।
नाग ह्रदय बिच बसत है, डकार लेत आराम ।।७८।।
धनञ्जय सर्व शरीर में, पुष्टि वर्द्धन के नाम ।
मृतक देह फुलावता, तीन दिवस विश्राम ।।७९।।

।। चार अन्त:करण ।।

मन बुद्धि चित अहँकार है, अँत:करण यह चार ।
सात्विक सृष्टि कुटस्थ सँग, रामप्रकाश विचार ।।८०।।

।। मन,बुवि अंत:करण ।।

मन सँकल्प विकल्प करे, कुटस्थ सहित चिदाभास ।
बुद्धि चित अहँकार यह, रामप्रकाश के खास ।।८१।।

।। चित अंत:करण ।।

चित चितवन चिन्ता करे, बुद्धि बोध प्रकाश ।
अहँकार अहँ को भरे, यामे रामप्रकाश ।।८२।।

।। अहंकार अंत:करण।।

कारण शरीर अज्ञान है, यही तत्व अज्ञान ।
सुक्ष्म और स्थूल को, प्रपँच कारण पहिचान ।।८३।।

।। तीन अवस्था का वर्णन ।।

जाग्रत स्वपन सुषोप्ति, तीन अवस्था जाण ।
जीव योनी पावत भले, कर्म भोगते आण ।।८४।।

।। जाग्रत अवस्था का वर्णन ।।

कुल बयांलिस तत्व जो, ईश्वर रचित जग जोय ।
जामे यह वर्तित रहे, जाग्रत कहिये सोय ।।८५।।
ज्ञान कर्मेन्द्रिय पँचक युग, अंत:करण सँग देव ।
विषय सहित चौदह गुणा, तत्व बयालिस भेव ।।८६।।
अध्यात्म इन्द्रिय गनों, अधिदेव सो देव ।
अधिभूत विषय लखो, ज्ञान कर्मेन्द्रिय भेव ।।८७।।
पांच ज्ञान्द्रिय के लखो, पांच कर्मेन्द्रिया जान ।
चार अंत:करण के लखो, देव विषय युत आन ।।८८।।

।। जाग्रत अवस्था विषे जीव का स्थान ।।

विश्व जीव चक्षु बसे, स्थूल रजोगुण भोग ।
क्रिया शक्ति रव वैखरी, चर्मदृष्टि कह लोग ।।८९।।
कर्मेन्द्रिय ज्ञानेन्द्रिय दश, चार अन्त:करण जान ।
याके चतुर्दश देवता, इतने विषय प्रमान ।।९०।।
जाग्रत स्वप्न सुषोप्ति, यथा नाम तस काम ।
समय समय पलटत रहे, दोय करे आराम ।।९१।।
एक रहे दो न रहे तब, जाग्रत स्वपन को जान ।
स्वपन सुषोप्ति जानिये, इस विध याको काम ।।९२।।

।। स्वपन अवस्था का वर्णन ।।

देखे सुने किये घने, सँकल्प जनित सँस्कार ।
हिता नाड़ी है कण्ठगत, भोगत रहे विचार ।।९३।।
हिता नाड़ीगत चित्र सब, बँयालिस तत्व विचार ।
रामप्रकाश वह स्वपन गत, जीव रचित सँसार ।।९४।।

।। स्वपन अवस्था विषै जीव का स्थान ।।

स्वप्न कण्ठ तेज सब से, सतोगुण शक्ति ज्ञान ।
सुक्ष्म भोग दिव्य दृष्टि मे, रामप्रकाश पहिचान ।।९५।।
वाणी कण्ठ गत मध्यमा, स्वप्न अवस्था सार ।
अध्यात्म दर्शन पढो, रामप्रकाश विस्तार ।।९६।।

।। सुषुप्ति अवस्था का वर्णन ।।

।। सुषुप्ति अवस्था विषै जीव का स्थान ।।

सुषुप्ति प्राज्ञ हृदय, द्रव्य, शक्ति आनन्द भोग ।
तमोगुण की प्रधानता, जानत विद्वत लोग ।।९७।।
जाग्रत स्वप्न सुषोप्ति, तीनो तुरीय रूप ।
तुरयातीत तीनो लखे, साक्षी आतम अनूप ।।९८।।
तुरीय को तुरीय लखे, सोई तुरीय अतीत ।
साक्षी रामप्रकाश है, ज्ञानी लखे मन जीत ।।९९।।
सुषोप्ति में अज्ञान की, प्राज्ञ अवस्था जान ।
कोश आनन्दमय यह बने, जीव प्रक्रिया मान ।।१००।।

।। पाँचकोश का वर्णन ।।

।। कोश की परिभाषा ।।

कोश खजाना ढकन कह, म्यान पर्दा तलवार ।
आतम को ढकता यही, आवर्ण पूरा ढार ।।१०१।।

।। पाँच कोश के नाम ।।

अन्नमय मनोमय प्राणमय, विज्ञान आनन्दमय जोय ।
पाँच कोश याको कहै, आतम आच्छादित होय ।।१०२।।

।। अन्नमय कोश ।।

मात तात अन्न खाय के, शक्ति उपजे काम ।
ताते तनय जन्म ते, पृथ्वी रूप तमाम ।।१०३।।
जब तक प्राणी जीवते, तब तक भू फल खाय ।
अन्न घास फल रस भखे, रामप्रकाश सुख पाय ।।१०४।।
अन्तिम समय वह भूमि तल, गल बले जले तोय ।
भू उपजे भूमि रहे, भूमि समाधिस्थ होय ।।१०५।।
याते अन्नमय कोश यह, प्रथम ढकन रूप ।
स्थूल शरीर यामे रहे, रामप्रकाश कह गूप ।।१०६।।
जड़ भुमि वत देह में, जीव भरे अज्ञान ।
धनवान कुलवान हो, वृथा करे अभिमान ।।१०७।।
त्वचा मांस रुधिर लखो, मेद मज्जा के साथ ।
अस्थि कोशिका अन्नमय, मात पिता के हाथ ।।१०८।।
अन्न प्राण मय कोश दो, रहे स्थूल तन बीच ।
यह निर्णय अचूक है, रामप्रकाश कह खींच ।।१०९।।
मात पिता अन्न खावते, ताते उत्पन शरीर ।
जीवित भूमि रस पावते, अनमय कोश भू सीर ।।११०।।

स्थूल शरीर है अनमय, रहता प्राण आधार ।
सुक्ष्म सहायक देह सो, कोश अनमय धार ।।१११।।
प्राण ब्रह्म मय चित है, चेतन करे स्थूल ।
ताते है अन्न प्राण ते, देह प्रक्रिया झूल ।।११२।।
प्राण बिना तन नार हे, उपनिषद प्रसंग ।
ज्ञानी सतगुरु ने कहा, यही विवेक सतसंग ।।११३।।

।। प्राणमय कोश ।।

पँच प्राण पँच कर्मेन्द्रिय, मिले प्राणमय कोश ।
समूह सामग्री के मिले, रामप्रकाश लख ठोस ।।११४।।

।। विज्ञानमय कोश ।।

पाँच ज्ञानेंद्रिया बुद्धि मिल, कहा विज्ञानमय म्यान ।
ढकत आत्मानंद को, रामप्रकाश पहिचान ।।११५।।

।। मनोमय कोश ।।

पाँच ज्ञानेंद्रिया देव युत, मन मिल मनोमय जान ।
कुटस्थ ढके चिदाभास को, चित के भ्रम भुलान ।।११६।।
जाग्रत स्वप्न मे तीन ही, प्राण मनो विज्ञान ।
रहत कोश अज्ञान वृत, रामप्रकाश कहै जान ।।११७।।

।। आनन्दमय कोश ।।

प्रिय मोद प्रमोद युत, मिले सुषोप्ति आय ।
कोश आनन्दमय होत है, सुक्ष्मतम अज्ञ कहाय ।।११८।।

।। तीन प्रकार की वृत्ति ।।

।। प्रिय वृत्ति ।।

इष्ठ वस्तु के दर्शन ते, जो होवे सुख भास ।
सो आनन्द की वृत्ति में, "प्रिय" कहत सुख खास ।।११९।।

।। मोद वृत्ति ।।

इष्ठ वस्तु के प्राप्ति जन्य, जो सुख हो प्रतिभास ।
सो वृत्ति आनन्द की, " मोद " कहत है खास ।।१२०।।

।। प्रमोद वृत्ति ।।

इष्ठ वस्तु के भोग जन्य, जो आनन्द अनुकूल ।
सो वृत्ति "प्रमोद" है, कृतिम सुख का मूल ।।१२१।।
दर्शन जन्य प्रिय है, प्राप्ति जन्य सुख मोद ।
भोग जन्य आनन्द वृत्ति, सो कहिये प्रमोद ।।१२२।।
कोश आनन्दमय वृत्ति यही, प्रिय मोद प्रमोद ।
सुख आभासित तीन में, कृतिम अकृतिम ओद ।।१२३।।

आनन्दकोश अज्ञान मय, आवर्ण आत्म को ढाप ।
याते कृतिम कल्पित यह, भिन्न आनन्द स्वयँ आप ।।१२४।।
आतम कुटस्थ ढाप्यो रहे, पँच कोश न के माहि ।
सन्त उपनिषद वेदान्त कह, रामप्रकाश दरसाहि ।।१२५।।

।। चार आकाश का वर्णन ।।

मठाकाश घटाकाश रु, जलाकाश महाकाश ।
बाहिर भीतर दृष्टान्त यह, लखता रामप्रकाश ।।१२६।।

।। घटाकाश वर्णन ।।

देह घट मे नभवत रहे, बर्तन माहि होय ।
घटाकाश ताको कहै, पोल घोल के जोय ।।१२७।।

।। मठाकाश वर्णन ।।

भवन गृह मठ बीच मे, जो भासत है पोल ।
वही ब्रह्मांड के बीच में, मठाकाश वह तोल ।।१२८।।

।। जलाकाश व महाकाश वर्णन ।।

जल तरलता मे दिखे, जलाकाश सो जाण ।
अन्तःकरण मे जो बसे, ताकी करो पिछाण ।।१२९।।
स्थूल शरीर मठाकाश है, शूक्ष्म है घटाकाश ।
कारण कुटस्थ जलाकाश है, व्यापक चित महाकाश ।।१३०।।
महाकाश में तीनही, बने विभाजित अंग ।
बने समावे यही में, व्यापक एक अभंग ।।१३१।।

।। जीव के तीन देश ।।

चक्षु कण्ठ ह्रदय बसे, तीन जीव के देश ।
विश्व तेजस प्राज्ञ लखो, पलटत रहते भेश ।।१३२।।
व्यक्ति जैसे किसान हो, वही पुलिस मे होय ।
काला कोट वकील हो, देश काल वत जोय ।।१३३।।

।। जीव के तीन काल ।।

भूत भविष्य वर्तमान यह, तीन जीव के काल ।
स्थूल शूक्ष्म कारण, वस्तु तीन प्रतिपाल ।।१३४।।

।। जीव के आठ धर्म ।।

अल्पज्ञ शक्ति अल्प, परिछिन्न नाना पराधीन ।
असमर्थ अविद्या अपरोक्ष यह, जीव अष्ठ धर्म चीन ।।१३५।।

।। अष्ट पुरी का कथन ।।

पँचक १प्राण २युग इन्द्रिय के, १अन्तिःकरण १अज्ञान ।
युग २कर्म सँग १ वासना, अष्टपुरी यह जान ।।१३६।।

ज्ञानेंद्रिया रु कर्मेन्द्रिया, प्राण पँचक अज्ञान।
अन्तःकरण मिल पाँच ही, अष्टपुरी सामान ।।१३७।।
प्राकृतिक अवस्तु पाँच में, मिले जीव कृत तीन।
जन्म मरण कारण यही, अष्ठपुरी उर चीन।।१३८।।
अगनित जन्म से पूर्वके, सँचित कर्म अनन्त।
अष्टपुरी सँग ले चले, सुक्ष्म तन जीव जन्त ।।१३९।।
कर्म आगामी जीव के, क्रियमाण जो होय।
अष्टपुरी तन सुक्ष्म में, अष्टपुरी सँग जोय ।।१४०।।
अनन्त जन्म की वासना, रही अन्तस्थ अनन्त।
दोनों कर्म सँग में चले, अष्टये पुरी बसन्त ।।१४१।।
सँचित जन्म अनेक के, क्रियमाण जो होय।
जीव वासना सहित कर, तीन - पाँच पुरी जोय।।१४२।।
सँचित कर्म के ब्याज में, प्रारब्ध बने अनन्त ।
उतम मध्यम कनिष्ठ की, योनि जीव भोगन्त ।।१४३।।
सत्रह तत्व देह सुक्ष्म के, चिदाभास अधिष्ठान।
जीव सामग्री यह मिले, रामप्रकाश ले जान ।।१४४।।
लोकालोक भ्रमण करे, कर्म वासना सँग।
अज्ञान साथ सब भोगता, भव त्रास के रँग ।।१४५।।

।। चौदह लोक ।।

चौदह लोक आवागमन, पाप पूण्य फल भोग।
आतम ज्ञान बिन भ्रमता, लख चौरासी में लोग।।१४६।।

।। ऊपर के सात लोक ।।

भु भुव स्व मह ऊपर में, जन तप सत के लोक ।
पुण्यार्जन से पावते, प्राणी तजते शोक ।।१४७।।

।। नीचे के सात लोक ।।

अतल वितल रु सुतल तल, रसा महातल पाताल।
पापी तापी कष्ट में, आवागमन की चाल ।।१४८।।
ब्रह्म ज्ञानामृत जो मिले, सतगुरू भाग सँयोग।
आवागमन भ्रमण मिटे, विरले पावत लोग।।१४९।।

।। वाच्यार्थ का त्याग एवं लक्ष्यार्थ का ग्रहण।।

अविद्या त्रिगुण अन्तःकरण, कुटस्थ प्रतिबिम्ब जीव।
चिदाभास भोगत लखो, वाच्यार्थ त्याग लख पीव।।१५०।।
देह अवस्था कोश अन्त, वस्तु देश गुण काल।
चिदाभास के जीव को, वाच्यार्थ तज जाल।।१५१।।

भाग त्याग लक्षणा करो, वाच्यार्थ को त्याग।
जान तुरीय चित कुटस्थ को, तत्व चेतन में लाग ।।१५२।।
अंतःकरण में बसत है, चिदाभास आधार ।
चिदाभास में कूटस्थ चित, ब्रह्म अधिष्ठान विचार ।।१५३।।

।। ततपद का विवेचन प्रारम्भ ।।

।। ईश्वर का वाच्यार्थ ।।

वैराटादिक त्रय देह रु, देश काल धर्मादि।
कोश अवस्था धर्म ये, ईश वाच्यार्थ त्यादि ।।१५४।।
ततपद सामग्री ईश की, देश कालादिक जान।
सामग्री वाच्यार्थ यही, त्याग लक्ष्यार्थ मान ।।१५५।।

।। ईश्वर के तीन शरीर का वर्णन ।।

नाना नदी बहु वृक्ष ये, समष्टि शब्द में खास।
सिन्धु वन उद्यान यह, व्यष्ठी रामप्रकाश ।।१५६।।
जीव बहुत समष्टि अहे, ईश्वर व्यष्टि है एक ।
याही विधिकर समझिय, रामप्रकाश विवेक ।।१५७।।
जैसे वृक्ष के डाल फल, पते तने गुण फूल।
एक बीज में सब मिले, जीव ईश में झूल ।।१५८।।
तीन शरीर मिल जीव के, कारण सुक्ष्म स्थूल।
याते ईश्वर तन तीन हो, वैराटादि मत भूल ।।१५९।।
नदियाँ नाना मल भरी, सागर मिलती जाय।
सिन्धु जल अथाह मे, मिलते पावन थाय ।।१६०।।
ऐसे अल्पज्ञ जीव सब, असमर्थ अज्ञान भण्डार।
सिन्धु अपार रवि किरण में, रहे नही अन्धकार ।।१६१।।
प्रपँचमय सँसार का, पृकृति करे सँचार ।
पृकृति नियन्ता है वही, अधिष्ठान आधार ।।१६२।।
माया विशिष्ट ईश्वर कहा, सो कुटस्थ आधार।
ब्रह्म नही पर ब्रह्म सम, स्वभाविक सँचार ।।१६३।।
समष्टि जीव सृष्टी मिले, समग्र त्रिपूटी समान।
व्यष्टि सृष्टी ईश की, रामप्रकाश पहिचान ।।१६४।।
इक धागे में है घने, मन के पिरोये अनन्त।
ऐसे सृष्टि जीव की, व्यष्टि में समष्टि मिलन्त ।।१६५।।

।। ईश्वर का वैराट शरीर ।।

जीव सृष्टि समस्त तन, स्थूल मिले वैराट ।
ईश्वर का तन जानिए, रामप्रकाश जग ठाट ।।१६६।।
जीव समष्टि के देह सो, सामग्री सहित स्थूल ।
सो ईश्वर का व्यष्टि लख, वैराट शरीर मत भूल ।।१६७।।

।। ईश्वर का हिरण्यगर्भ शरीर ।।

समस्त जीव तन सुक्ष्म मिल, हिरण्यगर्भ हो ईश ।
विश्व की समष्टि वस्तु से, व्यष्टि ईश्वर वरीश ।।१६८।।
समष्टि जीवन सुक्ष्म तन, सामग्री सहित मिलान ।
तब व्यष्टि हो ईश का, हिरण्यगर्भ तन जान ।।१६९।।

।। ईश्वर का आव्यकृत शरीर।।

कारण शरीर सब जीव के, समष्टि मिले अज्ञान ।
आव्यकृत व्यष्टि बने, तब ईश्वर का मान ।।१७०।।
समस्त कारण तन जीव के, मिले आव्यकृत एक ।
ईश्वर का तन होत है, व्यष्टि जान विवेक ।।१७१।।
रवि पावक सुरसरि समा, सिन्धुवत समर्थ ईश ।
अज्ञ अपावन समष्टि सो, मिलते पावन थीस ।।१७२।।

।। ईश्वर के देश कालादिक का वर्णन ।।

माया ईश्वर का देश है, उत्पतियादिक त्रय काल ।
रजो सतो तमो गुण त्रय, वस्तु सामग्री टकशाल ।।१७३।।

।। ईश्वर की जाग्रत अवस्था ।।

समस्त विश्व के जीव की, जाग्रत अवस्था मान ।
अभिमानी व्यष्टि ईश की, उत्पति अवस्था जान ।।१७४।।

।। ईश्वर की स्वपन अवस्था ।।

समस्त जीव तेजस मिले, स्वपन अवस्था आन ।
व्यष्टि ईश्वर की अवस्था, स्थिति करके जान ।।१७५।।

।। ईश्वर की सुषुप्ति अवस्था ।।

समस्त जीव प्राज्ञ मिले, सुषुप्ति अवस्था आय ।
तब ईश्वर की व्यष्टि हो, प्रलय अवस्था पाय ।।१७६।।

।। ईश्वर की तुरीय अवस्था ।।

तीनों जीवों के जीव मिल, तुरीय साक्षी अधिष्ठान ।
तुरीयातीत साक्षी वही, ईश्वर कुटस्थ बखान ।।१७७।।

।। ईश्वर के पांच कोशों का वर्णन ।।

।। ईश्वर का अन्नमयकोश ।।

समष्टि जीव जग अन्नमय, प्राण मिले जब कोश।
ईश्वर के तब ही बने, वैराट अन्नमय घोष ।।१७८।।
समष्टि स्थूल अनमय, कोश प्राण मिल जाय।
व्यष्टि अन्नमय ईश का, रामप्रकाश दरसाय ।।१७९।।

।। ईश्वर का प्राणमय कोश ।।

ज्ञानेन्द्रीय के देव सब, मिले जीवन के प्राण।
ईश्वर का व्यष्टि कोश वह, प्राणमय कर जाण ।।१८०।।
समष्टि सुक्ष्म देह मय, प्राण कर्मेन्द्रिय आय।
व्यष्टि प्राणमय ईश का, कोश यही कहलाय ।।१८१।।

।। ईश्वर का मनोमय कोश ।।

कर्मेन्द्रिय पँच प्राण मन, मिले जीव सब आय।
कोश मनोमय ईश का, समष्टि व्यष्टि समझाय ।।१८२।।
समष्टि सुक्ष्म देह सँग, देव ज्ञानेंद्रीय दीश।
मन देव यूत व्यष्टि से, कोश मनोमय ईश ।।१८३।।

।। ईश्वर का विज्ञानमय कोश ।।

ज्ञानेन्द्रिय पँच बुद्धि मिल, समष्टि जीव की आण।
कोश विज्ञानमय ईश का, व्यष्टि ज्ञान भुगताण ।।१८४।।
समष्टि सुक्ष्म ज्ञानेंद्रिय के, सँग बुद्धि युत देव।
व्यष्टि विज्ञानमय कोश है, ईश्वर उपाधि सेव ।।१८५।।

।। ईश्वर का आनन्दमय कोश ।।

सुषोप्ति गत आनन्द सभी, प्रत्यगात्म अज्ञान।
मिले ईश आनन्दमय, कोश व्यष्टि पहिचान ।।१८६।।
समष्टि कारण अज्ञानमय, आनन्द वृत्ति युत जीव।
व्यष्टि ईश आनन्दमय, कोश लखो यह सीव ।।१८७।।

।। ईश्वर के अष्ट धर्म ।।

सर्वज्ञ समर्थ सर्व शक्ति, व्यापक एक अपरोक्ष।
माया उपाधि स्वाधीनता, धर्म ईश अष्ठोक्ष ।।१८८।।
सर्व शक्तियुत सर्वज्ञ, सामर्थ व्यापक एक।
अपरोक्ष माया उपाधि से, स्वाधीन धर्म विवेक ।।१८९।।
आठ धर्म यह ईश के, जीव सृष्टि समान।
मलीन रज तम को तजो, धरो सतोगुण ध्यान ।।१९०।।

।। ईश्वर के षट् भग ।।

समष्टि धर्म वैराग्य यश, ऐश्वर्य श्रीयुत ज्ञान ।
षट् भाग्य भगवान के, व्यष्टि होय प्रधान ।।१९१।।
समष्टि ज्ञान अज्ञान को, जन्म मरण गुण ज्ञान ।
विद्या अविद्या को लखे, वही संत भगवान ।।१९२।।
समष्टि ऐश्वर्य स्मृति यश, वीर्य सौम्यता ज्ञान ।
षट गुन धारण के किये, समर्थ सो भगवान ।।१९३।।
प्रकृति नियन्ता वशित्व, सञ्चालक अधिष्ठान ।
ऐश्वर्य धारक ईश्वर वही, रामप्रकाश प्रधान ।।१९४।।

टिप्पणी-यह "भग" धातु से बना है ,भग के ६ अर्थ है :- १-ऐश्वर्य २-वीर्य ३-स्मृति ४-यश ५-ज्ञान और ६-सौम्यता जिसके पास यह ६ गुण है वह भगवान है ।

।। भगवान शब्द का अक्षरार्थ ।।

भ भूमि ग गगन युत, व से वायु मिलान ।
अ अग्नि नीर से, पाँच तत्व भगवान ।।१९५।।

।। ईश्वर का वाच्यार्थ ।।

तीन अवस्था तीन तन, धर्म देश वर काल ।
पँच कोशादिक ईश के, वाच्यार्थ द्दष्ट भाल ।।१९६।।

।। ईश्वर की व्यष्टि व समष्टि ।।

जीव तीन, षट् ईश गुण, विमुख रहे छतीस ।
सम्मुख तत्व निष्ट जो रहे, सोई ब्रह्म सम ईश ।।१९७।।
समष्टि सामग्री जीव की, मिले भिले सँग आय ।
व्यष्टि होवे ईश की, मिले भिले सँग जाय ।।१९८।।
सर्व सामग्री समष्टि है, जीव विश्वकृत जाण ।
व्यष्टि होवे इक ईश की, शास्त्र कहत प्रमाण ।।१९९।।
सर्व प्राज्ञमय सुषोप्ति, अन्तर्यामी मय एक ।
समष्टि उपाधि जीव से, व्यष्टि ईश की नेक ।।२००।।
माया विशिष्ट कुटस्थ में, चेतन ईश्वर रूप ।
ब्रह्माश्रित पृकृति बने, अधिष्ठान व्यष्टि अनूप ।।२०१।।
व्यष्टि में समष्टि रहे, शुद्ध सतोगुणी जान ।
माया के इस भाग से, वस्तु रूप पिछान ।।२०२।।
उत्पति स्तिथि प्रलय करे, काल काम यह होय ।
रज तम सत की वस्तु से, विश्व रचावे सोय ।।२०३।।
शुद्ध सतो माया प्रेरणा, माया ब्रह्म प्रतिबिम्ब ।
वैराटादि त्रय अवस्था, वाच्यार्थ मिथ्या बिम्ब ।।२०४।।

वाच्यार्थ सामग्री यह, मिथ्या मायिक प्रपँच।
वाच्यार्थ दोनो तजो, जीव ईश के मँच ।।२०५।।
भाग त्याग लक्षणा करो, वाच्यार्थ कर त्याग।
कुटस्थ शुद्ध अधिष्ठान सो, चेतन लक्षार्थ से राग ।।२०६।।
अकर्ता सो अभोक्ता, माया प्रकाशक जान ।
माया लाग अलाग हो, अलोगत साक्षी भान ।।२०७।।
माया सँचालक विशिष्ट वह, पिण्ड ब्रह्मण्ड परमाण।
न्यायाधीश सब जीव के, फल कर्म प्रमाण ।।२०८।।
महतत्व माया सतोगुणी, रजो अविद्या रूप ।
पृकृति तमो शक्ति क्रिया, न्यूनतम कर्म अनूप ।।२०९।।
अस्ति भांति प्रिय जीव के, जीव विशेषण जाण।
सत चित आनन्द ब्रह्म के, वाच्य बिन प्रमाण ।।२१०।।
अविद्या उपहित जीव के, कार्य वाच्यार्थ त्याग।
माया सहित वाच्य तजो, ईश भजो अनुलाग ।।२११।।
चिदाभाश चिदाकाश रु, कुटस्थ रु मठाकाश।
विचार सहित महाकाश में, निष्ठा एकता खास ।।२१२।।
घटाकाश जीव उपाधि सो, मठाकाश सो ईश।
मिला दोनो आकाश को, महाकाश महा ईश ।।२१३।।
प्रज्ञानमानन्द एतरेय सो, उपनिषद ऋग्वेद।
अहंब्रह्मास्मि वृहदारण्य, उपनिषद यजुवेद ।।२१४।।
तत्वमसि छान्दोग्य सो, उपनिषद है शाम ।
अयमात्म माण्डूक्य सो, उपनिषद अथर नाम ।।२१५।।
चार महावाक्य वेद गम, उपनिषद को ज्ञान ।
वेद भेद गुरु गम लखो, अर्थ युक्ति कर जान ।।२१६।।
महावाक्य चारों कहै, एक भाव परमान।
हम ही ब्रह्म स्वरूप हैं, भिन्नाभिन्न न आन ।।२१७।।
माया उपाधि त्रिगुण की, अपरा अयथार्थ भेद ।
ब्रह्म सत्य यथार्थ लखो, प्रमा परम अभेद ।।२१८।।
ओम जीव रु ईश की, मात्रा चार विचार।
त्रय तजो अन्तिम भजो, गुरू मुख भेद निहार ।।२१९।।
अकार उकार मकार त्रय, अर्धबिंदु आधार।
विश्व तेजस प्राज्ञ त्रय, साक्षी कुटस्थ निहार ।।२२०।।
वैराटादि त्रय ईश के, अधिष्ठ चेतन जाण।
प्रथम तीन तज तीन के, चतुर्थ तत्व प्रमाण ।।२२१।।

निर्गुण उपासना इमि करो, भाग त्याग लख सार।
तीनों के नौ भाग तज, अन्तिम साक्षी इकसार ।।२२२।।
अवान्तर वाक्य सब तजो, महावाक्य लक्ष छाण।
सतगुरू ज्ञानी जब मिले, तब होवे भ्रम हाण ।।२२३।।
वाच्यार्थ त्वंपद जीव के, ततपद ईश के जोय।
वाच्यार्थ दोउ तजो, लक्ष्यार्थ तत होय ।।२२४।।
जीव ईश्वर वाच्यार्थ तजो, गहो लक्ष्यार्थ जान।
लक्ष्य दोनों के मिले, तत्व लेवो पहिचान ।।२२५।।
लक्ष्यार्थ जीव रु ईश के, करो एकता जान।
वाच्यार्थ प्रपँच को, मृषा देख तज मान ।।२२६।।
लक्ष्यार्थ त्वंपद जीव के, ततपद ईश के तोड़।
दोऊ लक्ष्यार्थ जब मिले, स्व स्वरूप में जोड़ ।।२२७।।
आप ही लक्ष्य एकात्मा, ब्रह्मानंद स्वरूप।
रामप्रकाश सत चित तूँ हि, परमानन्द अनूप ।।२२८।।
जीव ईश्वर के लक्ष को, मिला लक्ष्य अधिष्ठान।
भव भय द्वन्द कछु ना रहे, रहे नही अज्ञान ।।२२९।।
द्वैत गल्या अद्वैत में, अद्वय आप भरपूर।
सतचिदानंद स्वयँ आप ही, व्यापक नूर हजूर ।।२३०।।
जीव ईश्वर जग कल्पना, कल्पित दृश्य दूर।
निर्द्वन्द्व मे निर्भय सदा, सर्वदा निज भरपूर ।।२३१।।
जब तक मन में कल्पना, निश्चय नही स्वरूप।
तब तक यह भव जाल है, जानत ही भव चूप ।।२३२।।
पाला गलि जल ही भयो, भूना अन्नकण समान।
जहाँ से भूला ताँ भया, आप माँहि गलतान ।।२३३।।
निर्गुण सर्गुण द्वैत में, एक तत्व अधिष्ठान ।
रामप्रकाश स्वयँ आप है, ज्योतिर्मान विद्यमान ।।२३४।।
हम रु तुम मै तूँ नही, नाम रूप लय होय।
ओला गलि जल ही भया, रामप्रकाश है सोय ।।२३५।।
जीवेश्वर के निर्णय में, समस्त सामग्री का बोध।
श्रवणादिक साधन करे, शोधन यही प्रबोध ।।२३६।।
साधन जिज्ञासु तीन है, मुमुक्षु वैराग विवेक ।
तीन ही साधन ज्ञान के, मनन श्रवणादि नेक ।।२३७।।
साक्षात्कार जबही भयो, साधन प्रयोजन पाय।
गन्तव्य स्थान गत, पद त्राण सब नाय ।।२३८।।

साक्षात्कार साधन नही, ज्ञेय ध्येयाकार ।
लक्ष्य जब पूरा भया, खरिया खूटी धार ।।२३९।।
षट् सम्पति जां मिले, विवेक सँग वैराग ।
मुमुक्षा बिन है व्यर्थ सब, समझे सो बड़भाग ।।२४०।।
मुमुक्षा सहित मुमुक्षू चले, गुरू समीप में जाय ।
समर्पित युत प्रणीपात हो, सतगुरू ज्ञान समझाय ।।२४१।।
साधन सतसँग श्रद्धायुत, करे प्रक्रिया बोध ।
शास्त्र विधि साधन करे, प्रमा परम प्रबोध ।।२४२।।
सतगुरू उतम प्रसाद ते, पाया उतम प्रसाद ।
उतम रामप्रकाश वो, सोई राघव प्रसाद ।।२४३।।
सतगुरू उतमराम जी, श्री वैष्णव अभिराम ।
रामप्रकाश निज नाम है, राघवप्रसाद उपनाम ।।२४४।।

।। इतिश्री रामप्रकाश वेदान्त दोहावली अन्तर्गत चतुर्थ वल्ली समाप्त ।।

श्री रामप्रकाश वेदान्त दोहावली

पञ्चम वल्ली प्रारम्भ

।। वेद के तीन काण्ड ।।

कर्मकाण्ड निष्काम से, कटे अन्तस्थ मल दोष ।
उपासना निष्कामता, होय विक्षेप निर्दोष ।।१।।
वेद ज्ञान जल सिन्धु सम, कटुता गहर गम्भीर ।
गुरू मुख घन वर्षे यदि, वचन सुधामृत सीर ।।२।।

।। ग्रन्थ में चार दोष एंव निृवति उपाय ।।

याते साधन अनुबन्ध युत, सतगुरू सानिध्य पाय ।
साधन भाव प्रणीपात ले, पढ सानिध्य चित लाय ।।३।।
चार दोष ग्रन्थ साहित्य में, गुरू बिन निवृत्त नाहि ।
याते ज्ञानी सतगुरू, भ्रम मिटावत ताहि ।।४।।
भेदवादी सँग व्यशन रत, मल विक्षेप युत पाठ ।
श्रुति नानात्व के पढे, भ्रम निवृति नही आठ ।।५।।
पढ प्रक्रिया ज्ञानी घने, हो अदृढ अपरोक्ष ।
कर्म उपासना के किये, होय सु ज्ञान परोक्ष ।।६।।
शास्त्र ज्ञान मन मुखी पढे, वाचक अदृढ अजान ।
चार ग्रन्थ के दोष को, समझे निवृति मान ।।७।।
कर्णापाटव इन्द्रिय गत, भ्रम प्रमाद रु लोभ ।
लेखन टँकण व्याख्यान में, होवत करे विक्षोभ ।।८।।
सत चित आनन्द ब्रह्म बिच, किञ्चित होय सँदेह ।
सँशय युग मन में रहे, अदृढ अपरोक्ष में एह ।।९।।
नाम गौत्र कुल जाति के, वर्ण आश्रम जग रीत ।
ऐषणा मन भ्रम आठ यह, दृढ अपरोक्ष ते जीत ।।१०।।

।। दृढ अपरोक्ष ब्रह्मज्ञान एवँ प्रयोजन ।।

साधन सतसँग शास्त्र सें, श्रद्धा सतगुरू पाय ।
ब्रह्म चिन्तन हरदम करे, दृढ अपरोक्ष उर आय ।।११।।
अन्त:करण त्रय दोष बिन, साधन सन्तन सँग ।
सतगुरू कृपा से लखे, आतम रूप अभँग ।।१२।।
दृढ अपरोक्ष ब्रह्मज्ञान से, पाँच प्रयोजन सिद्ध ।
जीवन नित्य आनन्द मय, सर्व दोष निषिद्ध ।।१३।।

सर्व दुखन कि निवृतिं, प्राप्ति परमानन्द ।
ज्ञान रक्षा विसँवादाभाव रु, तपोमय हो निष्फन्द ।।१४।।
पाँच प्रयोजन सिद्ध हो, पूरे हो अनुबन्ध ।
तब जीवन की सफलता, आनन्दमय निर्बन्ध ।।१५।।

।। षट् लिंग (अँग) कथन ।।

६फल ३.अपूर्वता ५.उपपति, ४.अर्थवाद २.अभ्यास ।
१.उपक्रम उपसँहार ये, षट्लिंग रामप्रकाश ।।१६।।
ग्रन्थ विषय व्याख्यान रु, तात्पर्य वाक्य वेदान्त ।
वेद निश्चय षट लिंग यह, रामप्रकाश सिद्धांत ।।१७।।

।। उपक्रम उपसँहार लिंग ।।

आदि विषय अन्त में घटे, एक रूपता ज्ञान ।
१.उपक्रम उपसँहार ये, रामप्रकाश अँग मान ।।१८।।

।। अभ्यास लिंग ।।

वार वार कोई विषय का, कथन शब्दात्म होय ।
अँग २.अभ्यास लिंग शास्त्र कह, रामप्रकाश सिद्ध जोय ।।१९।।

।। अपूर्वता लिंग ।।

कहीं अलोकिक विषय का, युक्ति अनुभव युत होय ।
लिंग ३.अपूवयता यों बने, रामप्रकाश गुण जोय ।।२०।।

।। अर्थवाद लिंग ।।

खण्डन मण्डन फल श्रुति, निन्दा स्तुति कह जाहि ।
४.अर्थवाद लिंग यों बने, रामप्रकाश दरसाहि ।।२१।।

।। उपपति लिंग ।।

अनुकूलित दृष्टान्त दे, कहै सिद्धांत अनूप ।
५.उपपति लिंग यह शास्त्र का, रामप्रकाश चिद् रूप ।।२२।।

।। प्रयोजन लिंग ।।

शास्त्र वस्तु विषय का, लक्ष्य उद्देश्य जोय ।
मुख्य ६.प्रयोजन लिंग यह, रामप्रकाश ६.फल होय ।।२३।।
षट्लिंग हो जिन शास्त्र में, पूर्ण ग्रन्थ प्रमाण ।
वाक्य वेदान्त सिद्धांत मे, उपयुक्त पूर्ण वह जाण ।।२४।।

।। तीन सम्बन्ध ।।

।। सजातीय सम्बन्ध ।।

जन्म जाति धर्म एक हो, मानव बकरी गाय ।
यही सजातीय सम्बन्ध है, शास्त्र कहै समझाय ।।२५।।

जाति वाचक सँज्ञा लखो, घोड़ा गधा गाय ।
मानव नारि पुरुष ये, सम्बन्ध सजातीय थाय ।।२६।।

।। विजातीय सम्बन्ध ।।

एक वर्ग से भिन्न लखो, मानव घोड़ा पशुवादि ।
अन्यत वर्ग विजातीय है, कर विवेक तज वादि ।।२७।।

।। स्वगत सम्बन्ध ।।

अपने तन के अँग भिन्न, हाथ चरण पद नाक ।
एक देह में भिन्नता, स्वगत सम्बन्ध विपाक ।।२८।।
सजातीय विजातीय भेद है, स्वगत भेद को चीन ।
रामप्रकाश सत शास्त्र में, सम्बन्ध कहै यह तीन ।।२९।।

।। तीन प्रकार की सता ।।

व्यवहारिक परमार्थ सता, प्रतिभासिक को जान ।
तीन सता विधि कथन में, कर विवेक पहिचान ।।३०।।
व्यवहारिक सता व्यवहार में, परमार्थ सता ब्रह्म ज्ञान ।
प्रतिभासिक भ्रम रूप है, अन्य मे अन्य को जान ।।३१।।

।। पाँच विकारों का गृहवास ।।

।। काम की स्त्री वासना ।।

आशा के सँग काम है, इच्छा वासना मोह ।
यही काम की वाम है, बाधित उपजे कोह ।।३२।।

।। क्रोध की स्त्री जड़ता ।।

जड़ता क्रोध की स्त्री, मुढता सँग में होय ।
बुद्धि नास तब ही बने, रामप्रकाश कह जोय ।।३३।।

।। लोभ की स्त्री तृष्णा ।।

तृष्णा लोभ की वाम है, पुत्र पाप प्रधान ।
आशा मात मन भाव से, यह परिवार सब जान ।।३४।।

।। मोह की स्त्री ममता ।।

ममता मोह की नारि है, त्वँता बेटी जान ।
मात पिता यह जानिये, माया मान अभिमान ।।३५।।

।। अहँकार की स्त्री भ्रमता ।।

मात पिता अभिमान के, ममता मोह अज्ञान ।
भ्रमता स्त्री अहँकार की, विकार परिवार पिछान ।।३६।।

।। शील धर्म (अष्ठ मैथुन) के अँग ।।

काम वासना मन जगे, नारी दर्शन के काम ।
अष्ठ अँग मैथुन कहै, शील अँग लख नाम ।।३७।।

श्रवण सुमिरण कीर्तन, चिन्तन दर्शन अँग।
एकान्त सेवन स्पर्श ते, अष्ठ मैथुन नारि सँग।।३८।।
मैथुन आठ प्रकार से, शम सँयम दम साध।
शील अँग यह जानिये, धारत बुद्धि अगाध।।३९।।

।। भाग त्याग लक्षणा ।।

गँगा ग्राम में वास कह, वाच्यार्थ को त्याग।
लक्ष्यार्थ तट वास है, लक्षणा त्याग रु भाग।।४०।।
वाच्यार्थ शब्दाँश तज, लक्ष्यार्थ को जान।
भाग त्याग लक्षणा कहि, कर विवेक ले मान।।४१।।

।। अष्ट पाँश (पाँसी) फाँस ।।

दया शँका कुल शीलता, भय निन्दा धन जान।
लज्जा युत फाँसी यही, अष्ठ पाँस पहिचान।।४२।।
जग में फाँसी जबर यह, उलझ रहा सँसार।
जन्म मरण हर्ष शोक के, दायक उर व्यवहार।।४३।।

।। षट् उर्मी।।

हर्ष शोक मन धर्म है, प्राण मय भूख प्यास।
जन्म मरण धर्म देह के, षट् उर्मी लख खास।।४४।।
सूक्ष्म तन में रहत है, षटउर्मी का वास।
हेतु स्थूल में प्रकट हो, ज्ञानी समझे खास।।४५।।

।। चार स्पर्श ।।

शीत उष्ण कोमल कठिन, स्पर्श धर्म तन जान।
नरम गरम स्थूल के, शास्त्र कहत परमान।।४६।।

।। तीन वाद ।।

जल्पावाद रु वितण्डा, तृतीय जान सँवाद।
वाच्यार्थ वाणी कहैं, कथन रीति मरियाद।।४७।।

।। जल्पावाद और वितण्डा वाद ।।

जल्पावाद व्यर्थ वदे, वाणी बिना परमान।
वितण्डा वाद कह तर्क युत, कुतर्क करत निदान।।४८।।

।। सँवाद ।।

गुरू शिष्य सँवाद हो, शँका के समाधान।
सो सँवाद पिछानिये, उतम नीति प्रधान।।४९।।

।। तीन प्रकार की निवृति ।।

भ्रमज निवृति रज्जू ज्ञान ते, सहज निवृति स्वभाव।
कर्मज निवृति ज्ञान ते, निवृति तीन लखाव।।५०।।

।। तीन कारण वाद ।।

आरम्भवाद विज्ञान का, माया वाद परिणाम ।
ब्रह्म का विवृतवाद है, युक्ति तीन यह आम ।।५१।।

।। तीन आनन्द ।।

विषयानन्द जग भोग है, भजनानन्द भक्ति जान ।
ब्रह्मानन्द ज्ञानात्मा, आनन्द तीन यह मान ।।५२।।

।। तीन ऐषणा (इच्छाऐ) ।।

सुत इच्छा पुत्रैषणा, वितैषणा धन की चाह ।
लोकैषणा यश कीर्ति में, मान सम्मान की आह ।।५३।।
सुत वित की इच्छा घनी, लोक कीर्ति यश मान ।
मानव की यह वासना, तीन ऐषणा जान ।।५४।।

।। तीन प्रकार के परिच्छेद – देश,काल व वस्तु ।।

स्थान जगह प्रधानता, देश ताहि कहै मान ।
समय स्थिति प्रधानता, काल वस्तु पहिचान ।।५५।।
अविनाशी वस्तु अटल, अवस्तु है नाश ।
अवस्तु जग नाश है, ब्रह्म वस्तु अविनाश ।।५६।।
देश काल की विभिन्नता, घाट रु बाढ विभाग ।
ताहि कहत परिच्छेद है, वस्तु समय का भाग ।।५७।।
देश काल परिच्छेद बिन, आतम ब्रह्म अभेद ।
माया गुण विभाग बिन, सत ब्रह्म अपरिच्छेद ।।५८।।

।। सौलह प्रश्नोतर ।।

प्रश्नोत्तर - ईश्वर

ईश्वर कारण, वास क्या ? हद और स्वरूप ।
ईश्वर परिचय प्रश्न यह, रामप्रकाश अनूप ।।५९।।
माया शुद्ध सतोगुणी, कारण ईश्वर का जान ।
व्यापक ब्रह्मण्ड वास है, ऐश्वर्य प्रधान ।।६०।।
कुटस्थ ब्रह्म हद ईश की, अव्याकृत स्वरूप ।
ईश्वर के सम्बन्ध में, जानो ज्ञान अनूप ।।६१।।

।। प्रश्नोत्तर - जीव ।।

कारण क्या है जीव का, वास हद स्वरूप ।
जीव परिचय दीजिये, रामप्रकाश अनूप ।।६२।।
मलीन सतो अविद्या यही, कारण जीव का जान ।
वास पिण्ड इस देह में, जीव सृष्टि पहिचान ।।६३।।

चिदाभास स्वरूप है, हद तुरिय तक मान ।
रामप्रकाश यह जीव के, निश्चय करो परमान ।।६४।।

।। प्रश्नोत्तर - जगत ।।

कारण जगत का कहो, वास हद स्वरूप ।
जग का परिचय दीजिये, रामप्रकाश यह गूप ।।६५।।
भ्रान्ति अध्यास कारण यही, जगत दृश्य का मान ।
मन बुद्धि में वास है, सँस्कार यह जान ।।६६।।
अव्याकृत हद जगत की, अनिर्वचनीय स्वरूप ।
जगत जाल विचित्र महा, रामप्रकाश अनूप ।।६७।।

।। प्रश्नोत्तर - ज्ञान ।।

कारण ज्ञान का कौन है, स्वरूप और हद वास ।
रामप्रकाश सँदेह को, मेटो मन की त्रास ।।६८।।
ब्रह्मज्ञानी कारण महा, ज्ञान हद कहो वास ।
रामप्रकाश परिचय कहो, ज्ञान सम्बन्धी रास ।।६९।।
ब्रह्म ज्ञानी सतगुरू लखो, कारण ज्ञान का जान ।
वासा पूर्ण अभ्यास में, इच्छा मुक्त हद मान ।।७०।।
स्वयँ ज्ञान स्वरूप है, त्वं वेदोसि ज्ञान ।
यथार्थ तत्व को जानिये, रामप्रकाश पहिचान ।।७१।।
ब्रह्म अनन्त अपार है, सत चित आनन्द आप ।
रामप्रकाश जानत मिटे, द्वँद द्वैत सँताप ।।७२।।
जीव जगत ईश्वर सभी, करे ज्ञान में वास ।
बुद्धि बोध के रूप में, स्वयँ गले रले सुख रास ।।७३।।

।। पाँच सिद्धांत वाद ।।

द्वैत अद्वैत शुद्धाद्वैत है, द्वैताद्वैत अद्वैत ।
विशिष्ठाद्वैत पँचम यही, शास्त्रीय वाद सिद्ध कैत ।।७४।।

।। द्वैतवाद ।।

जीव ईश माया बिना, और नही कछु होय ।
है रहेगो रहत ही, बदले नही कछु जोय ।।७५।।
जीव माया के बिना, रहे नही सँसार ।
कर्ता नियन्ता ईश है, त्रेतवाद कह सार ।।७६।।

।। अद्वैत वाद ।।

जीव अँश है ईश का, ईश ब्रह्म आधार ।
यही वाद अद्वैत है, सत्य ब्रह्म निरधार ।।७७।।

।। शुद्धाद्वैत वाद ।।

जीव ईश कछु है नही, प्राज्ञाभाव शुद्ध एक ।
माया ईश कल्पित सभी, शुद्ध कनक वत नेक ।।७८।।

।। द्वैताद्वैत वाद ।।

अन्योनाभाव वत बदलता, कनक भूषण की भाँति ।
जग में ब्रह्म भासत नही, ब्रह्म में जग है भ्रान्ति ।।७९।।

।। विशिष्टाद्वैत वाद ।।

आदि अन्त में ब्रह्म है, सामयिकाभाव को जान ।
कनक भूषण उपाधि में, परख विवेक पहिचान ।।८०।।
विदयुत धारा तार में, प्रकट बल्ब में होय ।
सामान्य ब्रह्म विशेष है, प्रकट दर्शन जोय ।।८१।।
जल परिपूर्ण पाइप में, प्रकट नल में होय ।
व्यापक दृश्य नाहि है, प्रकट विशेष में जोय ।।८२।।
ओला सो जल से बने, जल कहै नही कोय ।
ओला गलि जल ही भया, नाम उपाधि खोय ।।८३।।
कुटस्थ से चिदाभास है, चिदाभास मन होय ।
मन ही माया रूप है, कर विवेक से जोय ।।८४।।
माया मनकी कल्पना, कल्पित नाना भाति ।
ब्रह्म नही पर ब्रह्मवत, गले उपाधि ख्याति ।।८५।।

।। श्री वैष्णव रामानन्द का सिद्धान्त विशिष्टाद्वैत है, यहीं हमारा है ।।

माया माहि कुटस्थ बसे, कुटस्थ माहि ईश ।
ईश माहि जग यों रहे, पय में घृत महीश ।।८६।।
चिदाभास मन मे बसे, मन कुटस्थ के बीच ।
कुटस्थ में ईश्वर वही, ईश माहि ब्रह्म रीच ।।८७।।
चिदाभास मन में बसे, मन मे माया ईश ।
ईश माहि कुटस्थ है, वही प्रतिभास वरीश ।।८८।।
चिदाभास मन में बसे, मन मे माया आश ।
ईश माहि यों कुटस्थ है, ब्रह्मार्पित प्रतिभास ।।८९।।
कोशादिक की भाँति यह, अन्योन्याश्रित सब होय ।
विवृत प्रपँच भासता, रामप्रकाश ज्ञेय जोय ।।९०।।

।। इतिश्री रामप्रकाश वेदान्त दोहावली अन्तर्गत पंचम वल्ली समाप्त ।।

श्री रामप्रकाश वेदान्त दोहावली

॥ षष्टम वल्ली प्रारम्भ ॥

प्रक्रिया वेदान्त की, परम सुखद भण्डार ।
ज्यों ज्यों चिन्तन चित धरे, रामप्रकाश उजियार ।।१।।
पढे गुने सुन चित धरे, भवसिन्धु हो पार ।
विधिवत अनुबन्ध के लिये, रामप्रकाश उजियार ।।२।।

।। ज्ञान के बाधक ।।

क्रोध लोभ मद ईर्षा, द्वैष तृष्णा अहँकार ।
यह बाधक है ज्ञान में, जाति विद्या धन प्यार ।।३।।
बहिरँग अन्तस्थ के घने, बन्धक मोह प्रभाव ।
साधन सतगुरू प्रबलता, हो प्रतिबन्धकाभाव ।।४।।
ईति सात प्रकार से, देव पृकृति प्रकोप ।
भीति भौतिक अनन्त दुःख, कैसे पावे लोप ।।५।।
अति वृष्टि अनावृष्टि कृमि, विविध रोग उत्पात ।
विद्युत धरा उच्छृलित हो, उल्का जल विख्यात ।।६।।
ईति सात प्रकार से, भीति भोतिक दुःख जान ।
भूत प्रेत विष नृप से, चोर वन्य जंतु मान ।।७।।
अधिदैविक अध्यात्मिक, अधिभोतिक त्रय ताप ।
आधि व्याधि उपाधि के, विविध भांति सँताप ।।८।।
अधि मन दुःख कल्पना, व्याधि तन के रोग ।
कुल परिजन से उपाधि हो, प्राणी ताप को भोग ।।९।।

।। चार प्रकार की कृपा ।।

ईश वेद सतगुरू कृपा, पुनर्पी कृपा जब होय ।
कछुक पावे तब जना, चित शांति अनुभोय ।।१०।।
ईश कृपा नर तन मिल्यो, वेद कृपा बुद्धि शुद्ध ।
गुरू कृपा से ज्ञान व्है, स्वयँ कृपा प्रबुद्ध ।।११।।
चार कृपा सम युक्त हो, पुरुषार्थ के साथ ।
मानव जन्म की सफलता, हरदम अपने हाथ ।।१२।।

।। पाँच प्रकार के सँशय ।।

शब्दात्म रूपात्मा, ध्वन्यात्म पहचान ।
अर्थात्म ज्ञानात्मा, सँशय प्रबल बखान ।।१३।।
साहित्यिक शास्त्र में घने, सँशय पाँच प्रकार ।
ब्रह्मवेता सतगुरू मिले, सँशय करे प्रहार ।।१४।।
विपरीत भावना मन बसे, असँभावना चित माहि ।
अन्तस्थ बाधक है यही, कैसे नासत जाहि ।।१५।।
सत्य असत्य निश्चय नही, प्रपँच दृश्य महान ।
जीवेश्वर का भेद सत, या अभेद पहचान ।।१६।।

साधन शास्त्र सतगुरू, शुद्ध बुद्धि अभ्यास ।
विघ्न नास होवे तभी, सतसँग रामप्रकाश ।।१७।।

।। पाँच अभाव प्रतिपादन ।।

।।१।। प्राज्ञाभाव ।।

पूर्व परिवर्तन बिन उत्पति, जो अपने निज रूप ।
प्राज्ञाभाव सो जानिये, रामप्रकाश मति गूप ।।१८।।

।।२।। प्रध्वँसाभाव ।।

मूल रूप को पलट दे, परिवर्तन अन्य स्वरूप ।
प्रध्वँसाभाव ताहि जानिये, रामप्रकाश अनुरूप ।।१९।।

।।३।।अन्योनाभाव ।।

अन्य में अन्य की कल्पना, रज्जु मे सर्प आभास ।
अन्योनाभाव ताहि जानिये, यों कहै रामप्रकाश ।।२०।।

।।४।। सामयिकाभाव ।।

सामयिकाभाव ताको कहै, वस्तु समय बदलाव ।
यथा स्थान को बदलते, अन्य स्तिथि के भाव ।।२१।।

।।५।। अत्यन्ताभाव ।।

कारण सहित जो कार्य की, होय समूलता नास ।
अज्ञान सहित जग निवृति, होय ज्ञानी के पास ।।२२।।
अत्यन्ताभाव ताको भने, कोविद शास्त्र सन्त ।
ज्ञानामृत ज्ञानी लहे, रामप्रकाश भनन्त ।।२३।।
विभिन मत मतान्तरा, अपनी बात बताय ।
अत्यन्ताभाव वेदान्त का, रामप्रकाश लखाय ।।२४।।

।। जीव-ईश्वर का ऐश्वर्य दर्शन ।।

जीव तीन षट ईश अँक, रामप्रकाश वरिष्ठ ।
विमुख रहत छतीस है, सन्मुख लाभ अभिष्ठ ।।२५।।
पृकृति माया अष्ठ गण, अनल अनिल नभ जाण ।
तोय भूमि अपरा लखो, रामप्रकाश कर जाण ।।२६।।
परिवर्तित अपरा असत, माया ब्रह्मार्षित मान ।
रामप्रकाश शुन्य लखो, विधि वेदान्त बखान ।।२७।।
प्रथम ब्रह्म फिर शून्य लख, माया लखो विचार ।
अपरा समझ विवेक से, रामप्रकाश की सार ।।२८।।
युक्ति बिन भुक्ति नही, मुक्ति युक्ति बिन नाहि ।
रामप्रकाश समझो यही, गुरु बिन साधन काहि ।।२९।।
परा एक ब्रह्म तत्व लखो, पृकृति शून्यवत जान ।
वही अपरा अष्ठ जानले, माया बिन अधिष्ठान ।।३०।।
परा अपरा जब मिले, दृष्य दर्शन जान ।
विधि विविधता जाल सो, माया का प्रावधान ।।३१।।

।। त्रिगुणात्मक सृष्टि क्रम दर्शन ।।

रजो क्रिया शक्ति रचे, सतोगुण शक्ति ज्ञान ।
जड़ शक्ति तमोगुण त्रय, रामप्रकाश ले जान ।।३२।।
ज्ञान कर्म इन्द्रिय दशो, अन्तःकरण लख चार ।
पाँचकोश त्रय अवस्था, त्रिगुण मय सँसार ।।३३।।
ज्ञानेंद्रिय अन्तःकरण, सात्विक सृष्टि प्रमाण ।
प्राण कर्मेन्द्रिय रजोमय, तत्व तमोमय छाण ।।३४।।
प्रतिबिम्बत अनादि जो, अप्रतिहत पृकृति जान ।
अनिर्वचनीय विलक्षण यही, रामप्रकाश पहिचान ।।३५।।
सृष्टि का कारण यही, प्रपँच कार्य विशेख ।
रामप्रकाश युक्ति लखे, यह सतगुरू का लेख ।।३६।।
ओम शब्द को धनुष कर, प्रणव त्वंचा को खींच ।
जीवात्म शर लक्ष्य करो, ब्रह्म तन्मय रींच ।।३७।।
तन मन इन्द्रिय वश करो, दोष चँचलता त्याग ।
ध्येय ध्याता हो ध्यान मय, तन्मय तत्पर लाग ।।३८।।

।। स्वरूप चेतना ।।

ब्रह्म सचिदानंद है, अचल अकह अडोल ।
मन वाणी गम ना पड़े, रामप्रकाश अबोल ।।३९।।
अविद्या आवर्ण में जीव है, माया आवर्ण में ईश ।
कुटस्थ ओ चिदाभास में, उलझ रहे अवनीश ।।४०।।
आशा वासना धूल करि, तत्व लखे अनुस्यूत ।
रामप्रकाश अनुभव भखे, सोई सन्त अवधूत ।।४१।।
अहिरन वत दृढ़ता रहे, सो कुटस्थ अविकार ।
मनोमय सृष्टि रचे, सँकल्प हथोड़ी डार ।।४२।।
मति में व्यष्टि अज्ञान जो, चेतन ता अधिष्ठान ।
महाकाश का अँश घट, कुटस्थ अजन्य ब्रह्म जान ।।४३।।
ब्रह्म ईश रु माया वृत, जीव कुटस्थ चिदाभास ।
त्रिगुणात्मक सृष्टि यही, चेतन रामप्रकाश ।।४४।।
कुटस्थ रु माया का लखो, अधिष्ठान ब्रह्म ईश ।
कुटस्थ अविद्या चिदाभास युत, जीव स्वरूप मनीश ।।४५।।

।। पाँच प्रकार की भ्रांतियां ।।

१ब्रह्म भिन्न जग सत्यता, २कर्ता - भोक्ता ३सँग ४भेद ।
५विकार सहित पँच भ्रांतियां, आतम ब्रह्म अभेद ।।४६।।
रज्जु में सर्प कल्पित सदा, पूर्व के सँस्कार ।
मँद ज्योति अधिष्ठान रजु, भ्रान्ति जगत विकार ।।४७।।
स्फटिकमणि में रँग जिमि, पारा परदा सँग भ्रान्ति ।
केवल भ्रान्ति प्रतीत है, मिथ्या दृष्टि कर शांति ।।४८।।
ब्रह्म भिन्न जग सत्यता, कुण्डल कनक उपाधि ।
घट भूमि उपादान ते, निमित मायावृत साधि ।।४९।।

जड़ जड़ रु जीव जड़, जड़ जीव का भेद ।
जड़ ईश रु परस्पर, भेद भ्रान्ति पँच छेद ।।५०।।
घट मठ जल आकाश ज्यों, महाकाश के मांहि ।
रामप्रकाश मिथ्या कहै, सत आत्म चित थाहि ।।५१।।

।। अविद्या के भेद ।।

अपरा माया पँचधा, विद्या सँघनी जान ।
आह्लादिनी सँदीपनी, अविद्या स्वरूप पहिचान ।।५२।।
तमो, मोह, महामोह मय, अन्ध तामिस्र अविद्य ।
तामिस्र भेद अनन्त है, रामप्रकाश अनविद्य ।।५३।।
आठ आठ दस अठारह, अठारह क्रमशः जान ।
बासठ भेद अविद्या लखो, रामप्रकाश विद मान ।।५४।।
दुःख में सुख अशुचि में शुचि, अनात्म आत्म मान ।
अनित्य में नित्य बुद्धि, कार्य अविद्या चव जान ।।५५।।
अविद्या अटपट तमोगुणी, खट पट उलझी आय ।
झटपट लखता सन्त जन, चट पट मुक्ति थाय ।।५६।।
परोक्ष अपरोक्ष हर्ष शोक में, कार्य अविद्या पँच भ्राँत ।
युग शक्ति अज्ञान युत, चिदाभास दशा सात ।।५७।।
अविद्या जाल में सब फँसे, कर्म बन्धन के बीच ।
नाना रूप से फैल के, प्रपँच फैलाया कीच ।।५८।।
त्रिगुणात्मक त्रिपूट में, त्रिविध बन्धया जीव ।
बन्धकाभाव के बिना, छुड़ा सके नही पीव ।।५९।।

।। चिदाभास का स्वरूप ।।

अवस्था यह चिदाभास की, वर्तित होवे सात ।
भोगत जीव या जगत में, रामप्रकाश अवघात ।।६०।।
पँच ज्ञानेंद्रिय अन्तःकरण, सतो सृष्टि चित भास ।
मन प्राण प्रधानता, चिदाभास यह खास ।।६१।।
बुद्धि युत अधिष्ठान चिद, कुटस्थ सँग चिदाभास ।
जीव स्वरूप खास यह, सन्त कहै रामप्रकाश ।।६२।।
परोक्ष अपरोक्ष हर्ष शोक में, कार्य अविद्या पँच भ्राँत ।
युग शक्ति अज्ञान युत, चिदाभास दशा सात ।।६३।।
सतोगुणी अन्तस्थ में, उर चेतन आभास ।
जल पात्र रवि धूप जिमि, चिदाभास सो खास ।।६४।।
रवि ब्रह्म कुटस्थ बिम्ब, अन्त जल वत जान ।
प्रतिबिम्ब सो चिदाभास है, भीति चलाचल मान ।।६५।।

।। इतिश्री रामप्रकाश वेदान्त दोहावली अन्तर्गत षष्ठम वल्ली समाप्त ।।

श्री रामप्रकाश वेदान्त दोहावली

॥ सप्तम् वल्ली प्रारम्भ ॥

॥ अनादि वस्तु अवस्तु का कथन ॥

ब्रह्म माया सम्बन्ध रु, जीव ईश के भेद ।
षट वस्तु अनादि यह, व्यापक ब्रह्म अभेद ।।१।।
ब्रह्म अनादि अनन्त अज, वस्तु ब्रह्म निरवाण ।
अन्य अवस्तु परिवर्तित सभी, देश काल गत जाण ।।२।।
वस्तु में आरोप है, अवस्तु अध्यारोप ।
कल्पित उपाधि जानिये, पृकृति त्रिगुण रोप ।।३।।
नाम रूप कारण कार्य, प्रवाह रूप अनादि ।
सनातन ब्रह्म अनादि है, शान्त मायादिक सादि ।।४।।
परब्रह्म सत चित एक है, अपरब्रह्म माया प्रपँच ।
अविद्या ओ चिदाभास में, रजो तमो की खँच ।।५।।
ब्रह्म अनादी शान्त है, प्रकृति प्रवाह अनाद ।
ब्रह्म विवृत दृष्य सकल, माया परिणाम विषाद ।।६।।

।। अनात्मा के द्वादश धर्म ।।

अनित्य विनाशी अशुद्ध है, अध्यस्त क्षेत्र हेतुमान ।
परिछिन्न विकारी अनात्मा, प्रकाश्य त्रिभेद सँज्ञान ।।७।।
अविद्या विहत चेतन यही, सोई सँज्ञावान ।
आवृतशील त्रिभेद धर्म, द्वादश अनात्म जान ।।८।।

।। आत्मा के द्वादश धर्म ।।

नित्य अविनाशी शुद्ध है, अविकारी हेतु एक ।
अभँग अखंडी आत्मा, स्वयँ प्रकाशी आश्रय नेक ।।९।।
क्षेत्रज्ञ अनावृत अधिष्ठान सो, सँज्ञा रहित सो जान ।
माया रहित निर्द्वंद है, आत्म धर्म रवि मान ।।१०।।

।। सात प्राकृतिक अविद्या बन्धक ।।

धर्म अधर्म वैराग्य लग, ऐश्वर्य अनैश्वर्य अज्ञान ।
राग सहित यह सात ही, पृकृति बन्धन जान ।।११।।
अन्तश्चेतना तब जगे, सतगुरू शब्द विश्वास ।
श्रद्धा सुमन हृदय धरे, वाणी विमल विलास ।।१२।।
विध वेदान्त में लगन हो, साधन शास्त्र स्नेह ।
पारांगत सन्त रु सतगुरू, तब समझावे ऐह ।।१३।।
प्राकृतिक बन्धन तब कटे, हो प्रतिबन्धकाभाव ।
साधन शास्त्र सतगुरू, यासे बढावे भाव ।।१४।।
साधन श्रधा सतगुरु, शास्त्र सत्संग जान ।
प्रतिबंधकाभाव हो, रामप्रकाश तत ज्ञान ।।१५।।

।। पाँच अँश मय सृष्टि सँचालन ।।

सत चित आनन्द ब्रह्म के, तीन अँश पहिचान ।
नाम रूप मिल पाँच से, सृष्टि कियो मण्डान ।।१६।।
माया उपहित ईश चित, अविद्या उपहित जीव ।
दृष्य उपाधि जल बीचि मे, रँच भ्रम नही थीव ।।१७।।
तीन अँश सत स्वर्ण ब्रह्म, नाम रु रूप कथीर ।
दोनो मिल टाँके रचा, जग भूषण का बीर ।।१८।।
बने बिखरे तरँग से, सिन्धु विकार ना कोय ।
या विध उत्पन्न जगत से, ब्रह्म कलँक ना होय ।।१९।।
सिन्धु में तरँग रु बुदबुदा, उठे मिटे बहु रँग ।
या विध ब्रह्मण्ड ब्रह्म मे, बनत रहै नवरँग ।।२०।।
ब्रह्म विवृत पलटा नही, माया का परिणाम ।
पाँच दोय मिल अद्वयता, दीखत जग अभिराम ।।२१।।
यथार्थ प्रमा निरुपाधि है, अयथार्थ अप्रमा उपाध ।
याते मिल सँशय भया, गुरू मुख मिटे अपराध ।।२२।।
अस्ति भाति प्रिय को लखो, सत चित आनन्द ब्रह्म जान ।
नाम रूप मिथ्या मिले, दृश्य भ्रम जग मान ।।२३।।

।। अज्ञान एवँ अविद्या का भेद ।।

कल्पित विशेष अध्यस्त रहे, भ्रान्ति काल प्रतीत ।
अधिष्ठान ज्ञान ते निवृत हो, सो अविद्या कहै रीत ।।२४।।
विपरीत दर्शन अज्ञान है, रज्जु में सर्प सुजान ।
विपरीत ज्ञान अविद्या लखो, नाश ज्ञान अधिष्ठान ।।२५।।
भ्रान्ति काल विपर्य दर्शन, वास्तविक ज्ञान ते नाश ।
अविद्या रूप सो जानिये, जानो रामप्रकाश ।।२६।।
रज्जु में दर्शन सर्प का, अज्ञान वही है खास ।
वस्तु ज्ञान ते नाश हो, अविद्या रामप्रकाश ।।२७।।

।। अज्ञान की दो शक्तियां ।।

अन्तस्थ उपहित चित मे, भासत है चिदाभास ।
आश्रित रहे अज्ञान के, ताते उपजे खास ।।२८।।
ईश्वर ब्रह्म कछु है नही, अस्तवापादक अज्ञान ।
नास्तिक वृति नाशे तभी, होय परोक्ष का ज्ञान ।।२९।।
ईश्वर ब्रह्म है तो सही, अप्रतीत अविश्वास ।
अभानापादक अज्ञान सो, यों कहै रामप्रकाश ।।३०।।
दो शक्ति अज्ञान की, अस्तवा अभाना खास ।
दृढ अपरोक्ष ब्रह्मज्ञान ते, निवृति रामप्रकाश ।।३१।।

।। वृत्ति का स्वरूप ।।

अन्त:करण में अज्ञान का, होवे जो परिणाम ।
अन्तर्विकार प्रपँच का, आभासित अविराम ।।३२।।

चित वृत्ति चार प्रकार की, प्रमा अप्रमा जान ।
निंद्रा नास्तिक याहि ते, भेद उपभेद महान ।।३३।।
प्रथम प्रमा के भेद है, छः प्रकार से जाण ।
विभिन्न मत मतान्तर मानते, विविधता बहुत बखाण ।।३४।।
शब्द प्रत्यक्ष अनुमान ओ, अर्थापति उपमान ।
"अध्यात्म दर्शन" पढो, लखिये यथार्थ ज्ञान ।।३५।।
अप्रमा दो प्रकार की, यथार्थ प्रमा को जान ।
अयथार्थ प्रमा भेद विधि, उपभेद विविध पहिचान ।।३६।।
यथार्थ प्रमा भेद से, भेद तीन प्रधान ।
स्मृति, सुख दुःख वृत्ति है, ईश्वर ज्ञान वृत मान ।।३७।।
अयथार्थ प्रमा का अर्थ है, भ्रान्ति युत मिथ्या ज्ञान ।
ताको ही अध्यास कह, सोई भेद छः जान ।।३८।।
भ्रान्ति ज्ञान का विषय, और भ्रान्ति का ज्ञान ।
ताको ही अध्यास कह, रामप्रकाश प्रमान ।।३९।।
नास्तिक वृत्ति प्रमा वही, यथा नाम तथा काम ।
जीयो तो सुख से जीयो, जीव रु ईश बदनाम ।।४०।।
अर्था रु ज्ञानाध्यास ये, दोय भेद अध्यास ।
ज्ञानी गुरू मुख से लखो, यों कह रामप्रकाश ।।४१।।
जीव वृत्ति यथार्थ अप्रमा, सुषोप्ति सुख अज्ञान ।
जाग्रत मे वह ना रहे, रामप्रकाश बखान ।।४२।।
अयथार्थ अप्रमा लखो, ताके पाँच है भेद ।
भ्रान्ति ज्ञान ताको कहे, ताहि जान के छेद ।।४३।।
भ्रान्त ज्ञान भ्रान्ति कही, पहले करी बखान ।
सप्तम वल्ली मे देखिये, रामप्रकाश परमान ।।४४।।

।। कर्म भेद के दो प्रकार ।।

पृवृति के कर्म बहु, प्रपँच भरे सकाम ।
आशक्ति भरे बन्धन करे, रामप्रकाश बहु याम ।।४५।।
निवृति कर्म निष्काम के, आशक्ति रहित तमाम ।
सत व्यवहार अन्तः शुद्धि, रामप्रकाश आराम ।।४६।।

।। बन्धन का कारण ।।

ब्रह्म के प्रतिबिम्ब से, निज है कुटस्थ असँग ।
अन्योन्याध्यास तामे भयो, जीवत्व बन्धन के रँग ।।४७।।
बुद्धि सहित चिदाभास में, बने दो ज्ञान अज्ञान ।
आत्म तत्व में ना बने, नही अज्ञान रु ज्ञान ।।४८।।

।। चित की पाँच भूमिका ।।

अन्तःकरण के बीच में, न्यारे न्यारे भाग ।
मन रम्यो चिदाभास में, कुटस्थ सँग में लाग ।।४९।।
सँकल्प विकल्प मन करे, बुद्धि में पाँच कलेश ।
चित भुमिका पाँच है, अहँ वृत्ति सँग हमेश ।।५०।।

क्षिप्त मूढ विक्षिप्त, विषयानुरक्त यह तीन ।
एकाग्रह निरुद्ध यह, शुद्ध सतो गुण चीन ।।५१।।
राग द्वैष जग से करे, चित चँचल भव बीच ।
क्षिप्र भूमिका चित की, ढोवत द्वन्द के कीच ।।५२।।
तमोगुण की प्रधानता, काम क्रोधादिक सँग ।
अधर्म और अज्ञान मय, मूढ भूमिका रँग ।।५३।।
ज्ञान अज्ञान के सँग मे, त्रिगुणात्म भौतिक भाव ।
सतोवृत्ति आवत रहे, विक्षिप्त भूमि चित चाव ।।५४।।
शुद्ध स्फटिक उज्वल मणि, यथार्थ ख्याति विवेक ।
निरन्तर चिन्तन विवेक को, एकाग्र भूमिका नेक ।।५५।।
विवेक ख्याति विकार बिन, निर्बीज समाधिस्थ होय ।
साक्षात्कार की हेतु यह, निरुद्ध भूमिका जोय ।।५६।।
प्रथम तीन चित भूमिका, देवे भव का भाव ।
अन्तिम दो चित भूमिका, सत के देत प्रभाव ।।५७।।
अन्तःकरण शुद्धि कारणे, हो कूटस्थ चिदाभास ।
बुद्धि पाँच क्लेश में, चित भूमिका रास ।।५८।।
सुख दुःख कारण मन है, बुद्धि में पँच क्लेश ।
चित भूमिका पँच में, अहँकार के देश ।।५९।।
अन्तःकरण प्रधानता, ज्ञान इन्द्रियों के सँग ।
सतोगुण प्रधानता, तामे भासे प्रसँग ।।६०।।

।। ह्रदय मे तीन ग्रन्थी ।।

प्रथम ग्रँथी अज्ञान की, द्वितीय अविद्या शूल ।
तृतीय कर्म के काम की, जन्म मरण का मूल ।।६१।।
त्रिगुण गूँथी त्रिपूटीयाँ, तीन कर्म आधार ।
अविद्या मे गाढी हुई, भरी अज्ञान भण्डार ।।६२।।
ह्रदय में हँसा बसे, ज्योतिर्मय हरि आप ।
आवर्ण ग्रन्थी तीन से, ढक्या भोगे त्रय ताप ।।६३।।

।। प्रतिबंधक चार विघ्न ।।

रसास्वाद काषाय को लखो, विक्षेप लय गति जान ।
साधन सतगुरू मया से, कटते विघन महान ।।६४।।
चित भूमिका प्रभाव से, उत्पात जन्य विकास ।
रसास्वाद काषाय यह, विघ्न है रामप्रकाश ।।६५।।
इन्द्रियों को रस चाहना, रसास्वाद उत्पात ।
निंद्रा आलस्यादि होन ते, करे समाधि घात ।।६६।।
अनन्त जन्म के अन्तस्थ में, शूक्ष्मत्म स्निग्ध सँस्कार ।
काषाय मन का मेल है, शांति कर्म विडार ।।६७।।
चित शुद्धि के होन ते, आन्तरिक मिटे विकार ।
इन्द्रियादिक की चेष्ठा, सँयम ते शम सार ।।६८।।

चित की अस्थिर दशा, सो विक्षेप कहलाय ।
जाग्रत मे सुषोप्ति लगे, लय विघ्न लय ढाय ।।६९।।
सावधान तत्पर रहे, शम दम श्रद्धा धार ।
हरि गुरू भय मन में धरे, साधन में सत्कार ।।७०।।
चार विघ्न मन चित के, बन्धक साधन माहि ।
ज्ञान समाधि को हरे, साधक धोखा खाहि ।।७१।।

।। चार ख्याति का प्रतिपादन ।।

लोक प्रियता प्रसिद्धी, ख्याति सो पहिचान ।
विभन्न मतान्तर मान्यता, सो ख्याति वृत जान ।।७२।।
सतगुरू सन्त सानिध्य से, सतसँग उतम विचार ।
साधन प्रबल श्रद्धा घनी, पूर्व पलटे सँस्कार ।।७३।।
प्रतिबन्धकाभाव बने, साधन निरन्तर जोय ।
विघ्न कटे चित स्थिर हो, रामप्रकाश थिर होय ।।७४।।
शून्यवाद का सिद्धांत है, असत ख्याति का खास ।
आत्म ख्याति विज्ञान से, वादी रामप्रकाश ।। ७५।।
अन्यथा ख्याति न्याय में, वैशेषिक वादी सिद्धांत ।
अख्याति प्रभाकर मते, अपने वाद दृष्ठान्त ।।७६।।
अनिर्वचनीय ख्याति सो, उतर मीमांसा वेदान्त ।
सत असत ते विलक्षणा, रामप्रकाश मत शान्त ।।७७।।
अधिक वृहद शास्त्र पढें, अपने भ्रान्ति के वाद ।
रामप्रकाश पढ जान लें, यह विलक्षण सँवाद ।।७८।।
सामग्री ख्याति अध्यास की, लखे जिज्ञासा लाय ।
बोध बढे सँशय मिटे, रामप्रकाश दरशाय ।।७९।।
प्रमाता चित अन्तस्थ वृत्ति, इंद्रिय चेतन प्रमाण ।
सादृश्य वस्तु प्रमेय की, प्रमा सँस्कार पुर्वाण ।।८०।।
प्रमाता चेतन प्रमाण रु, प्रमेय प्रमा चार ।
अन्तःकरण वृत्ति करे, अध्यास ख्याति का कार ।।८१।।
प्रमा पूर्व सँस्कार है, प्रमेय रज्जु अधिष्ठान ।
इंद्रिय वृत्ति प्रमाण जो, अन्तस्थ प्रमाता मान ।।८२।।
वस्तु आधार अधिष्ठान रु, वस्तु सामान्य ज्ञान ।
रामप्रकाश सच मानिये, और विशेष अज्ञान ।।८३।।
ख्याति या अध्यास के, कारण हेतु यह पाँच ।
भ्रान्ति ख्याति अध्यास ये, इन बिन बने नही जाँच ।।८४।।
चारो चेतन जब मिले, साथ विशेष अज्ञान ।
पाँचों सामग्री जब मिले, तब ख्याति भ्रान्ति ज्ञान ।।८५।।

।। अधिष्ठान का तीन अँश ।।

"यह" सामान्य अँश इदम्, " रज्जु " आकार विशेष ।
कल्पित अँश विशेष " है, " तीनों अधिष्ठान की रेश ।।८६।।

।। सात प्रकार का चेतन ।।

अँत:करण निसृत वृत्तियाँ, प्रमा प्रमेय प्रमाण ।
प्रमाता ईश्वर जीव ब्रह्म, चेतन सात निशाण ।।८७।।
ईश्वर जीव ब्रह्म निर्णय, पढ आये सो जाण ।
चार वृत्ति अधिष्ठान से, सात चेतन प्रमाण ।।८८।।
ब्रह्म तत्व महाकाश है, कुटस्थ है घटाकाश ।
ईश्वर है मठाकाश ज्यों, जीव जानो जलाकाश ।।८९।।
चार आकाश चेतन यही, शूक्ष्म देह के सँग ।
स्थूल इंद्रिय द्वार से, क्रिया करे अभँग ।।९०।।

।। कुटस्थ स्वरूप ।।

कुटस्थ चेतन माहि है, कल्पित सात्विक बुद्धि ।
वही मन का स्वरूप हो, विभाजित चार सँसिद्ध ।।९१।।
ब्रह्म नहीं परब्रह्म सम, कुटस्थ होवे प्रतीत ।
ब्रह्माश्रित चेतन वही, मन मानत मन जीत ।।९२।।
कुटस्थ मन सो एक ही, चेतन है निरुपाधि ।
ब्रह्माश्रित माया छल करे, मन जीते मन साधि ।।९३।।
गिरा अर्थ जल बीचि सम, कहियत भिन्नाभिन्न ।
जल ओला की भाति यह, एक रूप क्रम भिन्न ।।९४।।

।। चार चेतन के अन्य दृष्ठान्त ।।

प्रमाता प्रमाण प्रमेय, प्रमा चेतन चार ।
होय उपाधि अंत:करण, इन्द्रिय करे संचार ।।९५।।
अन्तस्थ अविच्छन्न प्रमाता, वृत्ति अविच्छन्न प्रमाण ।
वस्तु घटादि प्रमेय है, साकार प्रमा ज्ञान ।।९६।।
प्रमाता प्रमाण प्रमेय, तीनों मिले तब होय ।
नाम रूप यथार्थ लखे, प्रत्यक्ष प्रमा सोय ।।९७।।
अन्तस्थ जल कोठा भरा, प्रमाता – इंद्रिय नाल ।
प्रमाण -प्रमेय वस्तु गत, क्यारी प्रमा लक्ष्य ताल ।।९८।।

।। चार मुक्ति प्रयाण ।।

चित वृत्ति शुभ कर्म करि, मुक्ति सालोक्य निष्काम ।
प्रथम द्वितीय भूमिका सजे, कनिष्ठ जिज्ञासु मध्याम ।।९९।।
शुभइच्छा सुविचारना, प्रथम मध्यम जिज्ञासु ।
तृतीय है तनुमानसा, उतम जिज्ञासु जासु ।।१००।।
उतम अधिकारी ज्ञान का, मुक्ति सामिप्य सतलोक ।
निष्काम उपासना ते बढे, ज्ञान श्रेणी पथ ओक ।।१०१।।
ज्ञानी वर चोथी भूमिका, पँचम भूमा वरियान ।
छठी भूमिका वरिष्ठ की, तुरिय ब्रह्म समान ।।१०२।।
वर ज्ञानी सारूप्य में, सायुज्य वरियान ।
जीवन मुक्ति परवाण मे, स्वयँ स्वरूप गलतान ।।१०३।।

विदेह मुक्ति ज्ञानी लहै, वरिष्ठ ब्रह्म स्वरूप ।
आवागमन सब ही मिटे, आप अद्वितीय अनूप ।।१०४।।
तुरिय तुरियातीत है, ज्ञानी रहे ना देह ।
पाला गलि जल मे मिल्यो, अन्तर रहा न ऐह ।।१०५।।
सालोक्य सामिप्य सारुप्य रु, सायुज्य सार्ष्ठिता जान ।
पँचम के दो भेद है, जीवन विदेह परमान ।।१०६।।
पाँच मुक्ति सप्त भूमिका, पावे जिज्ञासु तीन ।
पुनि ज्ञानी पावे तीन को, सप्तम तुरिय ब्रह्म चीन ।।१०७।।
शुभ इच्छा सुविचारना, मुक्ति सालोक्य पाय ।
भक्ति उपासन निष्कामता, भक्त पहुंचे जाय ।।१०८।।
तृतीय है तनुमानसा, सामीप्य हरि पास ।
चतुर्थ सत्वापति में, ज्ञानी प्रभु है खास ।।१०९।।
असंशक्ति वर भुमिका, ज्ञानी हो वरियान ।
चेतन स्वरूप स्वयं आप है, सारूप्य सो जान ।।११०।।
मुक्तिमयी जो अवस्था, पदार्थ अभावनी जान ।
सायुज्य निर्विकल्पता, द्वन्द्व रहित निरवान ।।१११।।
सार्ष्ठिता पंचम भेद से, विदेह जीवन गति जान ।
प्रारब्ध निवृत्त विदेह सो, शेष भोगत निरवान ।।११२।।
भेद अभेद उपेक्षा नहीं, द्वन्द रहित कल्याण ।
रामप्रकाश निर्भय सदा, मुक्त स्वरूप परवाण ।।११३।।
पावे प्रयोजन पाँच को, जीवन्मुक्ति परमाण ।
रञ्चक सँशय ना रहे, निःसँशय निरवाण ।।११४।।
रज्जु जली भस्मी रही, बन्धन बाँधे नाहि ।
दीखत देह स्थूल की, रही काम की काहि ।।११५।।
भूना कण अनाज का, खाये भूख मिटाय ।
फिर ऊगत पनपे नही, यों ज्ञानी मुक्त समाय ।।११६।।
सँक्षिप्त प्रक्रिया वेदान्त की, बाल बोधनी रूप ।
पाठ पढे सीखे सुने, चितवृत्ति शान्त अनूप ।।११७।।
ज्ञानी को आह्लाद है, जिज्ञासु के प्राण ।
सज्जन गण रुचि भाव कर, अज्ञानी को त्राण ।।११८।।

।। इति श्री रामप्रकाश वेदान्त दोहावली अन्तर्गत सप्तम् वल्ली समाप्त ।।

॥ अष्टम् वल्ली प्रारम्भ ॥

।। मोक्ष के दो लक्षण (प्रयोजन) ।।

सर्व अनर्थ प्रपँच की, होय सर्वथा हानि ।
परमानन्द स्वरूप का, दृढ हो निष्ठावान ।।१।।

पृकृति के दो भेद

ईश्वर पृकृति के भेद दो, परा अपरा जान ।
सगुण निगुण स्थूल वो, शूक्ष्म कारण महान ।।२।।

।। दो सम्पति ।।

देवी सम्पति सात्विक गुण, सुखदायक कल्याण ।
असुर सम्पति तामस भरी, दुःखदायक चौ खाण ।।३।।

।। दो योग समाधि ।।

सविकल्प समाधि साधना, चेतनता युत ज्ञान ।
निर्विकल्प समाधि योगमय, जड़ देह वत मान ।।४।।

।। दोय प्रकार प्रज्ञा (बुद्धि) ।।

चँचल वृत्ति अस्थित प्रज्ञा, क्षण क्षण भिन्न विचार ।
स्थित प्रज्ञा सु आत्मवित्, शान्त चित नित सार ।।५।।

।। दो प्रकार का अध्यास ।।

अर्थाध्यास प्रपँच में, दैहिक भ्रान्ति ज्ञान ।
ज्ञानाध्यास प्रपँच का, होय यथार्थ ध्यान ।।६।।

।। दो प्रकार का असँभावना ।।

प्रमाणगत असँभावना, शास्त्र ज्ञान सन्देह ।
प्रमेय गत असँभावना, मोक्षादिक सँशय येह ।।७।।

।। दो प्रकार का अहँकार ।।

देहादिक अनात्मा, मानक अशुद्ध अहँकार ।
स्वयँ तत्व स्वरूप का, चित शुद्ध अहँकार ।।८।।
अहँकार सामान्य सो, मिथ्या प्रपँच तज जान ।
अहँकार विशेष वह, नाम रूप अभिमान ।।९।।

।। दो प्रकार का अज्ञान ।।

वन समाज तालाव सम, सो समष्टि अज्ञान ।
वृक्ष व्यक्ति जल बिन्दु सम, बुद्धि गत व्यष्टि मान ।।१०।।
घटादिक अविछिन्न को, ढाँपे तूला अज्ञान ।
शुद्ध चेतन को ढाँपता, मूला अज्ञान सो जान ।।११।।

।। अज्ञान की दो शक्तियां ।।

अधिष्ठान को ढाँपता, आवर्ण शक्ति अज्ञान ।
विक्षेप शक्ति प्रपँच को, हरत ताहि को ज्ञान ।।१२।।

।। दो प्रकार का उपासना ।।

कारण ब्रह्म रु कार्य ब्रह्म, सगुण उपासना होय ।
शुद्ध ब्रह्म निर्गुण उपासना, लय चिन्तन चित जोय ।।१३।।
जिव ईश अरु शब्द ब्रह्म, ओम सहित चव पाद ।
तीन पाद त्रिगुण हरे, चतुर्थ तत्व सुद्ध याद ।।१४।।

।। दो प्रकार का निग्रह ।।

यम नियमादिक विधि से, क्रम निग्रह मन होय ।
चार साधन कर साँभवी, हठ निग्रह चित जोय ।।१५।।
भौतिक कुल उद्योग सो, बाह्य प्रपँच परिवार ।
तृष्णा काम लोभादि जो, आन्तरिक प्रपँच निहार ।।१६।।

।। दो प्रकार का लक्षण ।।

व्यावृतक स्वरूप शुद्ध, सदा रहत विद्यमान ।
वाच्यार्थ कदाचित रहे, तटस्थ लक्षण पहिचान ।।१७।।

।। दो प्रकार का वाक्य प्रमाण ।।

सन्त शास्त्र प्रमाण के, वाक्य अवान्तर जाण ।
वेद श्रुति ग्रन्थ न वदे, महावाक्य विधि छाण ।।१८।।

।। दो प्रकार की विपरीत भावना ।।

वेद शास्त्र गत विषय मे, सँशय प्रमेयगत होय ।
सन्त शास्त्र वाक्य प्रति, सँशय प्रमाणगत जोय ।।१९।।

।। दो प्रकार की व्यष्टि – समष्टि सृष्टि ।।

स्थूल शूक्ष्म दोय विधि, व्यक्तिगत व्यष्टि जान ।
समष्टि सर्व ब्रह्मांड को, सृष्टि भेद पहिचान ।।२०।।
एक ईश की विधि लखो, व्यष्टि गत शब्द पिछान ।
सामग्री सब जीव गत, समग्र समष्टि मान ।।२१।।

।। दो प्रकार के जैन ।।

श्वेताम्बर मन्दिर मारगी, मुख मुंगची धार ।
दिगम्बर नंगे रहे, मुनि वक्ता जैन विचार ।।२२।।

।। दो प्रकार के बोद्ध ।।

महायान वर्तमान में, बुद्ध उपासक बोद्ध ।
वज्रयान तांत्रिक लखो, निर्वाण विश्वासी शोद्ध ।।२३।।

।। दो प्रकार के मुस्लिम ।।

शिया कलमा पढत है, पढ़ते रहो कुरान ।
सुन्नी सुन्नत करत है, सरियत पालत मान ।।२४।।
शिया सुन्नी के भेद बहु, शाखा उपासना भेद ।
द्विशताधिक शाख मे, झगडे बहुत विछेद ।।२५।।
इष्ट ग्रंथ कुरान है, ग्रंथ हदीस शत दोय ।
मजहब नाना यही मे, हदीस मान्यता होय ।।२६।।

।। जिज्ञासु के मुख्य तीन साधन ।।

श्रद्धा बिन समाधान के, विवेक सम्पन नही होय ।
सत विचार हृदय धरे, प्रथम साधन होय ।।२७।।
शम दम तितिक्षा के बिना, विषय उपरामता नाहि ।
यह धारे वैराग्य दृढ, सँग मुमुक्षतत्व आहि ।।२८।।

।। तीन प्रकार के आत्मा के भेद ।।

मिथ्यात्म तन तीन ही है, आत्मज गोणात्म जान ।
मुख्यातम कुटस्थ निज, चेतन तत्व पिछान ।।२९।।

।। तीन प्रकार के अध्यात्मिक ताप ।।

इंद्रिय अध्यात्म को लखो, विषय समग्र अधिभूत ।
इंद्रिय सँचालक देव गण, सो अधिदेव अनुस्यूत ।।३०।।

।। तीन प्रकार के अन्तस्थ दोष ।।

जन्म अनेक के पाप सो, मल, चँचल विक्षेप ।
आवर्ण रूप अज्ञान में, नाना शक्तिमय क्षेप ।।३१।।

।। तीन प्रकार के अर्थवाद वाक्य ।।

अल्प प्रमाण सिद्ध वाक्य सो, अनुवाद वह मान ।
गुणवाद स्तुति जनक, शास्त्र कहत प्रमान ।।३२।।
भूतार्थ स्वार्थ भरा, मिथ्यावाद यह मान ।
वाचकता पूरण यही, ऋषियन कहै यों जान ।।३३।।

।। तीन प्रकार की अवधि (सीमा बन्धन) ।।

बोध अवधि, वैराग्य की, उपराम चित निरोध ।
समय पाय उपशम रहे, नित्य विरले रह शोध ।।३४।।

।। तीन प्रकार के अवस्था भेद ।।

जाग्रत स्वप्न सुषोवि, बाल युवा वृद्ध जान ।
स्थिर रहे ना एकरस, बदलत रहे निदान ।।३५।।

।। तीन प्रकार के आत्मवाचक शब्द ।।

ज्ञानात्मा शुद्ध बुद्धि है, महानात्म महतत्व जान ।
शुद्ध ब्रह्म शान्तात्म जानिये, वाक्य भेद पहिचान ।।३६।।

।। तीन प्रकार के आनन्द ।।

जाग्रत स्वप्न के भोग सो, विषयानन्द पहिचान ।
भावानन्द लेशानन्द भी, मात्रानन्द ताहि बखान ।।३७।।
सुषुप्ति आदि उत्थान में, दशा उदासी अनुभूत ।
सोई वासनानन्द है, काल्पनिक अनुभव स्यूत ।।३८।।
नित्यानन्द ब्रह्मानन्द सो, विरले साधक पाय ।
साधनगत समाधि ते, महापुरुष मस्त रहाय ।।३९।।
विषयानन्द भौतिक जगत, भक्तिमय भजनानन्द ।
जीवन्मुक्त ब्रह्मानन्द सो, क्षय वासना कन्द ।।४०।।

।। तीन प्रकार के विधिगत वाक्य ।।

।। नियम विधि वाक्य परिसँख्या विधि वाक्य ।।

अलोकिक विधि गत तर्क युत, अपूर्व विधि कहलाय ।
न्याय सहित सत्यता वदे, शास्त्र सिद्धांत बताय ।।४१।।
प्राप्ति दो पक्षन विषय, एक पक्षगत लाय ।
नियम विधि वाक्य कहै, शास्त्र प्रमाण लखाय ।।४२।।
उभय पक्षन के विषय, विपक्ष निषेध बताय ।
परिसँख्या विधि वाक्य वह, विचार मँथन सो गाय ।।४३।।

।। तीन प्रकार की इंद्रिय अँन्धता ।।

इंद्रिय गत स्व विषय को, अग्रहण जो होय ।
आन्ध्य दोष ताहि कहै, लखे जिज्ञासु कोय ।।४४।।
स्वल्प ग्रहण स्व विषय गत, माद्य इंद्रिय के दोष ।
यह द्वितीय जो कहा, नही हो निर्दोष ।।४५।।
स्पष्ठ ग्रहण स्वविषय का, चँचल करे सँयोग ।
इंद्रिय गत पटुत्व लखो, शम दम पावे योग ।।४६।।

।। ग्रन्थ गत तीन प्रकार की ग्रन्थी ।।

विषय गत लक्ष्य उद्देश्य है, लक्षण असाधारण धर्म ।
अति व्यापत्यादी दोष बिन, लक्षण पदकृति के मर्म ।।४७।।

।। तीन ऐषणाओं (इच्छा) का सँसार ।।

पुत्रेषणा सँतति वासना, वितैषणा धन आस ।
लोक महिमा की वासना, सो लौकैषणा खास ।।४८।।
शरीर इंद्रिय से काम कर, वाणी वचन के बोल ।
मन के सँकल्प विविध कर, त्रिविध कर्म के तोल ।।४९।।

।। तीन प्रकार के कर्तव्यादी ।।

करने योग्य कर्तव्य सो, ज्ञातव्य जानने योग ।
प्राप्तव्य प्राप्त योग्य फल, साधन ज्ञान प्रयोग ।।५०।।

।। तीन प्रकार के कर्म ।।

पूण्यकर्म नाना विधि, पापकर्म पुनि जान ।
मिश्रित पाप रु पूण्य वृत, तीन कर्म विधि मान ।।५१।।
सँचित जन्म अनेक के, लाभाँश प्रारब्ध जान ।
क्रियमाण अब करत है, त्रिविध कर्म बखान ।।५२।।

।। तीन प्रकार के काल ।।

भूतकाल बीता समय, वर्तित है वर्तमान ।
आने वाला जो समय, भविष्य सो प्रधान ।।५३।।

।। तीन प्रकार के अवस्था विशेष ।।

जाग्रत में जाग्रत सदा, ज्ञानी सन्त अवधूत ।
स्वरूप स्थिति नित्य रह, ब्रह्म व्यापक अनुस्यूत ।।५४।।
भूत भविष्य अर्थ का, जाग्रत स्वप्न बखान ।
चिन्तन मय मनोराज्य लख, भ्रमित रूप अज्ञान ।।५५।।

जाग्रत में भ्रमित भये, जड़ रूप अज्ञान ।
जाग्रत सुषोप्ति सो लखो, भूल सकल जहान ।।५६।।

।। तीन प्रकार के कर्मादी ।।

वेद विहित शुभकर्म नित, विकर्म वेद विरुद्ध ।
वेद विहित विरूद्ध उभय, अकर्म अज्ञानी सरुद्ध ।।५७।।

।। तीन प्रकार के कारण वाद ।।

आरम्भवाद होते रहे, परिणाम वाद बदलात ।
विवृतवाद भ्रान्ति जन्य, सदा रहे निर्भ्रांत ।।५८।।

।। तीन प्रकार के जीव -प्राणी ।।

कुटस्थ परमार्थिक चित है, साक्षी चेतन आप ।
चिदाभास अन्त:करण, जीव व्यवहारिक जाप ।।५९।।
अन्त:करण साभास में, व्यवहारिक हो जीव ।
स्वप्न माहि अध्यस्त रहे, प्रतिभासिक वह जीव ।।६०।।

।। तीन प्रकार के ताप ।।

स्थूल शूक्ष्म देह में, व्याधि अनेकों व्याप ।
प्रकट गुप्त भोगत वही, सोई अध्यात्म ताप ।।६१।।
प्राकृतिक दुःख ईति कहै, सो है सात प्रकार ।
अधिदैविक सो ताप है, कर्म भोग व्यवहार ।।६२।।
विद्युत पात चूहे अधिक, विविध रोग उत्पात ।
अतिवृष्टि अनावृष्टि कर, कृषि विफलादिक सात ।।६३।।
चोर सर्पादिक जन्तु भय, सिंह भूतादिक जान ।
राज दण्ड कर आदि भय, अधिभौतिक पहिचान ।।६४।।

।। तीन प्रकार की सृष्टि ।।

शब्द प्रणवादि साधना, शास्त्र वाणी उपदेश ।
नाद सृष्टि ताही कहै, नारद शारद शेष ।।६५।।
ग्रहस्थ भोग सँयोग से, जन्म होय जीव जन्त ।
बिन्दु सृष्टि ताहि कहे, विधिगत होय अनन्त ।।६६।।
नाद बिंदु से रहित वह, कला अतीत जो होय ।
वही तत्व निज ब्रह्म है, स्वात्म लख सोय ।।६७।।
विविध कला उद्योग को, सीखे सिखावे लोग ।
गुरु शिष्य सम्बन्ध ते, कलासृष्टि के भोग ।।६८।।

।। तीन प्रकार की निवृति ।।

साधन ज्ञान सतगुरू कृपा, भ्रमज तादायम्य नाश ।
भ्रमज निवृति ता कहै, पावे जिज्ञासु जास ।।६९।।
यह तादायम्य ज्ञान से, देह पात के अन्त ।
सहज निवृति तासु कहै, कहत शास्त्र वर संत ।।७०।।
प्रारब्ध भोग के अन्त में, देह क्षीण जब होय ।
कर्मज निवृति सहज में, शास्त्र सन्त कहै जोय ।।७१।।

।। तीन प्रकार के पापादि कर्म ।।

उत्कृष्ट पाप कर्म घोर है, मध्यम पाप कर्म जान ।
सामान्य पाप सो जगत में, हर मानव घर आन ।।७२।।
उत्कृष्ट पूण्य है सत्कर्म, मध्यम पूण्य कृत काम ।
सामान्य पूण्य कर्म सो, धर्म कार्य वृत नाम ।।७३।।

।। तीन प्रकार के प्रपँच ।।

स्थूल प्रपँच व्यवहार में, अन्तस्थ शूक्ष्म प्रपँच ।
कारण प्रपँच अज्ञान मय, बिन गुरू ज्ञान असँच ।।७४।।

।। तीन प्रकार के प्राणायाम ।।

पूरक श्वासा खेंचते, सो है तीन आकार ।
श्वास भीतर में रोकते, कुम्भक आठ प्रकार ।।७५।।
श्वास उतारे युक्ति से, रेचक तीन विधि होय ।
श्वासोश्वास की साधना, प्राणायाम लख सोय ।।७६।।

।। तीन प्रकार के प्रारब्ध कर्म ।।

एच्छिक कर्म प्ररब्ध सो, कर्म इच्छा कर होय ।
अनैच्छिक कर्म क्रियामय, सहजे होवत जोय ।।७७।।
अन्य द्वारा करवाये गये, परैच्छिक कर्म कहाय ।
वाही के प्रारब्ध बने, ताते तीन सहाय ।।७८।।

टिप्पणी-

१- ऐच्छिक ~ जो कर्म अपनी इच्छा से किये जाते है ।
२- अनैच्छिक ~बगेर इच्छा से ~जैसे चूल्हा चकी ,झाड़ु , ऊखल , जल गृह द्वारा ।
३- परैच्छिक ~ दूसरे की आज्ञा से किये जाने वाले कर्म ,जैसे नौकर , सिपाही ।

।। तीन प्रकार के दृश्य-वाच्य दोष ।।

लक्ष्य वस्तु के लक्षण में, एक देश मे होय ।
अव्याप्ति दोष ताको कहै, कथन वस्तुगत जोय ।।७९।।
लक्ष्य लक्षण अलक्ष्य में, व्यापक दीखे जान ।
अतिव्याप्ति दोष ताको कहे, सींग खुर वत मान ।।८०।।
लक्ष्य में नही वर्तते, विलक्षण दृश्य होय ।
असँभव दोष पिछानिये, बुद्धि सम्मत कह सोय ।।८१।।

।। तीन प्रकार के वाद ।।

गुरू शिष्य के बीच में, होवे ज्ञान सम्वाद ।
शास्त्र सम्मत सो जानिये, बोद्ध हेतु सोई वाद ।।८२।।
युक्ति प्रमाण की कुशलता, परमत खण्डन हेत ।
स्वमत मण्डन विधि वहन, जल्पावाद तिहीं केत ।।८३।।
रहित युक्ति प्रमाण के, स्वपक्ष मण्डन जोय ।
परपक्ष खण्डन विवाद ते, वितण्डा वाद वह होय ।।८४।।

।। तीन प्रकार के वेद के काण्ड ।।

कर्म काण्ड यज्ञादि है, श्रुति अस्सी हजार ।
सन्ध्योपासना काण्ड की, सौलह हजार विचार ।।८५।।

व्यवहारिक और परमार्थी, श्रुति ज्ञान के काण्ड ।
चार हजार श्रुति कही, चारों वेद प्रकाण्ड ।।८६।।

।। ज्ञान के मुख्य तीन साधन ।।

साधन चार युत जाईये, समर्पित हो प्रणिपात ।
सतगुरु मुख से श्रवण कर, दत्त चित्त बैठ उदात ।।८७।।
बैठ एकान्त एकाग्रह चित, मनन करे चित लाय ।
साधन हित चित धार के, निदिध्यासन कर भाय ।।८८।।
ब्रह्मवेता ब्रह्मनिष्ठ हो, ज्ञान दानी गुरू जोय ।
हेतु ज्ञान को सतगुरू, शुभ साधन संग होय ।।८९।।
मात पिता गुरू जनन को, नित्य नमावे शीश ।
आयु भाग्य यश ऐश्वर्य, पावे परम आशीश ।।९०।।

।। श्रवणादिक ज्ञान के तीन साधन का फल ।।

गुरू मुख से श्रवण किये, सँशय प्रमाणगत नाश ।
मनन किये ते नशे, प्रमेयगत सँशय ह्रास ।।९१।।
निदिध्यासन साधन किये, विपर्य सँशय मिटाय ।
दृढ निश्चय ब्रह्मात्म लखे, द्वन्दमय सृष्टि नशाय ।।९२।।

।। तीन प्रकार के सम्बन्ध ।।

सम्बन्ध सँयोग हो भाग्य वश, समवाय सम्बन्ध परिवार ।
तादात्म्य सम्बन्ध सुत पिता, अद्वितीय माँहि परिहार ।।९३।।

।। तीन प्रकार की सुषोप्ति ।।

सात्विक प्रवृत्ति सुखद हो, जाग्रत सुषोप्ति सोय ।
राजस प्रवृत्ति दुखःमय, स्वप्न सुषोप्ति जोय ।।९४।।
तामस प्रवृति अज्ञान में, प्रगाढ़ सुषोप्ति जान ।
भव भ्रमण पावत रहे, अन्तकाल पहिचान ।।९५।।

।। समाधि में तीन सुषुप्त काल ।।

लय अवस्था सुषुप्ति, स्मृत्ति मूर्छा थाय ।
जड़ समाधि सुषुप्ति, योग पद्धति दरशाय ।।९६।।

।। तीन प्रकार की स्वप्नावस्था।।

सत्य दर्शन स्वप्न में, जाग्रत स्वप्न कहलाय ।
रज्जु सर्पादिक भांति हो, स्वप्न दर्श दिखाय ।।९७।।
दृष्ठ स्वपन विस्मरण हवे, जग परिवार की भूल ।
सुषोप्ति स्वप्न अज्ञवृत, अवस्था भेद का रूल ।।९८।।

तीन प्रकार की जाग्रत

जाग्रत में जाग्रत वहीं, ब्रह्म ज्ञानी तत रुप ।
जाग्रत में स्वपना शुन्य, जाग्रत सुषोप्ति तम कूप ।।९९।।
विधिगत त्रय दशा इहि, नाना हो प्रस्तार ।
बारह भेद योही बने, गुरू मुख ज्ञान विचार ।।१००।।

।। तीन प्रकार के ज्ञान प्रतिबन्धक ।।

सँशय भ्रान्ति, विपरीत में, असँभावना भेद ।
नाना भेद फेला यही, ले अज्ञान अनुच्छेद ।।१०१।।

।। तीन ज्ञानादि के हेतु साधन ।।

विवेक अरु वैराग्य दृढ, उपशम सम्पति जान ।
या बिन वाच्यार्थ सभी, शास्त्र सन्त विधि मान ।।१०२।।

।। चार दोष ।।

कर्णापाटव प्रमाद भ्रम, लोभ जान लो चार ।
वक्ता ग्रन्थ कविता मध्य, यही दोष दो टार ।।१०३।।

टिप्पणी
कर्णापाटव = इन्द्रियों का दोष । प्रमाद = भूल । भ्रम= सँशय । लोभ= धन का लालच

।। समाधि के चार विघ्न ।।

रसास्वाद काषाय लय, विक्षेप सहित यह चार ।
सुमिरण ज्ञान रु ध्यान में, विघ्न यही दो टार ।।१०४।।

।। चार प्रकार की मुक्ति ।।

सालोक्य सामिप्य सारूप्य, सायुज्य मुक्ति चार ।
सार्ष्ठिता के द्वय भेद को, जाणे जाननहार ।।१०५।।

।। चार प्रकार के भक्त ।।

दुःख में हरि स्मरण करे, सो आर्त कहलाय ।
मनोकामना से भजे, भक्त अथार्थी गाय ।।१०६।।
तत्व जिज्ञासा हित भजे, सो जिज्ञासु जान ।
जीवन्मुक्त विद्वान सो, ज्ञानी भक्त बखान ।।१०७।।

।। चार ज्ञान प्रतिबन्धक ।।

विषयाशक्ति बुद्धि माँद्य अरु, कुतर्क दुराग्रह जान ।
प्रतिबन्धक चव ज्ञान के, हठ सहित तज मान ।।१०८।।

।। चार विधि से मानव आयु का अवस्था विभाजन ।।

वीर्यरक्षण विद्या ग्रहण, ईश्वर चिन्तन होय ।
ब्रह्मचर्य आश्रम प्रथम, जीवन शैली जोय ।।१०९।।
विवाहित जीवन पाय के, पालन करे व्यवहार ।
गृहस्थ आश्रम वही जानिये, बिन्दु रूप सँसार ।।११०।।
ब्रह्मचारी वृत से रहे, सँतति योग्य बनाय ।
भजन करे उपशम रहे, वानप्रस्थाश्रम सो गाय ।।१११।।
मोह तजे मन को सधे, प्रपँच दूर नशाय ।
विरक्त भाव कुल को तजे, सो सन्यास कहाय ।।११२।।

।। चार प्रकार के पुरुषार्थ (फल) जीवन के उद्देश्य ।।

शुभ कर्म सकामता, अथवा हो निष्काम ।
एक वार फल देत है, धर्म पुरुषार्थ धाम ।।११३।।
इहि लोक परलोक हित, धर्म या धन कमाय ।
भोग साधन के लिये, अर्थ पुरुषार्थ थाय ।।११४।।

लोक या परलोक की, भोग वासना भोग ।
साधन उद्यम जो करे, काम कहत है लोग ।।११५।।
प्रपँच निवृत्ति साधना, आवागमन नशाय ।
मोक्ष पुरुषार्थ जो चहे, विरले मुमुक्षतत्व पाय ।।११६।।

।। चार अन्तस्थ निवृत्ति साधन ।।

विषयाशक्ति की निवृत्ति, हेतु करे उपाय ।
उपशम साधन परिणाम है, निश्चय मन वश थाय ।।११७।।
बुद्धि मन्दता निवृत्ति, गुरू मुख श्रवण होय ।
कुतर्क निवृत्ति के लिये, मनन योग लखाय ।।११८।।
विपरीत भावना के विषै, दुराग्रह निवृत्ति होत ।
निदिध्यासन के किये, साक्षात्कार की ज्योत ।।११९।।

।। चार प्रकार के प्रलय ।।

नित्य नैमित्तिक महाप्रलय, प्राकृत्तिक विधि सँचार ।
आत्यंतिक प्रलय ज्ञान से, प्रलय चार प्रकार ।।१२०।।

।। चार प्रकार की खाणी ।।

जरायुज अण्डज स्वेदज, उद्भिज खाणी चार ।
नर पशु पक्षी वृक्ष जूँ, चौरासी जावण के द्वार ।।१२१।।

।। चार पूजा पात्र ।।

स्वधर्म निष्ठ हरिदास ओ, ब्रह्मनिष्ठ मुमुक्षू चार ।
पूजा पात्र पुण्यात्मा, मोक्ष दिलावन हार ।।१२२।।

।। चार मन निरोध के साधन ।।

शम सन्तोष सतसँग में, अहँ का करो विचार ।
मन सँयम की साधना, शास्त्र सन्त उचार ।।१२३।।

।। चित शुद्धि के चार उपाय ।।

सर्व वासना त्याग दे, सन्त सानिध्य लाग ।
प्राणायाम नित साधना, अध्यात्म चिन्तन मन राग ।।१२४।।
मन वश करने हेतु यह, चित शुद्धि चार उपाय ।
रामप्रकाश सन्त शास्त्र में, गीता स्पष्ठ लखाय ।।१२५।।

।। चार प्रकार के स्पर्श ।।

शीत उष्ण कोमल कठिन, इंद्रिय स्पर्श जान ।
त्वचा के उपभोग यह, पृकृत्ति गुण पहिचान ।।१२६।।

।। पाँच प्रकार के कर्म ।।

नित्य नैमित्तिक प्रायश्चित, काम्य निषिद्ध यह जान ।
पाँच प्रकार के कर्म यह, शास्त्र सन्त बखान ।।१२७।।

।। पाँच प्रकार से कर्म विधि ।।

स्नान सन्ध्यादि साधना, जीविकोपार्जन जान ।
नित्यकर्म ताहि कहै, करने आवश्यक मान ।।१२८।।
किसी को निमित्त पाय के, करें कर्म परधान ।
नैमित्तिक कर्म ताहि कहै, फलप्रद कहै सुजान ।।१२९।।

यज्ञ यागादिक जो करे, कामना पूर्ति हेत ।
काम्य कर्म ताको कहै, तृतीय कर्म यह खेत ।।१३०।।
पाप कर्म की निवृत्ति, नाना किये विधान ।
प्रायश्चित कर्म ताही कहै, विविध उपाय सँधान ।।१३१।।
ब्रह्म हत्यादि निषेध जो, अवैदिक अप्रिय जान ।
निषिद्ध कर्म ताहि कहे, पँचधा कर्म पिछान ।।१३२।।

।। पञ्च प्रकार के प्रयोजन ।।

सर्व प्रपँच मय दुखःन की, निवृत्ति होय मन हान ।
सँकल्प विकल्प रहित चित, नित परमानन्द महान ।।१३३।।
विसँवादाभाव तप साधना, ज्ञान रक्षा सतसँग ।
अपनी मौज विचरत मही, सर्व मोह भ्रम भँग ।।१३४।।

।। व्यवहारिक सम्बन्ध ।।

जातक वँशज वर्ण से, कमर्ज बोधिक जान ।
पाँच सम्बन्ध व्यवहार में, परिचय होवत मान ।।१३५।।

।। ईश्वर के छः ऐश्वर्य ।।

उत्पति प्रलय आगति गति, विद्या अविद्या जान ।
छः ऐश्वर्य ईश के, रामप्रकाश पहिचान ।।१३६।।

।। सात प्रकार के चेतन ।।

प्रमाता प्रमेय प्रमाण वर, प्रमा जीव ब्रह्म ईश ।
चेतन सात प्रकार लख, नाना उपाधि अवनीश ।।१३७।।

।। सप्त प्रकार के व्यशन ।।

जूआ माँस वैश्या मधु, जीव हिंसा पर नार ।
सप्त व्यशन चोरी तजो, यही नरक के द्वार ।।१३८।।

।। सात प्रकार के साँसारिक सम्बन्ध ।।

मामा मौसी मात सुत, सगे सम्बन्धी जान ।
माता के पक्ष मे गने, तीन प्रकार के मान ।।१३९।।
बड़े बाप काका भूआ, पिता अँश से मान ।
पितृ पक्ष से चार ये, भाई बहिन ले जान ।।१४०।।

।। इतिश्री रामप्रकाश वेदान्त दोहावली अन्तर्गत अष्टम् वल्ली समाप्त ।।

श्री रामप्रकाश वेदान्त दोहावली

॥ नवम् वल्ली प्रारम्भ ॥

।। ज्ञानी की लक्षण परीक्षा ।।

अक्रोधी वैरागी क्षमा, दया जितेन्द्रिय अडोल ।
निरलोभी दाता निडर, प्रिय वाणी सत बोल ।।१।।
परहित चिन्तक शोक बिन, आशक्ति रहित निष्काम ।
निर्द्वंदी निष्प्रह चित, निर्पक्षी सुखधाम ।।२।।

।। तीन प्रकार के ज्ञानी ।।

वर ज्ञानी सन्त रूप में, नित्य आवे जग माहि ।
नित्यावतारी पूज्य वर, चतुर्थ भूमि पाहि ।।३।।
ज्ञानी श्री वरियान जो, नैमित्तिक हो जग आय ।
पँचम भूमिका ज्ञान की, विरले पहुँचे जाय ।।४।।
वरिष्ठ ज्ञानी मुक्ति मय, आवागमन नही आय ।
भूने कण वत दीखते, ब्रह्मात्म आप समाय ।।५।।
मन वाणी चिन्तन परे, कहन श्रवण नही होय ।
ब्रह्मानन्द मस्ती सदा, द्वन्द द्वैत को खोय ।।६।।
वरिष्ठाति वरिष्ठ सो, तुरिय तत्व अनुरूप ।
देहपात पर ब्रह्ममय, बूँद समुद्र स्वरूप ।।७।।
ब्रह्मज्ञानी ब्रह्म रूप है, भूने अन्न समान ।
भूख मिटे ऊगे नही, निर्वासन निरवान ।।८।।
आप बन्धानो आप ही, भ्रम वासना साथ ।
कर्म करो निर्वासना, हरि सुमिरण गुरू गाथ ।।९।।

।। ज्ञानी के कर्म वितरण ।।

प्रारब्ध अनुसार कर्म जो, जीववृत्ति से होय ।
अशुभ कर्म कदाचित बने, निन्दक ले जावे जोय ।।१०।।
ज्ञानी के शुभ कर्म का, लेखा असीम अनन्त ।
ज्ञान दान वर ध्यान से, जप तप वेद पठन्त ।।११।।
नित्य स्वभाविक जो करे, पाठ पूजा आनन्द ।
व्यर्थ चेष्ठा हीन रह, ब्रह्मवेता निष्फन्द ।।१२।।
एक अज्ञानी को ज्ञान दे, सो है पृथ्वी दान ।
अथाह पूण्यार्जन करे, ज्ञानी ब्रह्म समान ।।१३।।
कष्ट देत निन्दा करे, झूठ कपट ठगी हेत ।
जगत भाव से नेह कर, पाप बाँट हर लेत ।।१४।।
करे आरती वँदना, पूजा कर दे भेंट ।
भाव भक्ति उर मे धरे, सो पूण्य ले ऐठ ।।१५।।
जैसी करणी जो करे, वह मजदूरी पाय ।
दुष्ट पाप न को हरे, सेवक पूण्य ले जाय ।।१६।।

पूण्य कर्म अथाह से, सेवक कुछ ले जाय ।
पूण्य बकाया जो बचे, पृकृत्ति रखे जमाय ।।१७।।
नित्य कर्म से सन्त आवते, नित्यावतारी होय ।
योगमाया थित कर्म से, निमित्त पुरुषोत्तम जोय ।।१८।।
सन्त न आव न जावते, ब्रह्म स्वरूप समाय ।
कर्म वितरण सब होत है, कारण सभी जलाय ।।१९।।

।। ज्ञानी की सहज अवस्था ।।

प्रतिपल सहज समाधि में, निष्प्रपँच सहज स्वभाव ।
प्रारब्ध जीवन में रहे, जाग्रत जाग्रत भाव ।।२०।।
उद्यम बिन प्रयोजन सफल, सम दृष्टि दीदार ।
मरजीवा मस्तान हो, हरदम ब्रह्म विचार ।।२१।।

।। ज्ञानी की तत्वनिष्ठा ।।

देह अध्यास के भ्रम षट्, मिटे भ्रान्ति सँदेह ।
द्वन्द्वात्मक स्तिथि तजी, दृढ ब्रह्मज्ञान सनेह ।।२२।।
राव रँक शँका मिटी, कर्म धर्म नही लाग ।
रामप्रकाश ब्रह्मात्म भयो, नही राग अनुराग ।।२३।।

।। ज्ञान-समाधि बाधक अन्तःकरण उपाधियाँ ।।

तीन ग्रन्थी अज्ञान की, चार विघ्न मन मांहि ।
पाँच चित की भूमिका, बिन निवृति गत नांहि ।।२४।।
पँच क्लेश मति जाहि में, बासठ अविद्या प्रकार ।
सँचित आगामी कर्म सो, निवृत हुए निस्तार ।।२५।।
सँशय दोय प्रकार के, चेतन भिन्नता अज्ञान ।
यह सब जब ना मिटे, तब तक होय न ज्ञान ।।२६।।
षट प्रकार के देह भ्रम, पाँचों अन्तर विकार ।
यह निवृत ते भ्रम क्षय, रामप्रकाश निस्तार ।।२७।।
जब तक भ्रान्ति अध्यास है, तब तक बन्धन माँहि ।
षट् उर्मियाँ उर बसे, मुक्ति स्वप्ने नाँहि ।।२८।।

।। तादायम्य स्वरूप ।।

जल ओला बर्फ एक ही, उपाधि नाम अनेक ।
तादात्मय सो जानिये, सोना भूषण एक ।।२९।।
कनक भूषण लोह शस्त्र मे, सूत धागा पट जाण ।
अन्योन्याश्रित रहे, सो तादात्मय आण ।।३०।।
एक रह दूजा रहै, भिन्नाभिन्न ना होय ।
दोनों भासे उपाधि ते, सो तादात्मय जोय ।।३१।।
ब्रह्म बिना जग ना रहे, बिन पृकृत्ति नही ईश ।
एकाश्रित मे जो रहे, रामप्रकाश मनीश ।।३२।।
लिखा लिखी सब कथे, अलेख लिखे ना कोय ।
निरबाणी बाणी कहे, सो विरला सन्त होय ।।३३।।

घट मठ कि सब कहै, अवघट कहै संत कोय ।
रामप्रकाश अवघट लखे, सहजे मुक्ति होय ।।३४।।
अपनी मस्ती में रहे, नित्यानन्द उर माय ।
सुख स्वरूप प्रारब्ध पर, गरज गुलामी नाय ।।३५।।
मही विचरत है द्वन्द बिन, नही हर्ष नही शोक ।
आज मरो या युग धरो, आस नही परलोक ।।३६।।
यश अयश स्तुति निन्दा, लक्ष्मी जाय समावेश ।
हर्ष शोक मन के गये, आनन्द रहे हमेश ।।३७।।
अकथ कथे अभख भखे, निर अहँकारी कोय ।
अबाणी की बाणी कहे, रामप्रकाश कोई होय ।।३८।।
सुधा ब्रह्मानंद रस भरा, सतगुरू दिया पिलाय ।
कछु पिये झुक झुक परे, रामप्रकाश मिल जाय ।।३९।।

।। जनम मरण का कारण एवँ उपसँहार ।।

युग इन्द्रिय अन्तःकरण, प्राण प्रकृति अज्ञान ।
अष्ठपुरी कारण यही, जनम मरण परधान ।।४०।।
अन्तस्थ में चिदाभास है, सात अवस्था युत जान ।
जन्म मरण कारण यही, रामप्रकाश ले जान ।।४१।।
अन्त:करण मन प्रथम का, सँकल्प विकल्प स्वभाव ।
जब तक यह सब ना मिटे, तब तक आवन जाव ।।४२।।
बुद्धि में पँच क्लेश है, जब तक मिटते नाहि ।
तब तक मुक्ति दूर है, आवागमन है जाहि ।।४३।।
चित भुमिका तीन की, खटपट मिटती नाहि ।
एकाग्रता निरुद्ध बिन, जरा मरण दरसाहि ।।४४।।
अविद्या वृत अज्ञान के, समुचित भेद है बीच ।
आवागमन छूटे नही, रामप्रकाश यह कीच ।।४५।।
चार समाधि विघ्न है, अन्त:करण उपाधि ।
रामप्रकाश कैसे लहै, वाच्यार्थी समाधि ।।४६।।
पाँच कोश आवर्ण महा, जब तक उघरे सुधरे नाय ।
रामप्रकाश कैसे लखे, आतम परदे माय ।।४७।।
पांच प्रयोजन के बिना, ज्ञान ध्यान सब रेत ।
रामप्रकाश साधन साधे, प्रयोजन के हेत ।।४८।।
सुक्ष्मतम है अष्ठपुरी, जब तक जलती नाहि ।
रामप्रकाश निश्चय लखो, आवागमन के माहि ।।४९।।
चिदाभास कुटस्थ का, स्वरूप समझता नाहि ।
तब तक क्या अनुमान है, रामप्रकाश समझाहि ।।५०।।
और बन्धन अनेक से, उलझे विकार अनेक ।
थोथी बातों ना सरे, रामप्रकाश लख एक ।।५१।।
कृपा सतगुरू सन्त की, श्रद्धा साधन आय ।
रामप्रकाश अज्ञान सो, दुर्मत्ति दूर नशाय ।।५२।।

सतगुरू उतमराम जी, सन्तजन भये दयाल ।
रामप्रकाश अघतम गले, ताते भया निहाल ।।५३।।
सतगुरू मिले उत्तमेश हरि, सँशय दिया मिटाय ।
रामप्रकाश निश्चय किया, आप में आप समाय ।।५४।।
ओम अहंब्रह्म शांति मे, शान्त भय मान चित ।
कृपा गुरू उतमेश कि, चित भया सत चित ।।५५।।

~सोरठा~

अचल राम की लहर, उतमराम में आ परी ।
रामप्रकाश गुरु महर, वही लहर यामें धरी ।।५६।।
अचल राम की कथा, उतमराम ने जो कही ।
रामप्रकाश में है यथा, तथा यथावत कही कथा ।।५७।।
शब्द शास्त्र प्रथम पढे, गीता उपनिषद ग्रन्थ ।
नीति स्मृत्ति के पढे, फिर वेदान्त का पन्थ ।।५८।।
वेदान्त साधन अटपटा, झटपट समझ न आय ।
चटपट समझे गुरू मुखी, खटपट झटपट जाय ।।५९।।
श्रद्धा बिन साधन नही, सँयम मन वच काय ।
अन्त:करण बाधा हरो, तिहूँ ताप नशाय ।।६०।।
नीति बिन वेदान्त पढ, सुगरा निगुरा होय ।
बिन मर्यादा का पशु, रह्या मानखो खोय ।।६१।।
वाच्यार्थ वेदान्त से, मुक्ति नाही होय ।
साधन श्रद्धा दृढता, विरला पावे कोय ।।६२।।
युग शून्य धातु तत्व लिख, सँवत श्री धनु मास ।
शशि कला शशि वार मे, कृत्ति रामप्रकाश ।।६३।।
रामप्रकाश दोहावली, कियो वेदान्त विचार ।
बाल बोधनी कृत्ति यह, बुद्धि जन लेहु सँभार ।।६४।।
चार दोष जो ग्रँथ के, वर्णाक्षर हो कोय ।
कर्णापाटव सुधार हूँ, रामप्रकाश के होय ।।६५।।
युग सहस पिचहतर सँवत, पौष पूर्णिमा जान ।
रामप्रकाश दोहावली, सोमवार इत्ति आन ।।६६।।
कृत्ति रामप्रकाश वर, वैदान्त दोहावली नाम ।
शूक्ष्म प्रक्रिया लघु कहि, पूर्ण ब्रह्म विश्राम ।।६७।।
इक्कीस जनवरी ईसवी, दोय हजार उन्नीस ।
सोमवार दोहावली, रामप्रकाश मनीष ।।६८।।
रामप्रकाश कृत्ति सही, सतगुरू की प्रसाद ।
पढे सुने सीखे सही, मन का हरे विषाद ।।६९।।
नौ सौ अड़सठ दोहरे, अटल वल्ली नौ खास ।
पढे सुने उर कण्ठ धरे, शुद्ध मति रामप्रकाश ।।७०।।
कण्ठ धरे जडता हरे, करे मति बोध उजास ।
ब्रह्मज्ञान उर प्रकट हो, घट मे रामप्रकाश ।।७१।।

कवि नही मति श्रेष्ठता, नही कविता का ज्ञान ।
निज मति के बोध हित, रामप्रकाश गुरू ध्यान ।।७२।।
उतमराम श्री सतगुरू, बाल बोध दीयो ज्ञान ।
रामप्रकाश निज मति लखी, लिख्यो मति अनुमान ।।७३।।
दूरभाष यन्त्र में सदा, लिखते रहा अभ्यास ।
जेठूदास सँकलित करी, रचना रामप्रकाश ।।७४।।
वेदान्त दोहावली ग्रन्थ है कृति रामप्रकाश ।
लघुमति अति गति रति, क्षमहु विद्वत कवि खास ।।७५।।

~ कुण्डलिया ~

दोहे नौ सौ तिरासी में, एक कुण्डलिया छन्द ।
कण्ठ धरे जड़ता हरे, रहे न वह मति मन्द ।।
रहे न वह मति मन्द, अध्यात्म शक्ति आवे ।
पावे पद निरवाण, निश्चल मन शान्ति लावे ।।
रामप्रकाश वेदान्त मय, दोहावली ग्रन्थ मन मोहे ।
सहस्र दो छिहतर सम्वत, नबे वरष आयु सुख दोहे ।।१।।

।। इत्तिश्री रामप्रकाश वेदान्त दोहावली अन्तर्गत नवम् वल्ली समाप्त ।।

।।नीति उपदेश।।

सन्त रु सतगुरू ईश ये, तीनों एक स्वरूप ।
नमन करो मरियाद से, कटे भ्रम तम रूप ।।१।।
सतगुरू समर्थ शरण में, निकले मन की खोट ।
श्रद्धा सँग विश्वास हो, लगे नही भव चोट ।।२।।
ओम शब्द को धनुष कर, प्रणव त्वँचा खींच ।
जीवात्म शर लक्ष्य करो, ब्रह्म तन्मय के बीच ।।३।।
उतम जीवन धारिये, उतम कर व्यवहार ।
लोक परलोक उतम बने, जग में होय सुधार ।।४।।
युगल गूरू पद वन्दते, हृदय पाया अभिराम ।
उतम आश्रम जोधपुर, कागापथ विश्राम ।।५।।
सतगुरू उतमराम जी, शिष्य रामप्रकाश ।
गूरू रघुवरप्रसाद ते, राघवप्रसाद विकाश ।।६।।
उतमराम गुरू से पढा, वेदान्त ज्योतिष खास ।
रघुवरप्रसाद से पढा, व्याकरण पिंगल भास ।।७।।
बाइबिल कुरान पुरान बहु, उपनिषद धर्म के ग्रन्थ ।
साधन पुरुषार्थ प्रचार में, पढे सिद्धांत बहु पन्थ ।।८।।
श्रवण मनन किये ध्यान से, निदिध्यासन सिद्धांत ।
तर्क शास्त्र इत्यादि से, रामप्रकाश चित शान्त ।।९।।
जीवन वृत सतगुरू कृपा, भजन भाव मे पूर ।
रामप्रकाश निज ज्ञान में, पायो आनन्द भरपूर ।।१०।।
सभी सन्त ग्रन्थन मतो, सभी पन्थ मत को सार ।
हरि भजो प्रपँच तजो, मानव जनम सुधार ।।११।।
वेद सिन्धु सन्त मेघ सम, वाणी मृदु रस तोय ।
पीवत साधु जिज्ञासु जन, रामप्रकाश उर होय ।।१२।।
सतगुरू अनुभव मेघ सम, वाणी अमृत तोय ।
पीवे जिज्ञासु प्रेम रस, आतम दर्शन होय ।।१३।।
ईश्वर के अहसान का, करो सदा अहसास ।
नाम जपो हरदम सदा, राख हृदय विश्वास ।।१४।।
तन मन धन वाणी सदा, करो सदा सदुपयोग ।
सेवा श्रद्धा सेवा साधना, सतसँग समय के योग ।।१५।।
जीवन को उज्जवल करो, शुद्ध व्यवहार अपनाय ।
हरि भजो आनन्द करो, लोक परलोक सहाय ।।१६।।
धर्म कार्य नित ही करो, सुखकारक जो होय ।
और न दुःख हर लीजिये, हानी कब हूँ ना जोय ।।१७।।
हरि गुरू मिले बसन्त है, हरि विमुख बस अन्त ।

पाप ताप होली जले, राम भजो सँग सन्त ।।१८।।
स्नेह मिलन सब से करो, मनुष जनम को पाय ।
यही अवसर है आज का, अवगुण दूर भगाय ।।१९।।
चित वित जीवन तरुणता, चँचल थिर न रहात ।
रामप्रकाश यश अमर है, कीर्ति सँग्रह कर तात ।।२०।।
स्वयँ की झूठी बात भी, लागत मृदु अति नीक ।
रामप्रकाश और न कही, लगे हलाहल फीक ।।२१।।
योग यज्ञ तप तीर्थ व्रत, केता करो सुजाण ।
उतम राम के भजन बिन, कबहूँ न होय कल्याण ।।२२।।
दुर्जन जन है कोयला, सँग किये जल जात ।
रामप्रकाश कालिख लगे, जले गले नही भात ।।२३।।
आन्तरिक शक्ति के बिना, कारज कछू ना होत ।
रामप्रकाश चन्दन मिले, बाँस भिदे ना पोत ।।२४।।
यौवन जीवन धन प्राण, चँचल थिर न रहात ।
रामप्रकाश जप कीर्ति, नाम धर्म रह जात ।।२५।।
हँस चला महरान से, अज्ञ बसा वन जाय ।
बुगला मान शिकारी ने, परख बिना गति थाय ।।२६।।
ओछी सँगत मूढ जन, ज्ञान हीन बिच जाय ।
ज्ञानी बसे जो परख बिन, दुर्गति बेग ही पाय ।।२७।।
सुखी रहो सँसार में, तन मन धन कमाय ।
चलते रहो शुभ मार्ग में, मनुष्य जनम को पाय ।।२८।।
देव पत्थर में मानते, मान्यता सब की जान ।
मानव में मानव नहीं, देखत मुर्ख निदान ।।२९।।
तन मन इंद्रिय वश करो, दोष चँचलता त्याग ।
ध्येय ध्याता हो ध्यान मय, तन्मय तत्पर लाग ।।३०।।
वँश विद्या धन वृद्धता, गुण तप अरु ज्ञान ।
एक ते एक यह श्रेष्ठ लख, पावत सुख सम्मान ।।३१।।
धन दान ते धन बढे, मान दान ते मान ।
विद्या दान ते ज्ञान वृद्धि, त्रिविध मार्ग कल्यान ।।३२।।
समय सता तन सँपति, नित्य रहे ना साथ ।
समझ स्वभाव रु कर्म बल, सँबँध रहेगी गाथ ।।३३।।
प्रिय अप्रिय को नही, सभी बराबर मोहि ।
श्रद्धा प्रेम विश्वास से, भजे सो मेरा होहि ।।३४।।
जिन्हे हीरे से प्रेम था, हीरे मिले उन पास ।
जिन्हें विश्वास गुरुदेव का, हीरे बन गये खास ।।३५।।
करते वह कहते नही, कहते सो बकवास ।
अर्थ पिटारी के खुले, कौडी रहे ना पास ।।३६।।
कोष तिया भोजन भजन, पर्दा रखो पिछान ।
जहाँ तहाँ ना गाईये, महिमा गुणन बखान ।।३७।।

अपमान से क्रोधित नही, क्रोधित कठोर ना होय ।
वही श्रेष्ठ जन जगत में, मानव के गुण जोय ।।३८।।
गुरु मर्यादा भूल के, औरन को उपदेश ।
वाचक दम्भी भव भ्रमते, डूबत रहे हमेश ।।३९।।
रोगी रथी नारि वृद्ध, स्नातक उठाये भार ।
शव दुल्हा मत रोकिये, मार्ग देहु विचार ।।४०।।
देकर या छोड़ कर, जीव जाय परलोक ।
पृकृति के दो नियम है, साथ न जाय रति थोक ।।४१।।
देह घड़ी अरु सुन्दरता, सस्ते सभी महान ।
चरित्र जीवन समय का, महँगे सदा बखान ।।४२।।
भौतिक वाद में भय सदा, भवसागर की धार ।
अध्यात्म चिन्तन करो, निश्चय हो निस्तार ।।४३।।
वाणी कार्य विचार से, होती मानव पहिचान ।
नाम रूप नश्वर सदा, मिथ्यात्म अभिमान ।।४४।।
मात पिता गुरू देव को, नित्य नमाओ शीश ।
भजन करो निर्मल रहो, पावो परम आशीश ।।४५।।
भाव भरो आनन्द करो, हाजिर हरि के हेत ।
राजी रहसी रामजी, जीवन सफल हो खेत ।।४६।।
कस्तूरी की गन्ध सो, सीद्धि करण नही रीत ।
मानव गुण तद्विद्वि सदा, प्रसिद्ध सुगन्ध प्रतीत ।।४७।।
मानव जीवन अमोल है, रँच करो मत भूल ।
फिर चौरासी भोगने, पड़सी नाना शूल ।।४८।।
बरसाती बहु साँपला, शेष धरणीधर कोय ।
भेषी सन्त अनन्त है, ज्ञानी विरला होय ।।४९।।
सुखी रहो नित शुभ करो, तन मन हरो विषाद ।
गुरू जन आशीर्वाद से, सदा रहो आबाद ।।५०।।
तन के वैद्य और है, मन के वैद्य और ।
सामर्थ्य सतगुरू शरण में, पाप ताप क्षय घौर ।।५१।।
सामर्थ वैद्य है सतगुरू, तुरँत हरे भव रोग ।
तन मन व्याधि सब हरे, निर्भय करे निरोग ।।५२।।
समग्र तारा शशि उदय, सहस् देव उर आय ।
अज्ञ अँधारो रवि बिना, गुरू बिन भ्रम न जाय ।।५३।।
निज समाज को छोड़कर, मिले अन्य में जाय ।
अधमी नृपवत नष्ट हो, रक्षक कोई ना थाय ।।५४।।
जगत धर्मशाला ईश की, विचित्र यहाँ की चाल ।
नित यात्री आ जात है, छोड़ देह वित माल ।।५५।।
जन का मन जो मस्त है, समस्त सुख उन पास ।
व्यस्त रहे शुभ कर्म में, स्वस्थ रहे विश्वास ।।५६।।
भारत भूमि में जन्म सो, धन्य धरा कुल गाम ।

शुभ करणी आशीश से, करो अमर यश नाम ।।५७।।
भवजल यह सँसार है, भँवर जाल व्यवहार ।
मन मलीन मोहादि में, शुद्ध साधन कर टार ।।५८।।
मात पिता गुरू वृद्ध जन, नमन किये यश होय ।
आयु भाग्य ऐश्वर्य बढे, सन्त शास्त्र कहै जोय ।।५९।।
मान लिया तो हार है, ठान लिया तो जीत ।
मन माने निज ब्रह्म है, निजानन्द परतीत ।।६०।।
मात पिता गुरू वृद्ध जन, नमन किये यश होय ।
आयु भाग्य ऐश्वर्य बढे, सन्त शास्त्र कहै जोय ।।६१।।
भवजल यह सँसार है, भँवर जाल व्यवहार ।
मन मलीन मोहादि में, शुद्ध साधन कर टार ।।६२।।
तन मन को उज्जवल रखो, व्यशन दोष निवार ।
उतम की सीख यह, जग में हो निस्तार ।।६३।।
उयम सतगुरु ज्ञान से, पावे जीव कल्याण ।
उतम शिष्य साचा तरे, साधन भक्ति जाण ।।६४।।
उतम काम नित कीजिये, उतम हृदय विचार ।
उतम सँत का सँग कर, भव से उतरो पार ।।६५।।
धर्म ध्वजी मत बनो, करो धर्म के काज ।
पापों को फल भुगतणो, कठिन न्याय धर्मराज ।।६६।।
शुभ कर्म नित ही करो, बुरे करो मत कोय ।
सुखी जीवन जग में रहे, रामप्रकाश कहै जोय ।।६७।।
आनन्द का भण्डार है, अपने भीतर देख ।
शुद्ध स्वरूप अनूप है, द्वन्द दूर कर पेख ।।६८।।
हरदम हम है पास, निश्चय कर उर में धरो ।
करो यही विश्वास, कभी ना रहता दूर हूँ ।।६९।।
सत चित आनन्द में, मन माया मानँद ।
जड़ चेतन कल्पित सभी, नाम रूप बिन छँद ।।७०।।
प्रतीष्ठा हिम्मत से मिले, करो पुरुषार्थ मान ।
विरोध हूए प्रगति बढे, रामप्रकाश कहै जान ।।७१।।
कपड़ा जल से भीगता, सोतो बदलते जाय ।
जो स्वेद ते भीगता, इतिहास बदलता आय ।।७२।।
धन्य मातृकुल पितृकुल, धन्य धन्य गुरू देव ।
धन्य भारत से राष्ट्र को, मानव जन्म धन्य एव ।।७३।।
शरणागत हरि गुरू रहो, सेवा समर्पण ध्यान ।
मानवता को सफल कर, होय जीवन कल्यान ।।७४।।
जो कहता करता नही, करता कहता अन्त ।
नाम जपे व्यवहार मे, सोई ग्रहस्थ में सन्त ।।७५।।
धन्य समय सतगुरू मिलन, सतसँग में सन्त आज ।
मानव तन तब सफल है, एक पन्थ दो काज ।।७६।।

व्यशन तजो सँगठित रहो, परिश्रम करो उदार ।
गुरूजन की सेवा करो, जीवन बने धनकार ।।७७।।
ज्ञान ध्यान गुरू सेव बिन, प्रयोजन बिन होय ।
यज्ञ रु तप बिन जप के, सफल होय नही कोय ।।७८।।
क्षर अक्षर निरक्षर वही, अनक्षर का विस्तार ।
भेद जाने कोई गुरूमुखी, भटकत फिरे गँवार ।।७९।।
क्षर विनसे बनते वही, परिवर्तन के रूप ।
सामान्य ब्रह्म भी लखो, भौतिक जड़ स्वरूप ।।८०।।
निरक्षर माया परे, मन वाणी के पार ।
परब्रह्म सत चित स्वयँ है, अक्षय अरूप अपार ।।८१।।
क्षर निरक्षर निर्णय कर, आप अरूप अथाह ।
काष्ठ जला स्वयँ इति, अग्नि वत यों दाहि ।।८२।।
क्षर अक्षर निरक्षर वही, अन अक्षर वह आप ।
चर अचर में रम रह्यो, राम रमणीय जाप ।।८३।।
पारख करके सतगुरू, फिर शरणागत लाग ।
व्यशन नशे से मुक्त हो, रामप्रकाश अनुराग ।।८४।।
सन्त हँसा सम ऊजला, निष्प्रही निरवाण ।
हँस भेष ~ बुगला बहु, कर पारख गुरु जाण ।।८५।।
भेष देख नही भूलिये, सन्त असन्त पहिचान ।
पाखण्ड राता बहु फिरे, लूटे धन सन्मान ।।८६।।
हँसा बुगला रँग एक है, कौआ कोयल एक ।
गुण अवगुण को जाणिये, रामप्रकाश विवेक ।।८७।।
सोना पीतल एक सम, मिश्री फिटकरी जान ।
तूम्बा ओ तरबूज को, रामप्रकाश पहिचान ।।८८।।
गरीब जो साची कहे, साच न माने कोय ।
अमीर जो झूँठी कहे, वाहजी वाहजी होय ।।८९।।
निर्धन गिरे पहाड़ से, कोई ना पूछनहार ।
धनपति के काँटा लगे, पूछे लोक हजार ।।९०।।
हँसा दर्शन दुर्लभ है, बुगला सरवर अनेक ।
भेषी सन्त अनन्त है, साचा सतगुरू एक ।।९१।।
जाति जनम से होत है, सो चौरासी लाख ।
मन से वरण धारण करे, चार शास्त्र की साख ।।९२।।
मृदुवाणी परिश्रम रता, धन दान में जाय ।
ताका जीवन सफल है, रामप्रकाश दरसाय ।।९३।।
जगत व्यवहार में शर्म है, भ्रम भूला सँसार ।
भूत प्रेत पितर भजे, आनधर्म यह भार ।।९४।।
जीवन यापन हेतु कर, कर्म धर्म यह जान ।
परम धर्म परमार्थ सो, रामप्रकाश कल्यान ।।९५।।
जब तक भ्रान्ति अध्यास है, तब तक बन्धन माँहि ।

षट् उर्मियाँ उर बसे, मुक्ति स्वप्ने नाँहि ।।९६।।
हिल मिल जाने, तासों मिल के जनावों हेत ।
आप को ना चाहे ताके, बाप को ना चाहिये ।।९७।।
बँके आगे बँकड़ा, दो बँके त्रिबँक ।
साधु आगे यों नमें, ज्यों राजा आगे रँक ।।९८।।

संस्कृत के कुछ श्लोक

वाणी रसवती यस्य, यस्य श्रमवती क्रिया ।
लक्ष्मी : दानवती यस्य,सफलं तस्य जीवितं ।।

अर्थात:- जिस मनुष्य की वाणी मीठी है, जिसका कार्य परिश्रम से युक्त है, जिसका धन दान करने में प्रयुक्त होता है, उसका जीवन सफल है।

सेवितव्यो महावृक्षः फ़लच्छाया समन्वित: ।
यदि देवाद फलं नास्ति,छाया केन निवार्यते ।।

अर्थात:- विशाल वृक्ष की सेवा करनी चाहिए क्योंकि वो फल और छाया दोनो से युक्त होता है। यदि दुर्भाग्य से फल नहीं हैं तो छाया को भला कौन रोक सकता है।

अनादरो विलम्बश्च वै मुख्यम निष्ठुर वचनम ।
पश्चतपश्च पञ्चापि दानस्य दूषणानि च ।।

अर्थात:- अपमान करके दान देना, विलंब से देना, मुख फेर के देना, कठोर वचन बोलना और देने के बाद पश्चाताप करना- ये पांच क्रियाएं दान को दूषित कर देती हैं।

यस्य नास्ति स्वयं प्रज्ञा, शास्त्रं तस्य करोति किं।
लोचनाभ्याम विहीनस्य, दर्पण: किं करिष्यति ।।

अर्थात:- जिस मनुष्य के पास स्वयं का विवेक नहीं है, शास्त्र उसका क्या करेंगे। जैसे नेत्रविहीन व्यक्ति के लिए दर्पण व्यर्थ है।

पृथ्वियां त्रीणि रत्नानि जलमन्नम सुभाषितं ।
मूढ़ेः पाधानखंडेषु रत्नसंज्ञा विधीयते ।।

अर्थात:- पृथ्वी पर तीन रत्न हैं- जल,अन्न और शुभ वाणी । पर मूर्ख लोग पत्थर के टुकड़ों को रत्न की संज्ञा देते हैं।

काव्यशास्त्रविनोदेन कालो गच्छति धीमतां ।
व्यसनेन च मूर्खाणां निद्रया कलहेन वा ।।

अर्थात:- बुद्धिमान लोग काव्य-शास्त्र का अध्ययन करने में अपना समय व्यतीत करते हैं, जबकि मूर्ख लोग निद्रा, कलह और बुरी आदतों में अपना समय बिताते हैं।

पण्डित पीताम्बर पुरूषोत्तम जी कृत सटीक भजन

टीकाकार स्वामी श्री रामप्रकाशाचार्य जी महाराज

।। पण्डित वर्य श्री स्वामी पीताम्बर पुरूषोत्तम जी महाराज ।।

एक परिचय बोध- पण्डित वर्य सन्त श्री पीताम्बर पुरुषोत्तम जी संस्कृत भाषा के परम विद्वान, कवि, ब्रह्मवेत्ता महात्मा ज्ञानी थे। आपके द्वारा कई ग्रंथों की रचना टीकाऐ प्रख्यात हुई -

१-पञ्चदशी पीताम्बरी टीका	६-वेदान्त स्त्रोत संग्रह टीका
२-विचार सागर टीका	७-चर्पट पञ्जरिका टीका
३-वृत्ति प्रभाकर टीका	८-मुक्ति पञ्चक टीका
४-सुन्दर दास जी कृत विपर्यय अंग की टीका	९-विज्ञान नौका टीका
५-मंगलाचरण की टीका	१०-आत्म पटक स्त्रोतम् टीका
११-आत्म चिन्तनम् टीका	१६-स्वानुभवादर्श स्त्रोतम् टीका

१२-निर्वाण दशकम् टीका
१३-आत्म पञ्चकम टीका
१४-हस्तामलकम स्त्रोतम् टीका
१५-काशी पञ्चक स्त्रोतम् टीका
१७-दक्षिणामूर्ति स्त्रोतम् टीका
१८-परा पूजा टीका
१९-मनिषा पञ्चक स्त्रोतम् टीका

स्वयं रचित ग्रंथ

१-विचार चंद्रोदय, २-पदार्थ मञ्जूषा, ३-वेदान्त विनोद (सप्त अंक)

अनन्त श्री बापूजी महाराज के परम शिष्य

श्री श्री १०८ श्री पण्डित वर्य पीताम्बर पुरूषोत्तम जी महाराज कृत रचना

भजन (१) राग प्रभाती पद समयानुसार

राम रुप है मेंरे सतगुरू, राम रुप है मेंरे रे ।
रमत चतुर्दश लोक लीलाकृत, दमन्त दोष बहुतेंरे रे ॥टेर॥
निज अनुभव जिन मोहि बताया, श्रूति स्मृत्ति शब्दहि टेंरे रे ।
कर्णरंध्र मग चले अंत तब, काम क्रोध लिये घेंरे रे ॥१॥
सत चित आनन्द रूप स्वयं निज, पूर्ण ब्रह्म ढण्ढेरे रे ।
तूं ही है अस कहयो कृपा करि, त्योहीं लयो तिहीं पेंरे रे ॥२॥
संशय भ्रमहि मिटे मन के सब, भये सुशान्त सुरोंरे रे ।
गुरु बापू पद पद्म पीताम्बर, लये गये भये फेरेर रे ॥३॥

-वेदान्त विनोद से उदघृत

शब्दार्थ-

राम = रमणीय, सुन्दर, रमता पुरूष, व्यापकचेतन । रमत = रमणकर्त्ता, व्यापक तत्व ।
चतुर्दस लोक = चौदह लोक। सात लोक नीचे के – १ अतल = (घुटना-जानू)। २ वितल=(जांघ)। ३ सुतल = (गुल्फ- गटे)। ४ तलातल = (पांव का अंगूठा)। ५ रसातल =(पांव पृष्ठ)। ६ तलातल (अंगूठा का अग्रभाग)। ७ महातल (पाताल)=पादतल । सातलोक उपर के- १ भूलोक (मूलाधार)। २ भुवलोक (लिंग देश)। ३ स्वलोक (नाभि देश)। ४ महलोक (मेरूदण्ड)। ५ जनलोक (मेरू कुहर)। ६ तपलोक (मेरूदण्ड नाल)। ७ सतलोक (युक्त बांक)। लीलाकृत = स्वलीला रचित, अभिन्न निमितोपादन कारण,ब्रह्म का विवृत,माया का परिणाम
दमन्त = दमन, संयम, निवृत । श्रूत्ति = वेदोक्त उपनिषदों द्वारा वर्णित वाक्यामृत उदघोष। स्मृति = विभिन्न ऋषियों द्वारा निर्मित युगधर्म मानव समाज की मार्गदर्शक जो २७ की सांख्या में है। कर्णरंध्र=श्रोत इंद्रिय के छेद। मग=द्वार से। ढण्ढेरे=ढूण्ढा,खोजा। त्योहिं=तैसे ही। तिहीं पेंरे=उसी

समय। तिहि =उसी,तात्कालिक। पेरे= पहरे, समय,काल। संशय =विपरीत भावना, असंभावना (प्रमाणगत, प्रमेयगत) इत्यादि। भ्रम = दुविधा, सन्देह, संशय, भुलावा।

राम रुप है मेरे सतगुरू, राम रुप है मेरे रे ।
रमत चतुर्दश लोक लीलाकृत, दमन्त दोष बहुतेरे रे ॥टेर॥

हमारे सतगुरू देव रामरूप (राम के समान तदरूप) ही है वे स्वलीला निर्मित चौदह लोक में देह लीला से रमण (भ्रमण) करते हैं और विश्ववहित (मानव समान के) सर्व दोष विकारों का दमन (निवारण) करते हैं।

राम महात्म

रामनाम समुत्पन्नः प्रणवो मोक्ष दायकः ।
प्रणवं कोचिदाहु वं बीज श्रेष्ट तथा परे ॥
ततु ते नाम वर्णाभ्या सीद्धि मापनोति मे मतम् ॥

-हारीत स्मृति से

अर्थात मोक्ष देने वाला सीधा साधारण रामनाम उत्पन्न प्रणव है, इसे कोई प्रणव या बीजाक्षर रां कहते हैं, जो जप करने में सर्व सिद्धि प्रदान करता है। यथा -

राम रामेति रामेति रमे रामे मनोरमे ।
सहस्त्र नाम ततुल्यं राम नाम वरानने ॥

- शिव -शिवा संवाद से

यथा-

तुलसी अपने राम को, रीझ भजे चाहे खीज ।
उलटा सुलटा नीपजे, ज्यों खेत न में बीज ॥

वन्दऊ नाम राम रघुवर को, हेतू कृसान भानू हिमकर को ।
विधी हरि हर मय वेद प्रान सो, अगुन अनूपम गुण निधान को ॥

- राम चरित मानस से

ऐसे स्वरूप में ही सतगुरू को राम रूप ही मानकर स्वीकार किया है।

गुरू है गोविन्द - गोविन्द गुरू दाता -
जीयाराम गुरू मिलत मिलाया, गोविन्द गुप्ताया ए ।

सन्तवानी से

निज अनुभव जिन मोहि बताया, श्रूति स्मृत्ति शब्दहि टेरे रे ।
कर्णरंध्र मग चले अंत तब, काम क्रोध लिये घेरे रे ॥१॥

भावार्थ – व्याकरण व्युत्पत्ति के अनुसार अनु + भव ,इन दो शब्दों का युग्म रूप अनुभव शब्द बना है। जिन सतगुरू श्री बापू जी ने अनु = पूर्वाचार्यो द्वारा अनुशासित शास्त्र ज्ञान और सतगुरू देव प्रदत

युक्तियों से प्राप्त आध्यात्मिक साधना से भव = होने वाली सत्य उक्ति से पूर्ण निज = अपना अनुभव ज्ञान मुझे (रचयिता श्री पीताम्बर दास - जिज्ञासु जन को) बतलाया – उपदेशित किया। जिस आध्यात्मिक ज्ञान को वेद की श्रवणित श्रुति और ऋषियों द्वारा कथित विभिन्न स्मृतियों के शब्दभंडार कथन (उचरित) करते है। वह सतगुरू प्रदत्त शब्दोच्चारण ध्वनि कानों के छेद के रास्ते अन्तःकरण तक चली, तब वासना जन्य समस्त कामनाओं सहित क्रोधादिक विकारों को घेर लिया अर्थात् सँसार से उलटा कर अपने आत्म स्वरूप की दिशा में पलट दिया।

सत चित आनन्द रूप स्वयं निज, पूर्ण ब्रह्म ढण्ढेरे रे।
तूं ही है अस कहयो कृपा करि, त्योहीं लयो तिहीं पेरे रे ॥२॥

भावार्थ –स्वयं अपना स्वरुप सत चित आनन्द पूर्ण ब्रह्म को (ढण्ढेरे=घोषित) प्रकट किया और कृपा करके ऐसा ही कथन किया कि वह तूं ही है, सत चित आनन्द ब्रह्म -जैसे महावाक्य श्रवन रंध्र में पाया तैसे ही अन्तस्थ में निश्चित कर लिया कि यही है।

सवैया-

सत चित आनन्द रूप अनूप है, एक अनन्त अथाह अपारा।
अस्ति रू भ्रांति प्रिय चित चेतन, अखण्ड अमाप अनन्त आधारा ।।
है अधिष्ठान सभी कर आश्रित, जीव रू ब्रह्माण्ड आश्रित सारा।
"रामप्रकाश" वहीं तूं तत्पर, रञ्चक द्वैत नहीं जल बीच विचारा ।।१।।

संशय भ्रमहि मिटे मन के सब, भये सुशान्त सुरोरे रे।
गुरु बापू पद पद्म पीताम्बर, लये गये भये फेरेर रे ॥३॥

भावार्थ – अन्तकरण में मन के संकल्प विकल्प सहित नास्तिकता रूपक अस्तवापादक - अभानापादक सहित बुद्धि के पांचो क्लेश एवं मन के अंगोपांग चित वृत्ति की तीन अवस्थाऐं निवृत्ति एवं दो सहयोगी साधन रूप अवस्थाऐ प्राप्त होने से मोहान्धकार की समूल अज्ञान निवृत्ति होने से शारिरिक षटभ्रम समस्त भौतिक भ्रम दूर हो गये और सभी अन्तकरण स्वत:शान्त होकर श्रेष्ठ गति के स्वर गुञ्जित होने लगे। रामरूप से सतगुरू देव श्री बापूजी के चरणकमल जो पीत वस्त्र से सम्पादित पीताम्बर कवि के तन्मय तदरूप होने से भव भय के (जन्म -मरण) फेरे=चक्कर गये =दूर हो गये।

सवैया-

सतगुरू राम स्वरूप समान ही, सतगुरू प्राण स्वरूप हमारा।
सतगुरू बापु के रज चरणाम्बुज, शिशु सम सेवक कृति उदारा ।।
सतगुरू ही परब्रह्म परमेश्वर, लोक परलोक आलोक अपारा।
रामप्रकाश वह एक अनन्त ही, आप बने रू दिखावन हारा ।।२।।

भजन (२) राग आसा पद सांगीत

सो कैसे कहिये ज्ञानी जांकी वृति विवेक विहानी ॥टेर॥
हरि गुरू भक्ति शमादिक साधन, धारी न बुद्धि विषय रस सानी।

जन्म अनत भोगि न अघानी ॥१॥
मोक्ष रूप साधन नहिं जानी, ज्ञान रूप साधन न पिछानी।
ज्ञेय वस्तु मन में नहीं आनी ॥२॥
देह अवस्था कोश जगत तै, चेतन को नहिं भिन्न लखानी।
निज तत्व असंग न गानी ॥३॥
त्वम पद को वाच्य लक्ष्य लखि, लक्ष्य दुहुन को एक न मानी।
अज्ञान जगत नहिं मानी ॥४॥
पीताम्बर कहै संशय भ्रम तजि, वृति न ब्रह्म रूप ठहरानी।
जहां नहिं पहुंचे मन बानी ॥५॥

- सो कैसे कहिये ज्ञानी जांकी वृति विवेक विहानी ॥टेर॥

भावार्थ-ब्रह्म कवि पण्डित वर्य सन्त श्री पीताम्बर पुरूषोत्तम जी कथन करतें हैं जिस की मन-वृत्ति विवेक से विशेष हानी अर्थात विचार शून्य है,वे ज्ञानी कैसे कहलाने के योग्य है।

हरि गुरू भक्ति शमादिक साधन, धारी न बुद्धि विषय रस सानी।
जन्म अनत भोगी न अघानी ॥१॥

भावार्थ - जिन की मनोवृत्ति बुद्धि में सगुण भक्ति में विष्णु या पाप हर्ता सतगुरू की भक्ति में नहीं एवं शम दमादि जिज्ञासु साधन को धारण नहीं कर सकी और वह बुद्धि विषयों के रस से सन्नीहित सानी = डूबी हुई है। जो जन्म से जीवन पर्यन्त भोगों को भोगते हुए अघानी (तृप्ति) नहीं हो सकी। वह ज्ञानी कैसे?

मोक्ष रूप साधन नहिं जानी, ज्ञान रूप साधन न पिछानी।
ज्ञेय वस्तु मन में नहीं आनी ॥२॥

भावार्थ- जिन्होनें मोक्ष प्राप्ति के लिय साधन न जाने और न किये हैं। मोक्ष का साधन ज्ञान और ज्ञान के साधन विवेक वैराग्यादि से सिध मुमुक्षुता की पहिचान ही नहीं की। जो कुछ जीवन में जानने की ज्ञेय वस्तु सत्य स्वरूप सचिदानन्द ब्रह्म के विचार कभी आज तक जिन के हृदय में ही न आये, वे कैसे ज्ञानी?

देह अवस्था कोश जगत तै, चेतन को नहिं भिन्न लखानी।
निज तत्व असंग न गानी ॥३॥

भावार्थ –तीन शरीर, तीन अवस्था, पांचकोश जीवन जगत में है, उन से भिन्न अधिष्ठान साक्षी चेतन तत्व की पहिचान नहीं की, स्वयं स्वरूप का ब्रह्म तत्व जो मायातीत असंग अदेह है। उस का कभी गायन (कथन) सुमिरण -भजन भी नहीं किया, फिर वह कैसे ब्रह्मज्ञानी ?

सवैया छन्द-

स्थुल रू सुक्ष्म कारण, तीन शरीर की प्रक्रिया नही जानी ।
जाग्रत स्वपन सुषोप्ति वर, अवस्था तीन के भेद न छानी ।।
अन्न मनोमय प्राण विज्ञानमय, आनन्द पंचकोश न आनी ।
"रामप्रकाश" वेदान्त पढयो नहीं, कैसे कहै कथ मैं ब्रह्मज्ञानी ।।३।।

तत्वं पद को वाच्य लक्ष्य लखि, लक्ष्य दुहुन को एक न मानी।
अज्ञान जगत नहिं मानी ।।४।।

भावार्थ-त्वमपद (जीव) की प्रक्रिया पंचीकृत पंचीकरण, अपंचीकृत तीन शरीर, तीन अवस्था, पांच प्राण,चार अन्त:करण इंद्रिय समुह सहित जीव के देश काल वस्तु धर्म सहित वाच्यार्थ एवं लक्ष्यार्थ जान कर, ऐसे ही यही ततपद ईश्वर की प्रक्रिया के वाच्यार्थ एवं लक्ष्यार्थ तथा ततपद (ईश्वर)- त्वम् पद (जीव) के लक्ष्यार्थ को जान कर जीव ईश्वर (दोनों) के लक्ष्यार्थ की भाग त्याग लक्षणा सहित एकता को नहीं जाना। जगत को मूल रूप अज्ञान सहित नाशवान असत्य को नहीं जाना - तब कैसा ज्ञानी?

पीताम्बर कहै संशय भ्रम तजि, वृति न ब्रह्म रूप ठहरानी।
जहां नहिं पहुंचे मन बानी ।।५।।

भावार्थ - पण्डित वर्य श्री संत पीताम्बर पुरुसोत्तम जी महाराज कथन करतें है कि अन्त:करण के संशय सहित समूह विघ्न रूप भ्रम त्याग कर अन्तस्थ प्रमा वृत्ति को ब्रह्मात्म स्वरूप में ठहराई नहीं, जिस परम तत्व में मन वाणी की पहुंच नहीं हैं, उस तत्व का निश्चय किया नहीं, तब कैसा ज्ञानी हुआ?

सवैया छन्द-

जीव रू ईश्वर पढयो नही प्राकृत, स्थूल प्रक्रिया भेद न जानी ।
अन्तकरण की सुक्ष्म बाधक, साधक प्रक्रिया बोद्ध न आनी ।।
बन्धकाभाव लख्यो नहीं बोद्ध का, प्रापक प्राप्य के भेद अजानी ।
"रामप्रकाश" वेदान्त लख्यो नहीं, कैसे कहै कथ मैं ब्रह्मज्ञानी ।।४।।

भजन (३) राग आसा पद सांगीत

सो सज्जन कहिये ज्ञानी, जांकी खुली अनुभव की खानी ।।टेर।।
साधन चार की धारी निसानी, विधिवत शरण गह्यो गुरू ज्ञानी।
ब्रह्मात्म को शोधन ध्यानी ।।१।।
महावाक्य अर्थ जिय आनी, श्रवन मनन निदिध्यासन करानी।
मान ज्ञेय संशय भ्रम हानी ।।२।।
जीव रू ईश भाव विसरानी, बन्ध मोक्ष की बुद्धि विलानी।
अहं ब्रह्म अस निश्चय ठानी ।।३।।

द्वैत बुद्धि जो जाकी नशानी, ज्यों तरंग परपोटा पानी।
सहज समाधि स्थिती ठहरानी ॥४॥
सतगुरू बापु पदरज परसी, पीताम्बर जू भयो ब्रह्मज्ञानी।
गुरू शास्त्र जगत ब्रह्मजानी ॥५॥
- सो सज्जन कहिये ज्ञानी, जांकी खुली अनुभव की खानी ॥टेर॥

भावार्थ - श्री स्वामी पीताम्बर पुरूषोत्तम जी महाराज ज्ञानी के लक्षण कथन करते प्रशंसा करते है कि वह सज्जन ज्ञानी कहलाने के योग्य है जिनकी साधना के बाद होने वाली अनुभव की बानी का भण्डार खुल गया है।

साधन चार की धारी निसानी, विधिवत शरण गह्यो गुरू ज्ञानी।
ब्रह्मात्म को शोधन ध्यानी ॥१॥

भावार्थ- जिन्होंने विवेक, वैराग्य, षट सम्पति मुमुक्षुता धारण करके ब्रह्मज्ञानी सतगुरू के शरणागत हो गया और ब्रह्म ईश्वर जीव की प्रक्रिया का शोधन करके वाच्यार्थ का त्याग करते दोनों लक्ष्यार्थ को ब्रह्मात्म तत्व में निर्गुणोपासना का ध्यान किया हो, वही ज्ञानी है।

महावाक्य अर्थ जिय आनी, श्रवन मनन निदिध्यासन करानी।
मान ज्ञेय संशय भ्रम हानी ॥२॥

भावार्थ- चार वेदों के उपनिषदों में कथित महावाक्यों का अर्थ हृदय में ठीक से समझ कर निश्चय रूप से श्रवण मनन और निदिध्यासन कर लिया हो।

क्रम संख्या	वेद	उपनिषद	मध्य	महावाक्य	१,२,३,४ पाद
१	ऋग्वेद	एतरयोपनिषद	५,३	प्रज्ञानमानन्द ब्रह्म	प्रज्ञ, आत्मा,आनन्द, ब्रह्म
२	यजुर्वेद	बृहदारण्यकोपनिषद	१,४,१०	अहंब्रह्मास्मि ब्रह्म	अहं, ब्रह्म अस्मि, ब्रह्म
३	सामवेद	छान्दोग्योपनिषद	६,८,७	तत्वमसि ब्रह्म	तत, त्वम, असि, ब्रह्म
४	अथर्वेद	मांडूक्योपनिषद	२	अयमात्मानन्द ब्रह्म	अयम, आत्मा, आनन्द,ब्रह्म

इनका विवेचन भली प्रकार से मनन करके ज्ञेय स्वरूप ब्रह्म चतुर्थ पाद का निश्चय करते हुए सभी प्रकार से पंच प्रयोजन प्राप्त करे और समस्त तरह के संशय -भ्रम (सन्देह) का हनन (नाश) करे।

सवैया छन्द-

एतरयोपनिषद प्रज्ञानमानन्द बखानत, बृहदारण्य अहंब्रह्म आखे ।
छान्दोग्य सो तत्वमसि भाषत, मांडूक्य अयमात्म भाखे ।।
ऋग, यजु, शाम, अथर ये वेद हि, उपनिषद चार सो गुप्त न राखे ।
रामप्रकाश सिधान्त बखानत, त्याग वाच्यार्थ तत्व को चाखे ।।५।।
चार हूँ महावाक्य के पद विभाजन, प्रथम द्वितीय तृतीय अमानी ।
तीन हूँ पाद वाच्यार्थ कल्पित, त्याग प्रपंच स्वरूप बखानी ।।
चतुर्थ पाद लक्ष्यार्थ चेतन, स्व अधिष्ठान अनूप अबानी ।
रामप्रकाश कियो निज निश्चय, आपनो आप थकी मन बानी ।।६।।

जीव रू ईश भाव विसरानी, बन्ध मोक्ष की बुद्धि विलानी।
अहं ब्रह्म अस निश्चय ठानी ॥३॥

भावार्थ-जीव और ईश्वर की भेद दृष्टि का भाव भुलाकर भव बन्धन और बन्ध-मुक्ति की भेद बुद्धि विलय हो गई है। अहंब्रह्म का शुद्ध अंश निश्चय करने की बुद्धि भी लय हो गई अर्थात अभेद मय अद्वय भाव हो गया।

द्वैत बुद्धि जो जाकी नशानी, ज्यों तरंग परपोटा पानी।
सहज समाधि स्थिती ठहरानी ॥४॥

भावार्थ- सभी प्रकार की द्वैत बुद्धि निवृत हो गई, जैसे कि जल में तरंग परपोटा (बुलबुल) जल में ही उत्पन्न होता है तथा वही जल में लय हो जाता है, अर्थात अग्नि काष्ठ से उत्पन्न होती है और काष्ठ को जलाकर आप भी शान्त हो जाती है। ऐसे ही बुद्धि ज्ञान को ग्रहण करके आप भी लय हो गई। निरन्तर सर्व ब्रह्ममय समदृष्टि से सहज (स्वाभाविक) समाधि की स्थिति निश्चित हो गई।

सवैया छन्द-

द्वैत बुद्धि भ्रम दूर भयो सब, जल बीच बुदबदे फैन गलानी ।
सहज समाधि हरदम हालत, नित्य निरन्तर स्थिति आनी ।।
भ्रम मिट्यो अधिष्ठान लख्यो जब, नाम रू रूप उपाधि मिटानी ।
"रामप्रकाश" सचिदानन्द एक ही, अनूप अपार अखण्ड अबानी ।।७।।

सतगुरू बापु पदरज परसी, पीताम्बर जू भयो ब्रह्मज्ञानी।
गुरू शास्त्र जगत ब्रह्मजानी ॥५॥

भावार्थ - श्री पीताम्बर पुरूषोत्तम जी कथन करते हैं कि हम राम के समान सत्य वक्ता सत्य उपदिष्ट सतगुरू श्री स्वामी बापू जी महाराज की चरण धूलि परस (स्पर्श) करके ब्रह्मज्ञानी हुए हैं। सतगुरू, शास्त्र और जगत को ब्रह्म स्वरूप अद्वय अभेद जान कर निश्चय किया है।

सवैया छन्द-

सतगुरू साधन शास्त्र श्रद्धावत, संतन संग में जान्यो अबानी ।
गुरू प्रसाद भयो तत चेतन, गुरू चरणाम्बुज ते ब्रह्मजानी ।।
केते उपाय करो भल केतक, एक उपाय नहीं होवत ध्यानी ।
"रामप्रकाश" उतमेश दयाकर, कृपा द्दष्टि भय दूर नशानी ।।८।।

॥ इति श्री पण्डित पीताम्बर पुरुषोत्तम स्वामी कृत तीन भजनों की टीका सम्पूर्ण ॥

श्री श्री १०८ श्री स्वामी रामप्रकाशाचार्य जी कृत

आत्म ज्ञानवर्द्धक भजन

भजन (१) राग पारवा पद

गण गणपति का गुण गायके, गण ईश मनाऊँ सारे ।।टेर।।
हरि हर शक्ति सूर्य सारा, गण गुण गावत प्रकृति सँवारा ।
भेद अभेद को दूर विडारा, वह निरगुण को ध्याय के ।
सब ही काज सुधारे ।।१।।
माया गुण त्रिगुण के स्वामी, घट मठ वासी अन्तर्यामी ।
परम ब्रह्म के रूप अनामी, निज व्यापक होय अथाय के ।
सब परमार्थ सता सँवारे ।।२।।
सर्गुण शिव का पूत है प्यारा, माता गिरजा माया धारा ।
ऋद्धि सिद्धि के आप दातारा, शुभ लाभ पूत सहाय के ।
शुद्धता बुद्धि विचारे ।।३।।
बुद्धि के देव शुद्धता दाता, पँच कलेश को दूर भगाता ।
चित की भूमिका पँच बनाता, शुद्धि अन्तःकरण बनायके ।
सतगुरू के ढिग धारे ।।३।।
"रामप्रकाश" शुद्ध बुद्धि को पावे, तब सतगुरू सन्तन ढिग जावे ।
श्रवण मनन का बोध बढावे, व्यवहार शुभ बनाय के ।
वह साधन सहित भव तारे ।।४।।

भजन (२) राग पारवा , छन्द भैरवी

ब्रह्मज्ञान सुनो भाई आयके, सब मिटे भ्रम भय भारी ।।टेर।।
जीव ईश का निर्णय भाई, सतगुरू युक्ति कह दरसाई ।
तीन शरीर अवस्था गाई, सब प्रक्रिया खोली लायके ।
भिन्न भिन्न कह दी सारी ।।१।।
पाँच प्राण पँच कोश बताये, पाँच भ्रान्ति के भेद लखाये ।
अज्ञान निवृति युक्ति पाये, सब देश काल को तायके ।
सत वस्तु लखाई भारी ।।२।।
जीव ईश कुटस्थ बताया, चिदाभास अवस्था गाया ।
अन्तःकरण चेतन दरसाया, सब कह्या भेद समझाय के ।
वाच्यार्थ सता निवारी ।।३।।
उतमराम ब्रह्मवेता आया, शुद्ध लक्ष्यार्थ आप लखाया ।
भ्रम कर्म का मूल मिटाया, शुद्ध " रामप्रकाश " लखाय के ।

भव भ्रम भेद विडारी ।।४।।

भजन (३) राग पारवा, छन्द भैरवी

ब्रह्म ज्ञानी परम महान है, नित रहे ज्ञान की मस्ती ।।टेर।।
हर्ष शोक भरम नही कोई, मूला तूला अविद्या खोई ।
रहे नही सँशय भी दोई, चित नही द्वैष अभिमान है ।
वो महा विश्व की हस्ती ।।१।।
अपने स्वरूप आप मतवाला, सदा निशँक प्रारब्ध वाला ।
समद्रष्टि रँक राव भूपाला, कोई गरज नही गुरू मान है ।
जीवन की गरिमा सस्ती ।।२।।
भक्त जिज्ञासु सन्तन को भावे, श्रवण करे तहिं ज्ञान सुनावे ।
ब्रह्मज्ञान की चर्चा गावे, नित रहे ज्ञान मस्तान है ।
नही लाभ हानी की कस्ती ।।३।।
उतमराम का दर्शन पाया, सत विश्वास उसी दम आया ।
" रामप्रकाश " को यह समझाया, तूँही शुद्ध अधिष्ठान है ।
नही भेद द्वन्द की बस्ती ।।४।।

भजन (४) राग पारवा , छन्द भैरवी

सब सुनो जिज्ञासु आयके, निज ब्रह्मज्ञान का लटका ।। टेर ।।
ब्रह्मज्ञानी सतसँग में आये, परम यथार्थ वस्तु लाये ।
जिज्ञासु के मन को भाये, मन शँका भ्रम मिटाय के ।
सब मेटे मन का खटका ।।१।।
तीन शरीर अवस्था तीनों, दश इन्द्रिय के विवरण भीनों ।
पाँच प्राण उप प्राण को चीनों, कहै पाँच कोश विगताय के ।
निज भेद बतावे घटका ।।२।।
हर्ष शोक अज्ञान मिटावे, परोक्ष अपरोक्ष विक्षेप हटावे ।
आवर्ण सात अवस्था गावे, यों चिदाभास कहै पायके ।
यह अन्तःकरण में चटका ।।३।।
कुटस्थ चेतन ताहि समावे, शूक्ष्म तन मिल जीव कहावे ।
जन्म मरण भव कारण लावे, देह अज्ञान कहाय के ।
भवसागर भोगे भटका ।।४।।
उतमराम ब्रह्मवेता आया, सतगुरू चेतन रूप समाया ।
" रामप्रकाश " गुरू गम से पाया, गुरू भेद गुरू से ध्याय के ।
सब भ्रम भेद को पटका ।।५।।

भजन (५) राग आशावरी पद

साधोभाई ! निर्णय कर दरसाया ।
क्षर अक्षर निरक्षर सारा, श्रवण मनन की माया ।। टेर ।।
भौतिक दर्शन श्राव्य द्रश्य, पिण्ड ब्रह्मण्ड परछाया ।
नाशवान परिवर्तन सामान्य, अपर ब्रह्म कह गाया ।।१।।
सामान्य विशेष दोहूँ गुण पूर्ण, अविनाशी पद पाया ।
द्रश्य अद्रश्य के भाव दिखावे, आप अलोगत थाया ।।२।।
भेद अभेद दरसावे सारा, पर अपर सब लाया ।
क्षर निरक्षर का ज्ञान बतावे, अक्षर अरूक्ष अथाया ।।३।।
" रामप्रकाश " यह काष्ठ अग्नि ज्यों, ज्ञान अज्ञान विलाया ।
लुप्त होय समावे निरक्षर, अकथ अमाप अकाया ।।४।।

भजन (६) राग राग आशावरी पद

साधोभाई ! सतगुरू ज्ञान सुनावे ।
ब्रह्मज्ञानी सत शब्द उचारे, सँशय सभी मिटावे ।।टेर ।।
ब्रह्मवेता सतसँग बिराजे, अनुभव वेद बतावे ।
यथा योग्य दर्शन को आता, उन को सब समझावे ।।१।।
कनिष्ठ जिज्ञासु मल को धोवे, कर्म काण्ड विगतावे ।
मध्यम हेतु उपासना भाखे, मन विक्षेप हटावे ।।२।।
उतम जिज्ञासु साधन सहिता, प्रणिपात हो आवे ।
ब्रह्मज्ञान निर्भय का डँका, प्रकट सन्त बजावे ।।३।।
श्रवण मनण निदिध्यासन पूरण, अधिकारी चित लावे ।
उतमराम सतगुरू ब्रह्मवेता, "रामप्रकाश" गुण गावे ।।४।।

भजन (७) राग राग आशावरी पद

साधोभाई ! माने गुरू का बाला ।
बिन समझ्या भव गोता खावे, हो चाहे भूपाला ।।टेर ।।
कौन गुरू कौन चेला होता ? कैसा साधन आला ।
कौन युक्ति से मुक्ति होती, खुले हृदय का ताला ।।१।।
सुरत शिष्य शब्द है गुरु जी, विरति विवेक सँभाला ।
गुरू युक्ति से मुक्ति होती, खुलता भ्रम कपाला ।।२।।
कौन भेद से साधुता साची, परिचय कौन विशाला ।
गुप्त भेद से साधुता साची, टकसाल परिचय पाला ।।३।।
उतमराम सतगुरू ब्रह्मवेत्ता, दीवी ज्ञान की माला ।
" रामप्रकाश " रमझ में समझ्या, कट गया भव जँजाला ।।४।।

भजन (८) राग राग आशावरी पद

साधोभाई ! ऐसा साधु होवे ।
त्यागी भया परिवार साथ मे, भार जगत का ढोवे ।।टेर।।

सत सँगत करे गाँव गाँव में, चेला चेली भेंट चढावे ।
कबूतर दाना पैसो लाता, उनसे ब्याज कमावे ।।१।।
गाँव खेती से धान माँगता, बेचता पैसो लावे ।
द्वारे माहि परिवार पालता, भाई भाणज परणावे ।।२।।
गुरू आश्रम से ऊपर चाले, नीति का फल पावे ।
गुरू आश्रम की धूड़ उडा दी, ब्याज चौगुणो भावे ।।३।।
देख्या साधु केइयक ऐसा, तब यह उक्ति आवे ।
कुटुम्ब काज दोड़ता जावे, जरा शरम नही आवे ।।४।।
बातों चोखी सन्तों री कहता, मोटी बात बतावे ।
सन्त रीति को भूला दी सारी, सँगत रोज कमावे ।।५।।
आडी डयोढी पँच पँचायत, साची बात सुनावे ।
" रामप्रकाश " ये वाचक ज्ञानी, सीधा नरक में धावे ।।५।।

भजन (९) राग राग आशावरी पद

साधोभाई ! ये साधु कहलावे ।
त्यागी होय परिवार साथ मे, नित घर माँगन जावे ।।टेर।।
सत सँगत करे गाँव गाँव में, चेला चेली भेंट चढावे ।
कबूतर दाना पैसो लाता, उनसे ब्याज कमावे ।।१।।
गाँव खेती से धान माँगता, बेचता पैसो लावे ।
द्वारे माहि परिवार पालता, भाई भाणज परणावे ।।२।।
गुरू आश्रम से ऊपर चाले, नीति का फल पावे ।
गुरू आश्रम की धूड़ उडा दी, ब्याज चौगुणो भावे ।।३।।
देख्या साधु केइयक ऐसा, तब यह उक्ति आवे ।
कुटुम्ब काज दोड़ता जावे, जरा शर्म नही आवे ।।४।।
बातों चोखी सन्तों री कहता, मोटी बात बतावे ।
सन्त रीति को भूला दी सारी, सँगत रोज कमावे ।।५।।
आडी डयोढी पँच पँचायत, साची बात सुनावे ।
" रामप्रकाश " ये वाचक ज्ञानी, सीधा नरक में धावे ।।६।।

भजन (१०) राग राग आशावरी पद

साधोभाई ! माने गुरू का बाला ।
बिन समझ्या भव गोता खावे, हो चाहे भूपाला ।।टेर ।।
कौन गुरू कौन चेला होता ? कैसा साधन आला ।
कौन युक्ति से मुक्ति होती, खुले हृदय का ताला ।।१।।
सुरत शिष्य शब्द है गुरुजी, विरति विवेक सँभाला ।
गुरू युक्ति से मुक्ति होती, खुलता भ्रम कपाला ।।२।।
कौन भेद से साधुता साची, परिचय कौन विशाला ।
गुप्त भेद से साधुता साची, टकसाल परिचय पाला ।।३।।
उतमराम सतगुरू ब्रह्मवेत्ता, दीवी ज्ञान की माला ।
" रामप्रकाश " रमझ में समझ्या, कट गया भव जँजाला ।।४।।

उत्तम आश्रम (आचार्य पीठ)

का नवीन जीवनोपयोगी उत्तम साहित्य
उत्तम प्रकाशन -सूची पत्र

१-आचार्य सुबोध चरितामृत (सचित्र) सम्प्रदाय शोध ग्रंथ
२-सन्तदास अनुभव विलास
३-हरि सागर मूल एवं टीका सहित
४-वाणी प्रकाश
५-अचलराम भजन प्रकाश (गुटका, मंझला और बड़ा-तीन साइज में उपलब्ध)
६-उतमराम भजन प्रकाश
७-अवधूत ज्ञान चिंतामणि
८-भारतीय समाज दर्शन
९-अचलराम ग्रंथावली(१-२-३-४) चार भागों में सटीक
१०-हिन्दू धर्म रहस्य
११-कामधेनू
१२-सर्व दर्शन वाद कोश
१३-विश्वकर्मा कला दर्शन
१४-नशा खण्डन दर्पण
१५-रामरक्षा अनुष्ठान संग्रह
१६-रामायण मंत्र उपासना
१७-नित्य पाठ नवस्त्रोत
१८-पिंगल रहस्य(छन्द विवेचन)
१९-ज्योतिष दोहावली(मूल) व ज्योतिष दोहावली सटीक
२०-रामप्रकाश शब्दावली
२१-रामप्रकाश शब्द सुधाकर
२२-गुढ़ार्थ भजन मंञ्जरी
२३-एक लाख वर्षिय कैलेन्डर
२४-रत्नमाल चिंतामणि
२५-उतम स्वर योग
२६-उतमराम अनुभव प्रकाश
२७-सन्ध्या विज्ञान

२८-सुगम चिकित्सा (प्रथम भाग)
२९- सुगम चिकित्सा (द्वितीय भाग)
३०-सुगम उपचार दर्शन
३१-तिलक प्रबोध दर्शन
३२-उतमरामप्रकाश भजन प्रदीपिका
३३-सुखराम दर्पण (सटीक)
३४-सन्तवाणी शब्दकोश
३५-स्वाध्याय वेदान्त दर्शन
३६-वेदान्त भुषण वैराग्य दर्शन
३७-दैनिक चिन्तन दैनन्दिनी
३८-रामप्रकाश भजन प्रभाकर
३९-सुबोध टीका दर्पण
४०-अध्यात्म दर्शन-(प्रथम खण्ड)
४१-अध्यात्म दर्शन-(द्वितीय खण्ड)
४२-उतम योग
४३-अचलराम सैलाणी
४४-स्वप्न फल दर्पण
४५-नासकेत गीता (टीका सहित)
४६-उतम ज्ञान कटारी(सटीक)
४७-अवधूत गीता ज्ञान दर्शन
४८-भारत का व्यास
४९-सावधान (व्यास पीठ के वक्तागण सावधान, साधु और सन्त समाज सावधान, गीता रसायन आदि)

।। समाप्त ।।